अप्रैल 2023 ■ वर्ष : 68 ■ अंक : 07 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

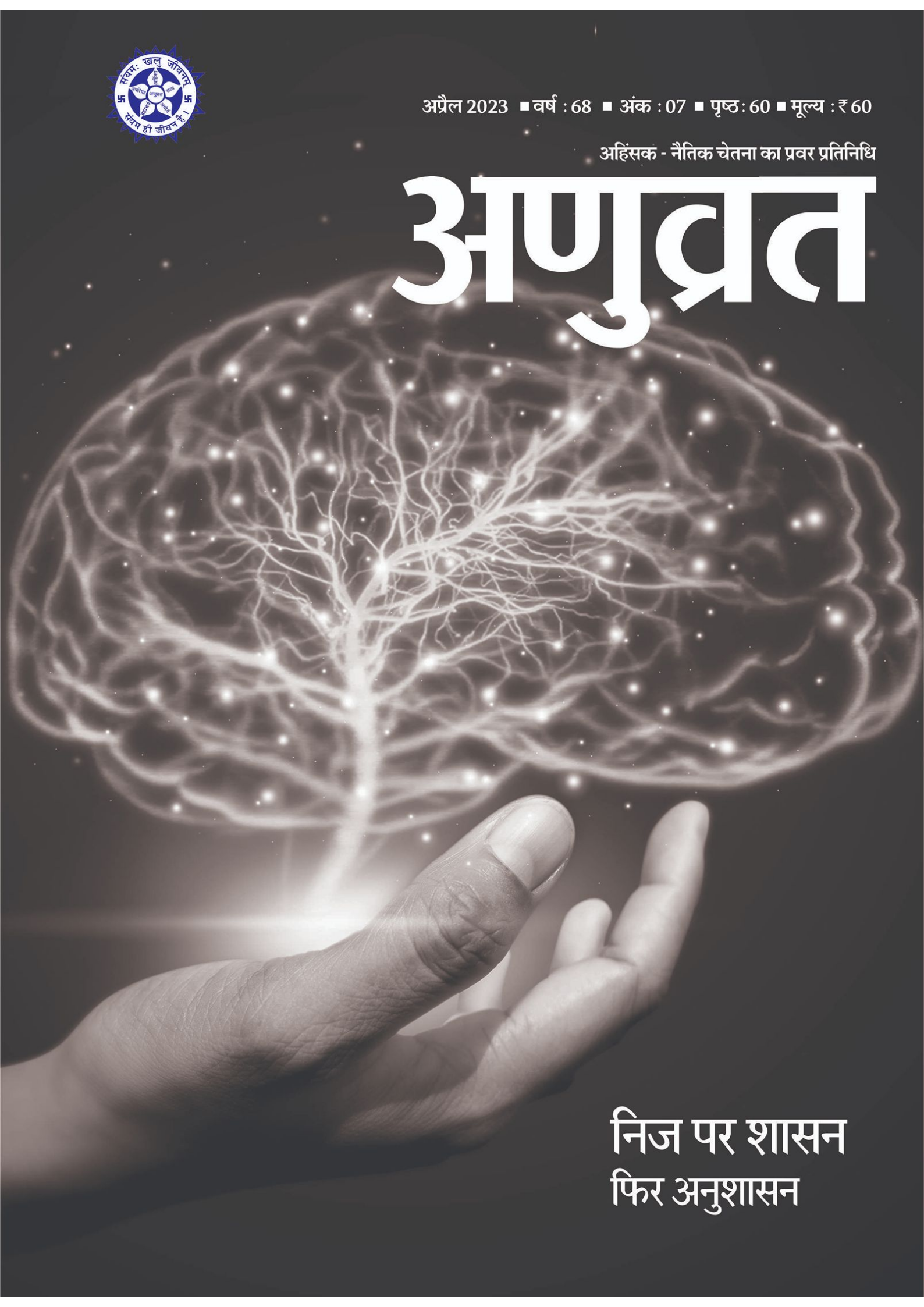

निज पर शासन
फिर अनुशासन

अणुव्रत यात्रा

सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति

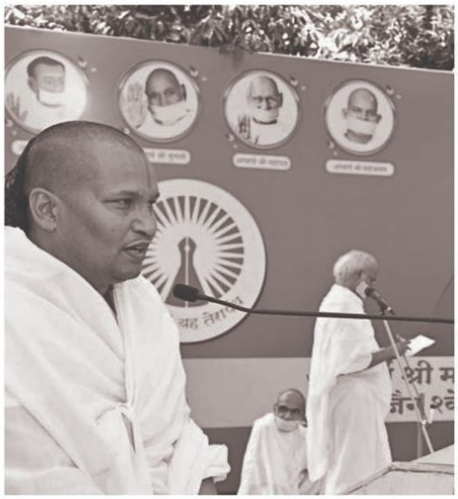

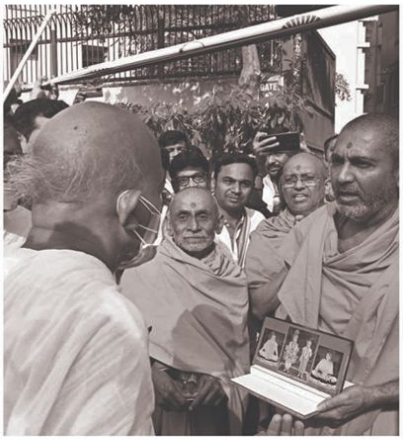

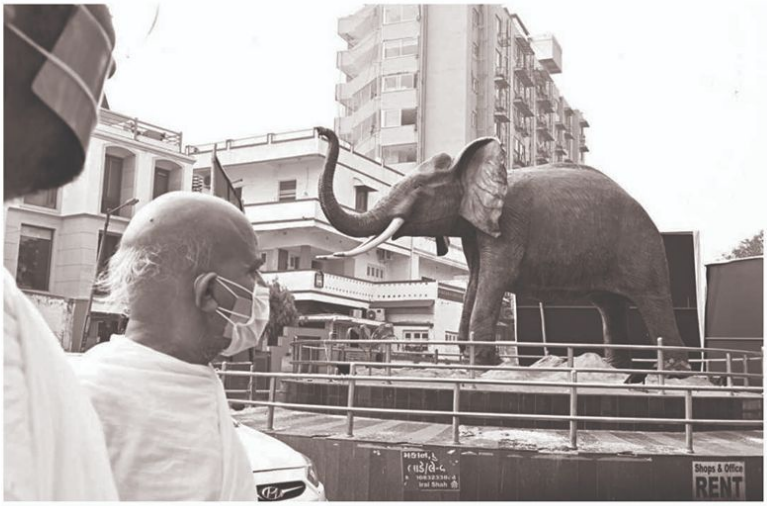

ऐतिहासिक अणुव्रत यात्रा में सहभागिता करने का स्वर्णिम अवसर

अणुव्रत कार्यकर्ताओं के दल में शामिल होने के लिए सम्पर्क करें -

संयोजक अनिल समदड़िया (9374615000), गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल (9374536344), महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका (9869049037)

■ ■ ■

अणुव्रत आन्दोलन का आज देशव्यापी प्रभाव है। यह उसकी तपस्याओं और सुविचारित प्रवृत्तियों का परिणाम है। काम भी अच्छा बहुत हुआ है लेकिन उसके व्यवस्थित तारतम्य का अभाव है। नैतिक समाज-संरचना के लिए अणुव्रत के विविध कार्यक्रमों के रचनात्मक स्वरूप के साथ अणुव्रत संगठन की पहली और महती आवश्यकता है। हमें सर्वप्रथम इसी बुनियादी पक्ष पर विचार करना है।

-गुरु गोलवलकर

■ ■ ■

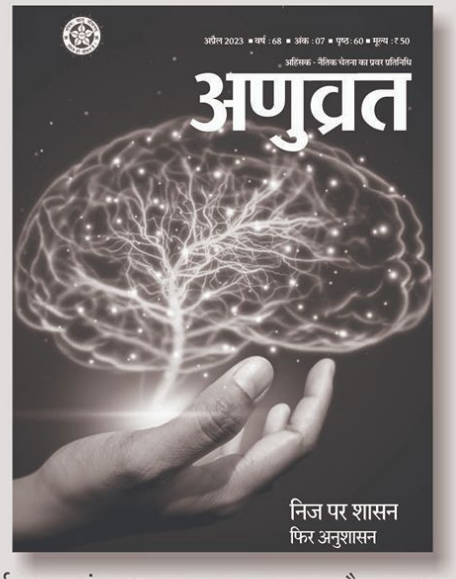

वर्ष 68 ● अंक 07 ● कुल पृष्ठ 60 ● अप्रैल, 2023

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	–	₹ 60
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	–	₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::
https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- नैतिकता : स्वभाव या विभाव — 06
  आचार्य तुलसी
- जीवन-निर्माण की दिशा और अणुव्रत — 08
  आचार्य महाप्रज्ञ
- मन की एकाग्रता से... — 12
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- विनम्रता : व्यक्तित्व में लाये निखार — 14
  लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
- संवेदना का घटता सूचकांक — 15
  वर्षा भम्भाणी मिर्ज़ा
- संघर्ष — 17
  राजेश पाठक
- दृष्टिकोण बदलते ही... — 19
  डॉ. कमला रत्तू
- Education for Peace... — 20
  Sorin Stratilat

कहानी

- धरती का कलाकार — 24
  प्रकाश मनु
- संपादकीय — 05
- गीत — 11
- परिचर्चा — 29
- कदमों के निशां — 33
- अणुव्रत की बात — 34
- गौरवशाली अतीत के झरोखे से... — 35
- अणुव्रत यात्रा — 42
- अणुव्रत संरक्षक — 43
- अणुव्रत अमृत महोत्सव : एक रिपोर्ट — 44
- ईको फ्रेंडली होली : एक रिपोर्ट — 48
- अणुव्रत बालोदय शिविर — 51
- क्यू 10 प्रतियोगिता — 52
- अणुव्रत समाचार — 53

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

शुद्ध साध्य और साधन की शुद्धता

'जीत' का
सपना संजोये
मैं दौड़ रहा था
दिन रात,
'सफलता' को
चूमने की चाह में
कर दिये थे एक
दिन रात!

काबिलियत का
गुरूर था,
येन-केन-प्रकारेण
लक्ष्य पाने का
सुरूर था।
दौड़ते हांफते
एक दिन
थक कर मैं चूर था,
मंज़िल पहुँच कर भी
सफलता से दूर था,
लाचार-सा
मजबूर था।

मृगमरिचिका की मानिंद
जीत का वो
बस एक ख्वाब था,
सफलता का
करीने से बुना
भ्रम जाल था,
जीवन पोथी का यह
अनुत्तरित सवाल था।

गहरे उतर कर
तब मैं समझ पाया था
लक्ष्य पाना मात्र
सफलता का
फ़साना नहीं,
लक्ष्य की ओर बढ़ता
हर एक कदम ही
जीत का पैमाना है
प्रीत का तराना है।

अणुव्रत एक मूल्य प्रधान आंदोलन है। समाज की संरचना नैतिक मूल्यों की बुनियाद पर खड़ी की जाये, अणुव्रत दर्शन सदैव इसका पैरोकार रहा है। जिस समाज में नैतिकता को सम्मान दिया जाता है, वहाँ अप्रामाणिकता, भ्रष्टाचार, हिंसा अपने पैर नहीं जमा सकते। ऐसा कोई समाज भी नहीं मिलेगा जो नैतिक मूल्यों को अपने आदर्शों में, विधान में शामिल न करता हो। फिर यह विडम्बना ही है कि ऐसा समाज ढूँढना मुश्किल होता जा रहा है जो अनैतिक आचरण से मुक्त हो। आज हर समाज में नैतिक शिक्षा की जरूरत महसूस की जा रही है ताकि नयी पीढ़ी अनैतिकता के गर्त में गिरने से बच सके। लेकिन प्रश्न खड़ा होता है कि स्वयं अनैतिकता के चक्रव्यूह में घिरा समाज कैसे नयी पीढ़ी को सही राह दिखा सकता है?

समाज की मूलभूत इकाई है व्यक्ति। व्यक्ति सुधार ही समाज सुधार की कुंजी है। लेकिन हम प्रायः समाज और दुनिया की विकृत संरचना को दोष देकर अपने अनैतिक आचरण पर पर्दा डालने का प्रयास करते हैं। इससे भी आगे बढ़ कर हम नैतिकता का मुखौटा ओढ़ कर अनैतिकता का दामन थामने से भी नहीं चूकते। उस पर दुहाई ये कि उद्देश्य नेक हो तो थोड़ी बहुत अनैतिकता बुरी नहीं होती। व्यक्ति अपने परिवार के भरण-पोषण की दुहाई देकर, संस्थाएं समाज के कल्याण की दुहाई देकर, सरकारें जनता की भलाई की दुहाई देकर अनैतिक कार्यों को न्यायसंगत ठहराने का प्रयास करते हैं।

इन अनैतिक कार्यों में हिंसा, भ्रष्टाचार, बेईमानी, धोखा आदि शामिल हैं। सरकारें जनता की सुरक्षा और शांति व्यवस्था के नाम पर अनुचित हिंसा को भी उचित ठहराती हैं, वहीं राज्य के खिलाफ हिंसा करने वाले भी अन्याय से लड़ने जैसे तथाकथित नेक उद्देश्यों को अपने सामने रखते हैं। धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए हिंसा का सहारा लेने की घटनाओं से इतिहास और वर्तमान अटा पड़ा है। सामाजिक संस्थाओं और राजनैतिक दलों को जनता की सेवा के नाम पर भ्रष्ट आचरण करते हुए देखा जा सकता है। परिवार और विद्यालय में अनुशासन के नाम पर हिंसक तरीके अपनाये जाते हैं। व्यवसाय और उद्योगों में प्रगति के नाम पर बेईमानी, शोषण और भ्रष्टाचार को सही ठहराया जाता है। एक देश दूसरे देश पर हमला करता है, वह भी हिंसा के इस वीभत्स रूप को न्यायसंगत ठहराता है।

इस दोषपूर्ण सोच को चुनौती देते हुए दशकों पूर्व आचार्य तुलसी अणुव्रत गीत की एक पंक्ति में लिखते हैं - शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो। लगता है, समय के साथ इस पंक्ति का महत्व बढ़ता जा रहा है। किसी भी क्षेत्र को देखें, हिंसा, भ्रष्टाचार आदि का सहारा लेने वाले लोग अक्सर पवित्र उद्देश्य की दुहाई देकर अपने अनैतिक आचरण को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं। यह एक गहरी सामाजिक विकृति बनती जा रही है। बुद्धिवादी युग अपने तर्कों के माध्यम से इस विसंगति को भी उचित बताने का दुस्साहस कर सकता है लेकिन यह सोच तनाव और अशांति का वाहक बन कर समाज की संरचना को तहस-नहस करने की दिशा में बढ़ रहा है।

व्यक्ति सुधार को इसीलिए अणुव्रत आंदोलन में सबसे अधिक महत्व दिया गया है। परिवार, समाज, सरकार, देश और दुनिया को संचालित करने वाला व्यक्ति ही होता है। यदि व्यक्ति इस बात के लिए संकल्पित हो जाये कि वह शुद्ध साध्य रखेगा और उसकी प्राप्ति के लिए सदैव शुद्ध साधन का ही उपयोग करेगा तो निश्चय ही वह स्व-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण का वाहक बन सकेगा। "अणुव्रत अमृत महोत्सव" के ऐतिहासिक अवसर पर अणुव्रत आंदोलन से जुड़ कर, अणुव्रत के विचार को अपने आचार का हिस्सा बना कर हम इस दिशा में ठोस कदम बढ़ा सकते हैं।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

आचार्य तुलसी

नैतिकता स्वभाव या विभाव

अध्यात्म वह अखंड और अनन्त प्रकाश है जो कभी टुकड़ों में विभाजित नहीं हो सकता। फिर भी उसको व्यावहारिक रूप में पकड़ने के लिए प्रतीकों का आलम्बन लिया जाता है। नैतिकता भी अध्यात्म का एक प्रतीक है, एक अंग है। अध्यात्म के संस्कारों की स्फुरणा में व्यक्ति सहजतया अनैतिक हो ही कैसे सकता है?

अस्तित्व-बोध आत्मा का सहज स्वभाव है। यह एक ऐसा दीप है, जो निरन्तर जलता रहता है। इससे ऐसी ज्योति उद्भूत होती रहती है, जो कभी बुझती नहीं। इसकी परम्परा अविच्छिन्न चलती है। यह आत्मा का सहज परिणमन है। सिद्धान्त की भाषा में यह पारिणामिक भाव है। यह स्वभाव से शुद्ध है, इसलिए इसके परिवेश में शुभ या नैतिकता की उपस्थिति सहज रूप से हो जाती है क्योंकि जो शुद्ध है वह अशुद्धता को कभी पसंद नहीं कर सकता। इस दृष्टि से हर व्यक्ति में अन्तर्निहित नैतिकता की भावना को नकारने का कोई कारण नहीं है।

हर व्यक्ति में निरन्तर नैतिकता की भावना रहती है, यह एक नैतिक मूल्य-प्रस्थापक की धारणा है। मैं इससे भी आगे देखता हूँ। मेरे अभिमत से प्रत्येक व्यक्ति में अध्यात्म की चेतना होती है। अध्यात्म वह अखंड और अनन्त प्रकाश है जो कभी टुकड़ों में विभाजित नहीं हो सकता। फिर भी उसको व्यावहारिक रूप में पकड़ने के लिए प्रतीकों का आलम्बन लिया जाता है। नैतिकता भी अध्यात्म का एक प्रतीक है, एक अंग है। अध्यात्म के संस्कारों की स्फुरणा में व्यक्ति सहजतया अनैतिक हो ही कैसे सकता है? व्यक्ति के अनैतिक होने में मैं प्रमुख रूप से दो निमित्तों को प्रस्तुत करता हूँ – आन्तरिक और बाह्य। आन्तरिक निमित्त है – कार्मिक स्पन्दन और बाह्य निमित्त है – सामाजिक परिस्थितियाँ। कर्म का उदय होने से व्यक्ति के मन में इच्छा और आसक्ति उत्पन्न होती है। आसक्ति को बढ़ावा मिलता है बाह्य वातावरण से। दूसरे व्यक्ति के पास अधिक वैभव देखकर उसके मन में यह भाव पैदा होता है कि अमुक के पास इतनी साधन सामग्री है, इतना ऐश्वर्य है तो मेरे पास क्यों नहीं है? यह मनोभाव स्पर्धा को जागृत करता है और व्यक्ति अनैतिक कर्म में प्रवृत्त हो जाता है।

उक्त सन्दर्भ में यह तथ्य फलित होता है कि अनैतिकता का सर्जक समाज है। समाज न हो तो स्पर्धा नहीं होती और स्पर्धा के अभाव में अनैतिकता को जन्म देने वाली मनोवृत्ति नहीं बन सकती। इस बाह्य निमित्त के समाप्त होने पर भीतरी स्पन्दन भी निष्क्रिय हो जाता है।

मूलतः व्यक्ति शुद्ध होता है और वह शुद्धि की ओर ही निरन्तर प्रयाण करता है किन्तु कार्मिक स्पन्दन तथा बाह्य वातावरण और परिस्थितियाँ उस पर अशुद्धता का आरोपण कर देती हैं। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति उदय और क्षयोपशम - इन दो के संघर्ष में रहता है। उसकी विशुद्धि बाह्य निमित्तों और कार्मिक स्पन्दनों से आवरित होती है, तब वह अनैतिक बनता है।

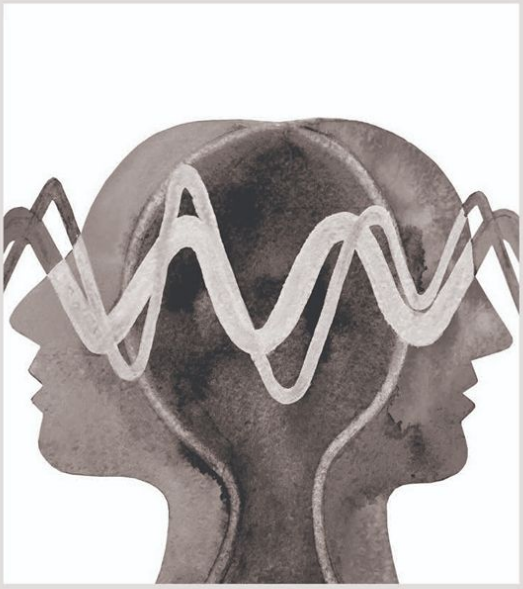

अनैतिकता का मूल प्रमाद है। प्रमाद की सघनता में कर्म का उदय व्यक्ति पर हावी हो जाता है और वह करणीय-अकरणीय का विवेक खो बैठता है। अप्रमाद के उपदेश का अर्थ यही है कि व्यक्ति पल-पल सावधान रहे, अपनी चेतना पर प्रमाद को हावी न होने दे।

प्रश्न उठता है, व्यक्ति की अनैतिक मनोवृत्ति को बदलने का उपाय क्या हो सकता है? इस संदर्भ में मेरा मानना है कि नैतिकता और अनैतिकता की इस चर्चा का सम्बन्ध प्रमाद और अप्रमाद से है। अनैतिकता का मूल प्रमाद है। प्रमाद की सघनता में कर्म का उदय व्यक्ति पर हावी हो जाता है और वह करणीय-अकरणीय का विवेक खो बैठता है। अप्रमाद के उपदेश का अर्थ यही है कि व्यक्ति पल-पल सावधान रहे, अपनी चेतना पर प्रमाद को हावी न होने दे।

'पमायं कम्ममाहंसु अप्पमायं तहावरे।'

प्रमाद कर्म है और अप्रमाद अकर्म है। जिस क्षण प्रमाद का प्रभाव तीव्र होता है, क्षयोपशम आवृत्त हो जाता है। इस आवरण को तोड़ने के लिए सतत पुरुषार्थशील अर्थात् अप्रमत्त रहने की अपेक्षा है। 'जिन खोजा तिन पाइयां' – जिसने निरन्तर खोज की उसने सत्य को पा लिया। इस प्रसंग में मुझे एक कहानी याद आ रही है-

प्राचीन समय की बात है। राजा शहर से बाहर कहीं जा रहा था। उसने देखा एक व्यक्ति किसी स्थान को खोद रहा है। उसका शरीर पसीने से तरबतर हो गया। फिर भी वह गहरी लगन से खोदता जा रहा है। राजा ने पूछा - "तुम यहां क्यों खोदते हो? इससे तुम्हें क्या मिला?" उसने एक चमकता हुआ सोने का आभूषण दिखाते हुए कहा - "राजन्! मुझे यह बाजूबन्द मिला है।" यह बात सुनकर राजा की आँखों में चमक आ गयी। उसने अपनी मंत्रिपरिषद् को कुछ विशेष स्थानों में खुदाई करने का निर्देश दिया। खुदाई शुरू हुई। कहीं पानी निकला, कहीं तेल निकला, कहीं सोने की खान निकली और कहीं हीरों की खान। खनिज उद्योग के विकास का सारा श्रेय गहराई से खोदने की क्रिया को प्राप्त है।

अध्यात्म के क्षेत्र में ध्यान-साधना का मूल्यवान स्थान है। ध्यान की पद्धति भी व्यक्ति को भीतर जाने और वहां जमे हुए संस्कारों को कुरेदने का निर्देश देती है। यह खोदने और खोजने की वृत्ति निरन्तर बनी रहे। इसीलिए भगवान् महावीर ने कहा - 'समयं गोयम! मा पमायए।' गौतम! क्षण मात्र भी प्रमाद मत करो। यह केवल उपदेश की बात ही नहीं है, दार्शनिक तथ्य है।

इंजन निरन्तर चलता है तो बिजली मिलती रहती है और फैक्टरी चालू रहती है। इंजन के बंद होते ही बिजली बन्द हो जाती है और फैक्टरी की सारी प्रवृत्तियों में अवरोध आ जाता है। इसी प्रकार शुद्धि के लिए निरन्तर पुरुषार्थ होता रहे तो अप्रामाणिकता टिक ही नहीं सकती। जिस समय व्यक्ति पुरुषार्थ को छोड़ प्रमत्त बन जाता है, वह अनैतिकता की ओर गति करने लगता है। अनैतिक मनोवृत्ति को बदलने के लिए व्यक्ति को अप्रमाद अर्थात् सतत जागरुकता का पथ पकड़ना होगा। इसी माध्यम से वह आत्मोन्मुख बनकर कार्मिक स्पन्दनों और बाह्य परिस्थितियों से अप्रभावित रह सकता है। ■■■

अणुव्रत : सुखी जीवन की चाबी

अणुव्रत सुखी जीवन की चाबी है। मानवता की न्यूनतम मर्यादा की अवहेलना करने वाला व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र मनुष्यता के धरातल को तैयार नहीं कर सकता। व्यक्ति कदम रखता है, उसके नीचे से धरातल खिसक जाये तो वह आगे एक कदम भी नहीं बढ़ सकता। इसी प्रकार मानवता का धरातल ठोस न हो तो केवल कल्पना की उड़ानें भरकर मनुष्य सुखी जीवन कैसे जी सकता है? सुख का स्रोत कहीं बाहर नहीं, भीतर ही है। भीतर का वह स्रोत सूख जाता है तो व्यक्ति बाहर कितनी ही दौड़-धूप करे, एक क्षण के लिए भी सुखानुभूति नहीं कर सकता। अणुव्रत आपको यही कहता है कि बाहरी भटकन को छोड़कर एक बार अपने भीतर झांक लो। आत्म-ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार की एकमात्र यही प्रक्रिया है। इस आधार पर ही व्यक्ति सुखी हो सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ

जीवन-निर्माण की दिशा और अणुव्रत

वही व्यक्ति जीवन में कुछ कर सकता है जो आस्थावान होता है। जीवन में श्रद्धा का होना बहुत जरूरी है। बिना श्रद्धा के आत्मविश्वास पैदा नहीं होता। आत्मविश्वास के अभाव में सफलता के मार्ग में अनेक कांटे हैं। जहां आस्था नहीं, दृढ़ संकल्प नहीं, दृढ़तम इच्छा नहीं, वहां अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

एक संस्कृत कवि ने लिखा है-

अग्निदाहे न मे दुःखं, न दुःखं लोहताड़ने।
इदमेव महददुःखं, गुञ्जया सह तोलनम्॥

सोना स्वर्णकार से कह रहा है -"मुझे अग्नि में गर्म किया उसका दुःख नहीं है, मेरे ऊपर घन की चोटें दीं, उसका भी मुझे तनिक मात्र दुःख नहीं है। मुझे दुःख इसी बात का है कि तुम मुझे गुञ्जाओं (चिरमियों) के साथ तौल रहे हो।"

सचमुच सोने की इस आपत्ति में तथ्य है। किसी विशेष वस्तु की नगण्य के साथ तुलना करने पर क्या उसे वेदना नहीं होती, पीड़ा नहीं होती! आज हिन्दुस्तान के नागरिकों की तुलना कुछ अन्य देशीय नागरिकों के साथ होती है वह भी कुछ चरित्र के मामले लेकर-ऐसे देशों के साथ जिनका उत्कर्ष प्रकट नहीं होता, सचमुच पीड़ा की बात है।

प्रश्न है क्यों? अतीतकाल में हिन्दुस्तान धर्म-प्रधान देश रहा है। उसी धर्म-प्रधान देश को आज साहस के साथ धर्म-प्रधान देश नहीं कह सकते, दुःसाहस करके ही कह सकते हैं। मुझे कहने में संकोच होता है। केवल अतीत की दुहाई देनी हो तो मैं दे सकता हूँ। किन्तु अतीत तो मात्र दर्पण है। वह हमें प्रतिबिम्ब दे सकता है, चला नहीं सकता। हमें देखना है कि हमारा वर्तमान सुन्दर व सुखद है या नहीं? जहां पर सामाजिक जीवन में धर्म का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता, जीवन में धर्म का आचरण नहीं होता, केवल उपासना और क्रियाकाण्डों में ही विश्वास किया जाता है और व्यवहार में शुद्धि नहीं रखी जाती, उस देश को हम धर्म-प्रधान कैसे कह सकते हैं? बौद्धिक मानस शायद ही इसके लिए तैयार हो। आज की स्थिति क्या है?

दो विकल्प

हमारे सामने दो विकल्प हैं-पहला विकल्प है रोटी का और दूसरा है आस्था का। रोटी हमारे लिए आवश्यक है। आस्था को किसके सहारे टिकाएं? वह लक्ष्य या सिद्धान्त के सहारे टिक सकती है। रोटी जीवन को चलाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। आस्था के अभाव में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, चाहे वह भौतिक, मानसिक और अध्यात्म क्षेत्र में हो अथवा किसी भी क्षेत्र में। आस्था को रखना अत्यन्त आवश्यक है। वही व्यक्ति जीवन में कुछ कर सकता है जो आस्थावान होता है।

जीवन में श्रद्धा का होना बहुत जरूरी है। बिना श्रद्धा के आत्मविश्वास पैदा नहीं होता। आत्मविश्वास के अभाव में सफलता

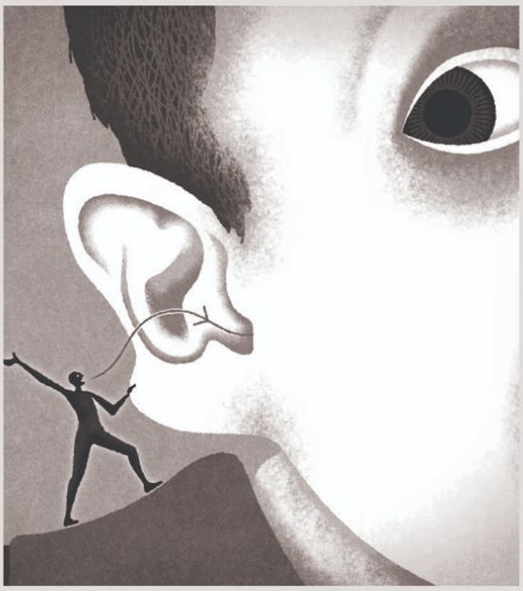

यह सच है कि धन के अभाव में देश संत्रस्त होता है, किन्तु यह भी सच है कि एक ओर गरीबी या धन का अभाव होने पर भी अनेक व्यक्ति अप्रामाणिकता नहीं करते, दूसरी ओर अनेक संपन्न व्यक्ति भी अप्रामाणिकता करने में आगे रहते हैं।

के मार्ग में अनेक कांटे हैं। जहां आस्था नहीं, दृढ़ संकल्प नहीं, दृढ़तम इच्छा नहीं, वहां अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

व्यक्तिवादी मनोवृत्ति

हिन्दुस्तान अतीतकाल में सोने की चिड़िया कहलाता था। आज उसी हिन्दुस्तान के सामने रोटी और आस्था की प्रमुख समस्या है। पता नहीं हिन्दुस्तान इसमें क्यों उलझ गया? जहां तक मैंने समझा है, हिन्दुस्तान में व्यक्तिवादी मनोवृत्ति बहुत तीव्र हो गयी है। स्वयं के स्वार्थ में दूसरों की हानि का उसे कोई दुःख नहीं होता। स्वयं के ही स्वार्थ की बात सोचता है, स्वयं की प्रतिष्ठा कैसे बढ़े, दूसरे मेरे बड़प्पन का महत्व कैसे आंकें, यह मनोवृत्ति आज भारतरूपी शरीर में प्रवेश कर गयी है जो शरीर को जला रही है किन्तु उसकी वेदना ज्ञात नहीं हो रही है। व्यक्तिवादी मनोवृत्ति अध्यात्म क्षेत्र में अत्यन्त उपयोगी है किन्तु जहां समाज का प्रश्न है, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति मनुष्य को कर्त्तव्य से दूर कर देती है।

अप्रामाणिकता का हेतु

आज हिन्दुस्तान में 'अप्रामाणिकता' का रोग बढ़ गया है। हर क्षेत्र में अप्रामाणिकता की शिकायत है। यह शिकायत क्यों? शायद हिन्दुस्तान के नागरिकों ने यह कभी जिज्ञासा भी नहीं की हो! उस अप्रामाणिकता के पीछे हेतु है 'व्यक्तिवाद' का। यह सच है कि धन के अभाव में देश संत्रस्त होता है, किन्तु यह भी सच है कि एक ओर गरीबी या धन का अभाव होने पर भी अनेक व्यक्ति अप्रामाणिकता नहीं करते, दूसरी ओर अनेक संपन्न व्यक्ति भी अप्रामाणिकता करने में आगे रहते हैं। हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि एक टैक्सी वाले, तांगे वाले या श्रमिक ने अमुक व्यक्ति के गहने, रुपयों का बटुआ पाया और उसने खोज करके मालिक के पास सुरक्षित पहुँचा दिया। किन्तु हमने यह नहीं देखा कि किसी उद्योगपति या मिल के मालिक ने ऐसी प्रामाणिकता का परिचय दिया हो। इसका कारण क्या है? मुझे लगता है इसके दो प्रमुख कारण हैं-

1. आस्थाहीनता 2. मार्गदर्शन का अभाव।

आखिर हमने यह क्यों मान लिया कि मानसिक विकास, जीवन की सफलता और समृद्धि-संचय के लिए अप्रामाणिकता करना आवश्यक है। यह हमारे दर्शन के मूल में ही भूल है। जीवन की समस्याओं का सबसे बड़ा हेतु है अप्रामाणिकता। इस अप्रामाणिकता के कारण ही दुनिया के देशों में हिन्दुस्तान ने प्रतिष्ठा को खोया है।

कहां है साख?

अभी कुछ दिन पहले हमने समाचार-पत्रों में दुनिया के धनिकों के आंकड़े देखे थे। देखने पर आश्चर्य हुआ कि जो टाटा, बिरला, डालमिया इत्यादि हिन्दुस्तान के सबसे बड़े धनी माने जाते हैं, उनका दुनिया के धनिकों में न जाने किस क्रम के बाद नाम आता है, उनके नाम का कोई अस्तित्व ही नहीं है। मुझे आश्चर्य होता है कि हिन्दुस्तान के व्यवसायियों ने कहां धन कमाया, कहां है उनकी समृद्धि तथा कहां है धन अर्जन का दिमाग? आपसे ही पूछना चाहता हूँ कि दुनिया के किस देश में किस क्षेत्र में हिन्दुस्तान की प्रामाणिकता की साख है!

आज एक ओर समाजवाद की बात चल रही है। समाजवाद का अर्थ है वितरण। प्रश्न होता है- किसका वितरण किया जाये? वितरण उसी का होता है जहां पर उत्पादन हो। यहां पर उत्पादन की बात तो गौण है और विसर्जन की प्रमुख। इस देश के श्रमिक लोग काम करने से जी चुराते हैं, राज कर्मचारी आठ घंटों के कर्त्तव्य के स्थान पर मुश्किल से दो घंटे का कर्त्तव्य अदा करते हैं, यहां के देश की पूँजी का कैसे विकास होगा? यहां पर लोग अकर्मण्य जीवन जीकर क्या समाजवाद लाएंगे? मेरी समझ में तो नहीं आता है कि जिस देश में अकर्मण्यता, निठल्लापन और आस्थाहीनता बढ़ रही हो, वहां पर समाजवाद पनपेगा।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यहां के लोक-जीवन में शिथिलता-सी आयी हुई है। ऐसे विचार भर गये हैं कि उनका कोई स्वतंत्र चिन्तन ही नहीं तथा ऐसी-ऐसी धारणाएं दिमाग में घुसी हुई हैं जिनको निकालना मुश्किल-सा हो गया है। हिन्दुस्तानियों ने यह मान लिया कि अप्रामाणिकता ही जीवन की सफलता का सूचक है। हमारे व्यापारियों की दुनिया के बाजारों में साख नहीं

हमने जिस देश में, जिस समाज में जन्म लिया है, उसका हमारे पर बहुत बड़ा ऋण है। उस ऋण से हम तभी मुक्त हो सकेंगे, जब प्रामाणिक बनकर मानवीय विकास में, राष्ट्रीय विकास में एक कड़ी का काम करेंगे। कड़ी बनने से पहले नैतिक बनना आवश्यक होगा।

है। जहां साख नहीं होगी, वहां पर आप स्वयं सोचें कि उस देश में आयात ज्यादा होगा या निर्यात? इस देश की किस क्षेत्र में प्रामाणिकता है, कहना मुश्किल है। आज जो हिन्दुस्तान को हानि उठानी पड़ रही है, उसका प्रमुख कारण अप्रामाणिकता ही है।

विचार-क्रांति का दर्शन

जब मैं इस संदर्भ में 'अणुव्रत' को देखता हूँ तो मुझे लगता है कि अणुव्रत का विचार समूची मानव जाति के लिए आवश्यक है। मैं पहले अणुव्रत को स्थान देता हूँ, पीछे धर्म को। यदि जीवन में प्रामाणिकता, सचाई तथा सामंजस्य नहीं है तो मैं मानता हूँ बड़े-बड़े धर्मशास्त्री भी वर्तमान के युग में नहीं टिक सकते। जहां सामाजिक जीवन में धोखा, आक्रोश पनपता है वहां सामंजस्य कहां? व्यक्ति पूजा करता है, उसमें वह भगवान का नाम अत्यन्त श्रद्धा से लेता है, किन्तु उसके पीछे भी उसका स्वार्थ बोलता है। वह भगवान का नाम इसलिए लेता है कि दूसरों के साथ धोखाधड़ी व अप्रामाणिकता निर्बाध चलती रहे। यह हमारे जीवन का अभिशाप बन गया है। आज के इस नये युग में एक नये सन्दर्भ की आवश्यकता है।

अणुव्रत एक विचार-क्रांति का दर्शन है। अणुव्रत कहता है कि कोई भी व्यक्ति धार्मिक बने या न बने, किन्तु उसका नैतिक बनना आवश्यक है। वास्तव में धार्मिक बनने का अधिकार उसी को प्राप्त होना चाहिए जो पहले नैतिक हो।

जरूरी है प्रामाणिकता का संस्कार

छलांग प्रकृति के राज्य में हो सकती है किन्तु मानवीय विकास स्तम्भ में नहीं, किन्तु आज ऐसा हो रहा है। जीवन-निर्माण की दृष्टि से अणुव्रत की भूमिका महत्वपूर्ण है। मनुष्य नैतिक अवश्य बने। अणुव्रत यह भी कहता है कि मनुष्य भगवान की पूजा करे या न करे, क्रियाकांडों में विश्वास रखे या न रखे, पलती हुई रूढ़ियों का बहिष्कार करे या न करे, अणुव्रती बनने के लिए आचार्य श्री तुलसी को गुरु माने या न माने, परन्तु मनुष्य अच्छा मनुष्य बने, नैतिक बने, प्रामाणिक बने। प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य होता है कि वह राष्ट्र के प्रति वफादार बने, प्रामाणिक बने।

हमने जिस देश में, जिस समाज में जन्म लिया है, उसका हमारे पर बहुत बड़ा ऋण है। उस ऋण से हम तभी मुक्त हो सकेंगे, जब प्रामाणिक बनकर मानवीय विकास में, राष्ट्रीय विकास में एक कड़ी का काम करेंगे। कड़ी बनने से पहले नैतिक बनना आवश्यक होगा। राष्ट्र में रहने वाले साधु-संन्यासियों का प्रमुख कर्त्तव्य होता है कि वे समाज में रहने वाले को प्रामाणिकता के संस्कार दें, जिससे देश की समृद्धि बढ़ सके। आज देश में बड़े-बड़े बांध बन रहे हैं। बांध पूरा नहीं बनने के पूर्व ही वह टूटने लग जाता है। कारण स्पष्ट है कि काम प्रामाणिकता से नहीं होता।

वर्तमान का यथार्थ

आप समाज में रहते हैं इसीलिए आप यथार्थ को ज्यादा भोगते हैं तथा आपको जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति बाजार से घी, मिर्च, दूध, तेल इत्यादि वस्तुएं खरीदता है, किन्तु उसको विश्वास नहीं है कि मैंने शुद्ध वस्तु खरीदी है। हम दिल्ली में थे, एक साधु तीन सूंठ के गठिए गृहस्थी से लेकर आया। पीसने पर मालूम हुआ कि एक शुद्ध है और दो मिट्टी के हैं। यही स्थिति लौंग और काली मिर्च की हुई। यह तो क्या, आजकल जहर भी शुद्ध नहीं मिलता। इसी संदर्भ में एक सत्य घटना है - एक विद्यार्थी ने आत्महत्या करनी चाही। वह बाजार से जहर की पुड़िया खरीदकर लाया। उसने अपनी जीवन-लीला को समाप्त करना चाहा, इसीलिए रात्रि में वह पुड़िया लेकर सो गया। जब वह प्रातः उठा तो उसे दुःख हुआ कि आज के युग में शुद्ध जहर भी प्राप्त नहीं होता। आज जो यह ठगने का चक्रव्यूह चल रहा है, उसमें जो एक बार फँस गया, वह जीता हुआ भी बाहर नहीं निकल सकता।

विडंबना उपासना की

आज इस स्थिति का यथार्थ सबको भुगतना पड़ रहा है। जब एक व्यापारी रेलवे स्टेशन पर टिकट लेने के लिए जाता है और रेलवे कर्मचारी रिजर्वेशन के लिए अतिरिक्त रुपये माँगता है, तब उनके दिमाग में आता है कि कैसा जमाना आया है! वही व्यापारी जब अपनी दुकान पर बैठकर दूसरों को ठगता है, तब यह भूल जाता है। जिस दिन उसका व्यापार ठीक ढंग से चलता है, तब वह मन्दिर में जाकर भगवान के पास अर्चना करता है - "हे भगवान! आज अच्छा व्यापार चला तो कल मैं आपको मिठाई चढ़ाऊँगा।" यह उपासना अप्रामाणिकता को बढ़ाने के लिए करता है। उपासना की यह कैसी विडम्बना है!

अध्यात्म-प्रधान देश के नागरिकों का यह चिन्तन, यह भावना न जाने पतन के लिए किस कगार पर खड़ी है। अतीतकाल में बाजार, जो एक पवित्र, पुण्य स्थान माना जाता था, जहां पर समाज का कोई भी बूढ़ा-बच्चा ठगा नहीं जाता था, वहां पर आज

जो स्थान समाज के हृदय की पुण्यभूमि बनी हुई थी, वही पुण्यभूमि आज लुटेरों का स्थान बना हुआ है। इन सारी स्थितियों में अणुव्रत एक विकल्प है। उसको प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार करे। समाज में एक आदर्श प्राणी बनने के लिए यह आवश्यक है।

चालाक व्यक्ति भी अपने आपको ठगा हुआ पाता है। क्या इस स्थिति से देश का कल्याण संभव है? जो स्थान समाज के हृदय की पुण्यभूमि बनी हुई थी, वही पुण्यभूमि आज लुटेरों का स्थान बना हुआ है। इन सारी स्थितियों में अणुव्रत एक विकल्प है। उसको प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार करे। समाज में एक आदर्श प्राणी बनने के लिए यह आवश्यक है।

हम उपासना परलोक की प्राप्ति के लिए करते हैं, न कि वर्तमान सुख के लिए। इस मनोवृत्ति में जब परिवर्तन आ जाएगा तब हिन्दुस्तान की पूँजी सुरक्षित रहेगी। हमारी नियोजित पूँजी का लाभांश नहीं मिल पाता। बहुत वर्ष पहले बीकानेर में जब अकाल पड़ा तब अकाल-पीड़ितों के लिए केन्द्रीय सरकार, राजस्थान सरकार तथा अन्यान्य क्षेत्रों से मदद मिली, किन्तु ज्ञात हुआ कि उस मदद का चौथाई भाग भी काम नहीं आया। शेष रुपया वहां बँट गया, जिनको आवश्यकता नहीं थी। जब तक हम समानता का, प्रेम और समता का पाठ नहीं पढ़ेंगे, तब तक समाजवाद का सपना सच होता नहीं दिखता।

एक सहारा है अणुव्रत

मानवता के निर्माण में अणुव्रत के संस्कार बहुत आवश्यक हैं तथा सामाजिक सभ्यता के लिए भी। हमारे सामने प्रश्न है रोटी और आस्था का। बिना रोटी के आस्था भी नहीं होती तथा बिना आस्था के रोटी भी नहीं मिलती अर्थात् किसी न किसी दशा में आस्था का होना अपेक्षित है। किसी के लिए किसी का आलम्बन होना जरूरी है। जीवनरूपी बेल को सहारा, आलम्बन की आवश्यकता है। आज के युग में 'अणुव्रत' सहारा है। हिन्दुस्तानवासी सफलता चाहते हैं, किन्तु उनके पास भित्ति नहीं है। मुख्य लक्ष्य होना चाहिए चरित्र का विकास। एक समय चरित्र साधन था, किन्तु आज उसे साध्य बनने की जरूरत है। अपेक्षा है अणुव्रत के महत्व को जीवन में आंकें। मानव जीवन की न्यूनतम मर्यादा के लिए यह आवश्यक है। भेदरेखा लक्ष्य को बाँट देती है किन्तु अणुव्रत एक शाश्वत तत्त्व है जो भेदरेखाओं को परस्पर मिलाता है। आज अणुव्रत का मूल्य समाज की आचार संहिता की दृष्टि से हुआ है, किन्तु जीवन-दर्शन की दृष्टि से पर्याप्त नहीं हुआ है।

अणुव्रत दर्शन विचार-क्रांति का दर्शन है। हम स्वयं का कल्याण करते हुए, दृढ़ संकल्पी बनते हुए दूसरों के लिए रश्मि खींच सकें तो स्वयं का भला होगा और हर क्षेत्र में उन्नति होगी।

मानवता के निर्माण में अणुव्रत के संस्कार बहुत आवश्यक हैं तथा सामाजिक सभ्यता के लिए भी। अणुव्रत दर्शन विचार-क्रांति का दर्शन है। हम स्वयं का कल्याण करते हुए, दृढ़ संकल्पी बनते हुए दूसरों के लिए रश्मि खींच सकें तो स्वयं का भला होगा और हर क्षेत्र में उन्नति होगी।

गीत

अणुव्रत यात्रा संदेश

साध्वी निर्मलप्रज्ञा

सद्भावों की लेकर ज्योति, नया उजाला लाएं।
प्रेम का प्रांगण हो घर आंगन, स्वर्ग धरा पर लाएं।
मैत्री दीप जलाएं... सद्भावी बन जाएं...

जाति-पांति में बंटें नहीं हम, ऐसी प्रीत बनाएं।
मानवता का मान हो सच्चा, भाईचारा लाएं।
प्राणी मात्र के लिए सजग हो, अहिंसा अपनाएं।
नैतिकता की सुर-सरिता से, स्वस्थ समाज बनाएं।
मैत्री दीप जलाएं... सद्भावी बन जाएं।

तालमेल हो अपनों के संग, आस्था दीप जलाएं।
एक दूजे का हो सम्मान, हर क्षण सुखद बनाएं।
अहं का चश्मा रख जमीं पर, पहले कदम बढ़ाएं।
अपनेपन की गूंथें माला, हर पल साथ निभाएं।
मैत्री दीप जलाएं... सद्भावी बन जाएं।

मात-पिता हैं ढाल हमारे, उनका मान बढ़ाएं।
काम करें हम कभी न ऐसा, कुल पर आँच जो आये।
सोचे समझे बोल जुबां पर, धीरजता से लाएं।
नाजुक रिश्तों की डोरी को, मिल मजबूत बनाएं।
मैत्री दीप जलाएं... सद्भावी बन जाएं।

पानी-बिजली का संयम हो, पर्यावरण बचाएं।
कन्याओं की हो सुरक्षा, ऐसा कदम बढ़ाएं।
महाश्रमण गुरु आशीर्वाद से,, नित्य सफलता पाएं।
अणुव्रत यात्रा संदेश, जन-जन में पहुँचाएं।
मैत्री दीप जलाएं... सद्भावी बन जाएं।

तर्ज - माय रे माय मुंडेर पे तेरे, बोल रहा है कागा...

आचार्य महाश्रमण

मन की एकाग्रता से क्या मिलेगा ?

आदमी अपने मन की चंचलता के कारण दुःखी भी बन सकता है और मन की एकाग्रता से सुखी भी बन सकता है। मन को एकाग्र बनाने के लिए, मन को वश में करने के लिए अपेक्षा है अन्तर्मन में वैराग्य भाव की उत्पत्ति। जब वैराग्य का फल आएगा तब मन अपने वश में रह सकेगा।

प्रश्न किया गया - एगग्गमणसन्निवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ? भंते! मन को एक अग्र पर केन्द्रित करने से जीव को क्या प्राप्त होता है? उत्तर दिया गया - एगग्गमणसन्निवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ। एक अग्र पर मन को केन्द्रित करने से चित्त का निरोध हो जाता है।

आदमी का मन चंचल होता है। वह थोड़ी-सी देर में कहां से कहां चला जाता है। मन की दो अवस्थाएं होती हैं – व्यग्र और एकाग्र। जब मन के विभिन्न आलंबन बन जाते हैं, कभी यहां तो कभी वहां यानी वह भ्रमणशील रहता है, विकेन्द्रित हो जाता है, यह मन की व्यग्र अवस्था है। जब मन एक आलंबन पर केन्द्रित हो जाता है, वह मन की एकाग्र अवस्था है। आदमी का मन बहुत अच्छा है, क्योंकि मन के द्वारा सुन्दर विचार किया जा सकता है, सुन्दर कल्पना की जा सकती है और मन से सुख भी मिलता है। परन्तु वही मन तब दुःखदायी बन जाता है, जब मन में खराब विचार आ जाते हैं, खराब कल्पनाएं आ जाती हैं। फिर मन दूषित बन जाता है।

आदमी अपने मन की चंचलता के कारण दुःखी भी बन सकता है और मन की एकाग्रता से सुखी भी बन सकता है। मन को एकाग्र बनाने के लिए, मन को वश में करने के लिए अपेक्षा है अन्तर्मन में वैराग्य भाव की उत्पत्ति। ऊपर से भले ही किसी ने कितनी तपस्या कर ली, कितना ही दान दे दिया, कितने ही शास्त्रों का अभ्यास कर लिया, कितने ही क्रिया काण्ड कर लिये, ऊपरी आचार का भी पालन कर लिया होगा, किन्तु अगर भाव शुद्ध नहीं है तो वह तपस्या, साधना भी विशेष फलदायी नहीं होती। साधना को सफल बनाने के लिए वैराग्य का अंकुर पैदा करना होगा। जब वैराग्य का फल आएगा तब मन अपने वश में रह सकेगा।

हमारे मन में बार-बार विचार आते रहते हैं। हम चलते हैं, चलते-चलते भी कितने विचार आ जाते हैं। हम भोजन करते हैं, भोजन करते समय भी कितने विचार मन में आ जाते हैं। रात्रि में सोते समय भी विचार आते रहते हैं।

इसका मतलब यह हुआ कि हमारा मन बड़ा चंचल है। इसलिए मन को किसी एक बिन्दु पर टिकाने का, बांधने का प्रयास करना चाहिए और साथ में श्वास के खूंटे से उसे जोड़ देना चाहिए। मन एक प्रकार की गाय है। इस गाय को एक खूंटे से बांधने की अपेक्षा है। अन्यथा वह कहीं भी जा सकती है। वह खूंटा है श्वास का। मन को श्वास के खूंटे से बांध दिया जाये तो वह कुछ केन्द्रित हो सकता है। हालांकि बांध देने के बाद भी वह कुछ कूद-फांद तो कर सकता है, किन्तु खूंटा मजबूत हो और अच्छी तरह बंधा हुआ हो तो ज्यादा दूर नहीं जा पाएगा।

हमारे मन में राग-द्वेष के भाव आ सकते हैं। किसी के द्वारा थोड़ी-सी प्रशंसा करने पर हम फूल जाते हैं, खुश हो जाते हैं और किसी के द्वारा कुछ निन्दा करने पर हमारे मन में आक्रोश आ जाता

जो मन विषयों में एकाग्र होता है, शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श में एकाग्र होता है, वह मन आत्मा के साथ जुड़ जाये, परम तत्त्व के साथ जुड़ जाये तो आदमी का कल्याण हो सकता है। आदमी कभी माया में मन को लगाये और कभी राम में मन को लगाये तो उसका कल्याण कैसे होगा?

है, मन खिन्न भी हो सकता है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हमारे मन को सहन करने का अभ्यास नहीं है। अगर सहन करने का अभ्यास हो जाये तो फिर भले कोई प्रशंसा करे या निन्दा करे, हमारे मन पर ज्यादा असर नहीं होगा। हम अपनी कामनाओं, इच्छाओं पर संयम करें तो मन नियंत्रित हो सकता है। आदमी अपनी साधना के द्वारा, ध्यान के द्वारा मन को संयमित करने का और मन को एकाग्र बनाने का प्रयास करे। यद्यपि कई बार मन एकाग्र होता भी है।

उदाहरणार्थ-एक व्यक्ति जब रुपये गिनता है तब उसका मन कितना एकाग्र हो जाता है। वहां मन की एकाग्रता रुपयों के साथ जुड़ गयी। वही मन यदि भगवान के साथ जुड़ जाये तो कितनी बड़ी बात हो जाये। जो मन विषयों में एकाग्र होता है, शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श में एकाग्र होता है, वह मन आत्मा के साथ जुड़ जाये, परम तत्त्व के साथ जुड़ जाये तो आदमी का कल्याण हो सकता है। आदमी कभी माया में मन को लगाये और कभी राम में मन को लगाये तो उसका कल्याण कैसे होगा? कहा भी गया है-

राम नाम फीका लगे, नीका लगे जु दाम।
दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।।

आदमी दोनों घोड़ों की सवारी न करे। वह राम के घोड़े पर चढ़े, अध्यात्म के घोड़े पर चढ़े तो मन पवित्र बनेगा और आत्मा का भी कल्याण हो सकेगा। अध्यात्म की साधना में मन की एकाग्रता बहुत महत्वपूर्ण होती है।

कुछ लोग तपस्या, साधना करते हैं, किन्तु उसके पीछे भी मन में कामना रहती है कि मुझे सत्ता मिले, पैसा मिले, पद मिले आदि। आदमी मन्दिर में भी जाता है तो कामनाओं को साथ लेकर जाता है। कामनायुक्त धर्म से ज्यादा लाभ नहीं मिलता। निष्काम होकर भगवान की भक्ति करने से अधिक लाभ मिलता है।

एक बार भगवान राम कहीं जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने पम्पा सरोवर को देखा और लक्ष्मण से कहा-

पश्य लक्ष्मण! पंपायां, बकः परमधार्मिकः।
मंदं मंदं पदं धत्ते, जीवानां वधशंकया।।

भैया लक्ष्मण! यह बगुला कितना धार्मिक है? कहीं किसी जीव की हिंसा न हो जाये, कोई जीव पाँव के नीचे आकर मर न जाये इसलिए कितना धीरे-धीरे चलता है।

यह बात एक मछली ने सुन ली। वह तत्काल बोल पड़ी -

बकः किं वर्णयते राम! येनाऽहं निष्कुलीकृता।
सहचारी विजानीयाद्, चरित्रं सहचारिणाम्।।

हे रामचन्द्रजी! आप बगुले के बारे में क्या कह रहे हैं? आप इसको जानते ही कहां हैं? उसको तो मैं जानती हूँ। साथ में रहने वाला व्यक्ति ही साथी के चरित्र को जान सकता है। इस बगुले ने मेरे कुल का नाश कर दिया। यह धार्मिक नहीं है। इसकी दृष्टि तो मछलियों पर टिकी रहती है। कब मछली मिले और कब उसे समाप्त करे। प्रभो! आप इसकी प्रशंसा न करें।

बगुले में भी एकाग्रता तो है, किन्तु वह एकाग्रता भगवत्ता के प्रति नहीं, मछली के प्रति है। आदमी के मन की एकाग्रता केवल पैसों के लिए न हो, केवल बाह्य विषयों के प्रति न हो। वह एकाग्रता परम प्रभु के प्रति हो जाये, आत्मा के प्रति हो जाये तो बेड़ा पार हो सकता है। अनेक व्यक्ति राम का नाम लेते हैं। राम का नाम लेने से मन की निर्मलता बढ़े और मलिनता दूर हो तो राम का नाम लेना ज्यादा सार्थक सिद्ध हो सकता है। नाम को भी श्वास के साथ जोड़ा जा सकता है। श्वास लेते समय राम का नाम ले लिया जाये और श्वास छोड़ते समय न कोई नाम, न कोई विचार। इस प्रकार श्वास के साथ नाम जोड़ने पर मन ज्यादा एकाग्र हो सकेगा।

कई बार आदमी ऊपर से भगवान का नाम लेता है, उपासना करता है किन्तु भीतर में वासना का निवास होता है। यदि सही तरीके से, सही लक्ष्य से भक्ति या उपासना की जाये तो वासना का नाश हो सकता है, मन की पवित्रता बढ़ सकती है। हालाँकि मन तो एक प्रकार का यंत्र है। मूल तो भाव है। भीतर जैसे भाव होते हैं, उनके अनुसार मन अच्छा या बुरा बन जाता है। जब भाव अपवित्र

मन तो एक प्रकार का यंत्र है। मूल तो भाव है। भीतर जैसे भाव होते हैं, उनके अनुसार मन अच्छा या बुरा बन जाता है। इसलिए ध्यान के द्वारा, योग के द्वारा, अध्यात्म की साधना के द्वारा गलत भावों का रेचन किया जाये तो मन स्वतः ही पवित्र बन जाएगा।

होते हैं तब आदमी आतंकवाद में जा सकता है, बलात्कार की ओर आगे बढ़ सकता है, हिंसा आदि गलत कार्यों की दिशा में अग्रसर हो सकता है। इसलिए ध्यान के द्वारा, योग के द्वारा, अध्यात्म की साधना के द्वारा गलत भावों का रेचन किया जाये तो मन स्वतः ही पवित्र बन जाएगा।

एक दार्शनिक से प्रश्न पूछा गया–महोदय ! हमारी दुनिया में सबसे आसान कार्य क्या है?

दार्शनिक ने कहा–सबसे आसान कार्य है दूसरों की निन्दा-आलोचना करना। अच्छे-अच्छे व्यक्तियों की भी लोग निन्दा-आलोचना करते रहते हैं। हां, समीक्षा तो की जा सकती है, किन्तु बिना मतलब किसी की निन्दा या गलत आलोचना नहीं करनी चाहिए।

दूसरा प्रश्न पूछा गया - दुनिया में सबसे कठिन कार्य क्या है?

दार्शनिक ने कहा - सबसे कठिन कार्य है अपनी पहचान करना। दूसरों की पहचान करना भी कठिन होता है किन्तु अपनी पहचान करना, अपनी आत्मा को देखना और अधिक कठिन होता है। हमारी अपनी आँखें दूसरों के चेहरे को देखती हैं, पर स्वयं का चेहरा देखने में असमर्थ हैं। जब आदमी अपना चेहरा भी नहीं देख पाता तो आत्मा तो बहुत गहरी चीज है। उसकी पहचान करना तो और भी कठिन काम है।

दार्शनिक से तीसरा प्रश्न पूछा गया - दुनिया में सबसे ज्यादा गतिशील क्या है ?

दार्शनिक - सबसे ज्यादा गतिशील है आदमी का मन। यदि भारत से किसी को अमेरिका जाना है तो कुछ घण्टे तो अवश्य लगेंगे। किन्तु मन को अमेरिका पहुँचने में कुछ सेकण्ड ही लगेंगे। यह मन की गतिमत्ता है। यह गतिमत्ता काम की नहीं है। इससे समस्या का प्रादुर्भाव होता है। इसलिए मन को नियंत्रित करना अपेक्षित है।

आर्षवाणी में सुन्दर कहा गया है कि एक आलम्बन पर मन को केन्द्रित करने से चित्त का निरोध होता है, चित्त शांत होता है। चित्त का निरोध हो जाने से आदमी को परम समाधि और शांति मिल जाती है। ■■■

विनम्रता : व्यक्तित्व में लाये निखार

■ लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ■

विनम्रता हमारे हृदय को विशाल, स्वच्छ और ईमानदार बनाती है। हमारे आत्मबल में अनवरत ऊर्जा का संचार करती है। विनम्रता गुण ही नहीं, संस्कार भी है जो व्यक्तित्व-निर्माण के साथ ही चरित्र-निर्माण में भी सहायक है। विनम्र व्यक्ति संवेदनशील होता है, दूसरे के दुःख को समझता है और उसकी सहायता करने को तत्पर रहता है। विनम्रता ऐसा गुण है, जो लोगों के प्रति प्रेम और विश्वास की भावना में वृद्धि करके हमें एक-दूसरे से जुड़ना सिखाती है। लोग विनम्र व्यक्ति की तारीफ करते हैं। कहते हैं, देखो फलां व्यक्ति बहुत ही विनम्र है, सीधा-सादा है, सज्जन है।

विनम्रता हमारे व्यक्तित्व एवं जीवन में निखार लाती है और सफलता का कारण बनती है। यह हमारी योग्यता को बढ़ा देती है। विनम्र होना हमारे संस्कार की पहचान है। जो विनम्र होते हैं, वे सभी को प्रिय लगते हैं। उनकी वाणी में मिठास भरी होती है।

कभी-कभी कई कार्य होने मुश्किल होते हैं, परंतु जब हम विनम्रता से अपनी बात रखते हैं तो न चाहते हुए भी वह व्यक्ति हमारी बात पर ध्यान देता है और हमारे कार्य को कर देता है अर्थात् विनम्रता एक ऐसा सद्गुण है जिसकी शक्ति से हम खुद और अन्य पर काबू कर सकते हैं। तभी तो विनम्रता को मनुष्य के व्यक्तित्व का आभूषण कहा जाता है।

विनम्रता जन्मजात नहीं भी हो तो इसे हम सीख और अर्जित कर सकते हैं। इसका डिग्रियों से कोई विशेष संबंध नहीं होता। अनपढ़ व्यक्ति विनम्र हो सकता है और आवश्यक नहीं कि अधिक पढ़ा-लिखा भी विनम्र हो, वह घमंडी भी हो सकता है। विनम्रता का धन-दौलत से भी अधिक संबंध नहीं है, न ही यह कायरता की निशानी है। बल्कि विनम्र व्यक्ति निश्चित ही अपनी छाप समाज में छोड़ता है और वह उसी से पहचाना जाता है।

वर्षा भम्भाणी मिर्ज़ा

संवेदना का घटता सूचकांक

युवाओं के अभिभावकों के लिए यह ज्यादा चौकन्ना रहने का समय है क्योंकि बेरोजगारी से उपजा रोष उन्हें किसी भी गलत कदम की ओर धकेल सकता है और शातिर ताकतें इसी कदम के इंतजार में रहती हैं। इन बच्चों को खुश रहने का पूरा हक है। उनके माता-पिता को अपने बच्चों के लिए काम माँगने का हक है और जो काम नहीं है तो अहिंसक तरीके से एक बड़ी और मुखर आवाज बनने का भी हक है। उग्र भीड़ बनने का हक किसी को नहीं है।

एक युवा हतप्रभ होता है जब उसे पता चलता है कि भारत भूमि में उस बात की जड़ें हैं जहां सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव तक को बचाने की चेष्टा परम धर्म है। गलती से भी जीव हत्या पर प्रायश्चित्त का विधान है। अफसोस कि फिर हम कैसे वह समाज हो गये जिसे हिंसा में रस आने लगा। जीते-जागते इंसान पर ही हिंसा से हमें कोई गुरेज नहीं है तो मूक प्राणी और दिखायी न देने वाले जीवों की हस्ती ही क्या है। संवेदना का घटना कोई आनुवांशिक गुण नहीं है। यह समाज, देश, दुनिया में हर कहीं लगातार अपने न्यूनतम सूचकांक पर है। ऐसे में जब एक लेखक इंसान की गरिमाहीन जिंदगी को देख घंटों आंसू न रोक पाये तो यह भी एक किस्म की हिंसा ही है जो व्यवस्था ने उसे दी है।

अक्सर हिंसा के प्रतिउत्तर में हिंसा की ही कल्पना आती है। आपने हमें मारा, हम मारेंगे। आपने हमसे हमारा हिस्सा ताकत के बल पर छीना, हम अपनी ताकत बढ़ाकर छीनेंगे। यह कभी न खत्म होने वाला सिलसिला इस बेहद सुंदर दुनिया को बदरंग करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा। रोजमर्रा की जिंदगी में एक धरातल पर एक जैसों के बीच लड़ाई होती है और फिर कुदरती तौर पर फैसले की ओर मुड़ भी जाती है, लेकिन इसके विपरीत संख्या और ताकत को बढ़ाकर लड़ाई जीतने का मंसूबा मानवता को बहुत कमजोर कर रहा है।

तिब्बत याद है आपको। एक छोटा-सा देश जिसे चीन ने कब का हड़प जाना था, लेकिन इस देश के बाशिंदे दलाई लामा के नेतृत्व में कमजोर नहीं पड़े। आज 62 साल बाद तिब्बत को हारा हुआ और हिंसा का प्रतीक बनकर रह जाना था, लेकिन वह संकल्प का प्रतिरूप बनकर खड़ा है। बेशक विरह और दर्द उसके रोम-रोम में है, लेकिन आज दलाई लामा के नेतृत्व में वह दुनिया के लिए एक मशाल लेकर खड़ा है। माओत्से तुंग के नेतृत्व में जब चीन ने तिब्बत को हड़प जाने की चाल चली थी, तब 24 साल के दलाई लामा को रातों-रात वहां से निकल कर भारत का रुख करना पड़ा था। वही भारत जो खुद अहिंसा के पदचिह्नों पर चलकर अपना नया भविष्य बना रहा था। यह भारत का बड़ा नजरिया दुनिया को दिखा रहा था कि आजादी पाने के बाद भी अहिंसा में उसका यकीन कम नहीं हुआ है।

भारतीय सामाजिक जीवन इतना धनी भले न था, लेकिन इतना उदात्त था कि उसने तिब्बतियों के संघर्ष और दलाई लामा को हृदय से गले लगाया। आज किस भारतीय को नहीं मालूम और किसने अपने शहरों में लगने वाले तिब्बती बाजारों से गर्म कपड़े नहीं खरीदे होंगे। दुनिया के लिहाज से यह बेहतरीन मिसाल कही जा सकती है कि अहिंसा के आगे बड़ी कीमत चुकाने के बावजूद

दरअसल नफरत भरने के लिए दुनियाभर में फैली धर्म-जाति के नाम पर अलगाववाद पैदा करने वाली ताकतें दिमाग को बदलने के लिए सुनियोजित तरीका अपनाती हैं। दुनिया में आतंक का यही आधार है कि दिन-रात सोते-जागते कहते जाओ कि यही हमारा दुश्मन है, हमारी राह का रोड़ा है। तरुणाई को इस जाल में लेना आसान है।

तिब्बती युवा हारा नहीं है और उसका नेतृत्व अब भी शांति का ही परचम बुलंद कर रहा है। बावजूद एक पूरी पीढ़ी जिसने तिब्बत के दर्शन भी नहीं किये हैं, उम्रदराज हो चुकी है। अहिंसा का इरादा ऐसी ही कुर्बानी माँगता है। ऐसा ही संकल्प और जज्बा एक तिब्बती कवि सुधन्वा शेट्टी की कविता की पंक्तियों में दिखायी देता है -

भारत में जन्मा एक विदेशी
मैं, तिब्बती चिंकी चेहरे-मोहरे के बावजूद
कहीं अधिक भारतीय
नेपाली? थाई? जापानी?
चीनी? नागा? मणिपुरी?
बस "तिब्बती?" यह सवाल कभी नहीं।
मैं एक तिब्बती
जो तिब्बत से नहीं आया
कभी नहीं गया वहां
फिर भी वहीं मर सकने का
स्वप्न देखता हूँ।

सच ! हर तिब्बती का एक सपना है खून-खराबे और संघर्ष से मुक्त अपने देश तिब्बत लौटने का। भारत देश की तकलीफ की बात करें तो सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को ही गोली मार दी गयी। यह कितना बड़ा अंतर्विरोध है। अहिंसा के सिद्धांत का ऐसा अपमान भारत में कैसे हो सकता है? क्या यह हार थी? उस फकीर से किसी को क्या खतरा हो सकता था जो खुद अपने हर काम का ब्यौरा प्रतिदिन दुनिया के सामने रखता था।

दरअसल नफरत भरने के लिए दुनियाभर में फैली धर्म-जाति के नाम पर अलगाववाद पैदा करने वाली ताकतें दिमाग को बदलने के लिए सुनियोजित तरीका अपनाती हैं। दुनिया में आतंक का यही आधार है कि दिन-रात सोते-जागते कहते जाओ कि यही हमारा दुश्मन है, हमारी राह का रोड़ा है। तरुणाई को इस जाल में लेना आसान है। क्या कोई किसी का इस कदर ब्रेनवॉश कर सकता है कि एक निहत्थे बुजुर्ग को गोली मार दी जाये। ब्रेनवॉश इसलिए क्योंकि प्रमाण मिलते हैं कि जो लोग ऐसा चाहते थे, उन्होंने इस कुकृत्य को अंजाम देने के बाद पूरी तरह उनसे मुँह मोड़ लिया। कम से कम सार्वजनिक तौर पर तो पूरी तरह।

एक बात और समझनी चाहिए कि हिंसक समाज का जो मास्टर माइंड होता है वह खुद बहुत ही भीरु किस्म का होता है। अहिंसक समाज सीना तान के चलता है। इरादा स्पष्ट होता है कि तुम्हारे पास गोली है तो हमारे पास सीना है। एक सीना गोली खाता है, दूसरा तैयार रहता है। जब मौत उसे पराजित नहीं करती, तब हत्यारे का खौफ जागता है। यही अहिंसक समाज की शक्ति बनता है। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ यही शक्ति भारतीयों की आत्मा में बसती चली गयी।

आज अहिंसक समाज के सामने अनेक चुनौतियां हैं। अफसोस इस बात का है कि आजाद भारत में हिंसक सोच को ज्यादा खाद-पानी मिल रहा है। एक नये किस्म की हिंसा जड़ें जमा रही है, वह है भीड़ हिंसा – मॉब लिंचिंग। यह डराने वाली इसलिए भी है कि यह उस पाशविक दौर को जिंदा करती है जब इंसान अपने वर्चस्व को साबित करने के लिए जान लेने पर उतारू रहता था।

अहिंसा जीवन मूल्य है और कबीलाई मानव में इसे रोपने में हमारे पुरखों ने कितना श्रम किया होगा, यह समझना भी आसान नहीं है। निरपराधियों को मार खुद न्याय करने की पहल एक संप्रभु राष्ट्र में अपराध के जिस दायरे में आनी चाहिए, वैसा हम अभी नहीं कर पा रहे हैं। भयभीत नागरिक कैसे एक चैतन्य राष्ट्र की नींव रख सकता है? इस दौर में नागरिक को प्रचार माध्यमों से डराया जाता है कि तुम रौंद दिये जाओगे, अगर तुमने इस दुश्मन की परवाह नहीं की।

दरअसल ये मास्टरमाइंड बड़ी और बेरोजगार आबादी का हमेशा से ऐसे ही लाभ लेते आये हैं। युवाओं के अभिभावकों के लिए यह ज्यादा चौकन्ना रहने का समय है क्योंकि बेरोजगारी से

उपजा रोष उन्हें किसी भी गलत कदम की ओर धकेल सकता है और शातिर ताकतें इसी कदम के इंतजार में रहती हैं। इन बच्चों को खुश रहने का पूरा हक है। उनके माता-पिता को अपने बच्चों के लिए काम माँगने का हक है और जो काम नहीं है तो अहिंसक तरीके से एक बड़ी और मुखर आवाज बनने का भी हक है। उग्र भीड़ बनने का हक किसी को नहीं है।

आलेख के प्रारंभ में एक संवेदनशील लेखक का जिक्र है। वे लिखते हैं - "सड़क के किनारे, कोठियों के बाहर सोने वालों की कतारें थीं। एक कतार सोने वालों की उस नल से भी निकलती थी जिसमें सुबह पानी आने वाला था। ये अधिकांश बच्चे-बच्चियां थे। हाथ गाड़ी पर दिन भर सामान बेचने वालों ने अपनी गाड़ियों को रात में खाट बना लिया था। दूर तक फुटपाथ ऐसा लगता था मानों दुर्घटना के बाद अस्त-व्यस्त लाशें पड़ी हों। मैं बीच सड़क पर बैठ गया। आज मेरा सीना यह सब देखकर भरभरा उठा था। मैंने पाया कि मैं सिसकने लगा हूँ और मेरी तबीयत फूट-फूटकर रोने की हो रही है। मैं अपना नाम लेकर अपने को पुकार रहा था। थू है तुम्हारी जिन्दगी को, तुम पत्थर हो गये हो। ये देखो ये असली शहर है, असली हिंदुस्तान।"

यह हिस्सा ज्ञानरंजन की कहानी 'अनुभव' का है। व्यवस्था की यह हिंसा लेखक की आँखों से झरने लगती है। यहीं से उम्मीद भी बनती है कि व्यवस्था का सपना दिखाने वाले कभी तो जिम्मेदार होंगे।

उम्मीद का सूरज यहां भी नजर आता है। साल 2015 की बात है। जयपुर साहित्य उत्सव में मिसाइल मैन के नाम से ख्यात रहे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे कलाम साहब आये थे। वे बच्चों में काफी लोकप्रिय थे। उस दिन तो ऐसा लगता था जैसे शहर के सभी बच्चे कलाम को सुनने निकल पड़े हों। सारे रास्ते वहीं जा रहे थे। उन्होंने बच्चों से पूछा, बच्चो! क्या तुम मुझे बता सकते हो कि महाभारत में मेरा प्रिय पात्र कौन-सा है?

बच्चों ने आसमान सिर पर उठाते हुए कहा – कृष्ण...अर्जुन... युधिष्ठिर...भीम...। बच्चे नाम लेते गये और बच्चों के प्रिय कलाम साहब "ना" "ना" कहते गये। फिर थोड़ा ठहरकर बोले – विदुर क्योंकि वे निर्भय, निष्पक्ष और निर्लिप्त थे। उन्होंने बच्चों से बुलवाया कि अगर हम भारतीय ऐसे बेहतर नागरिक होंगे तो दुनिया को एक अरब बेहतर नागरिक मिलेंगे। बस ऐसे ही मार्गदर्शक इस दुनिया को चाहिए। ये ही हिंसक समाज का बोरिया बिस्तर समेट सकते हैं। यह संभव है क्योंकि यहां इंसान ने अपने से कहीं ज्यादा अदृश्य जीवों की चिंता की है।

जयपुर में रहने वाली लेखिका करीब तीन दशकों तक विभिन्न समाचार पत्रों तथा टीवी चैनल्स में काम कर चुकी हैं। संप्रति समसामयिक मुद्दों पर पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन।

संघर्ष

■ राजेश पाठक - गिरिडीह ■

संघर्ष जीवन का शाश्वत सत्य है। इसके बिना व्यक्ति में जीवन-दर्शन की कमी आजीवन रह जाती है। इतना ही नहीं, बिना संघर्ष का जीवन उदासीनता एवं अंत में पराभव का कारण बन जाता है। सुख-दुःख का सम्मिश्रण ही वस्तुतः सफल जीवन का मूल आधार होता है। इस मूल आधार को क्षय होने से बचाने के लिए संघर्ष एक अपरिहार्य कारक के रूप में उपयोगी, भावात्मक व सृजनात्मक तत्त्व है।

कभी-कभी स्वयं के विरुद्ध भी संघर्ष करना पड़ता है और इसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि व्यक्ति अपनी असफलताओं के कारणों का स्व-मूल्यांकन करे एवं अपने अंदर पायी गयी कमियों व दुर्गुणों को दूर करने का साहस दिखाये।

इस सत्य को हमें समझना चाहिए कि संघर्ष ही जीवन को फलीभूत करता है। यही कारण है कि जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर लोगों को इसकी जरूरत महसूस होती रहती है।

सभी प्राणी, चाहे जड़ हों या चेतन, संघर्ष के सहयात्री बनकर ही जीवन-लक्ष्य के निश्चित पड़ाव पर पहुँच पाते हैं। यहां तक कि मन में संघर्ष करने के विचार मात्र से ही व्यक्ति के अंदर सकारात्मक जोश एवं ऊर्जा का संचार हो जाता है।

अतः जीवन में आयी या आने वाली बाधाओं के विरुद्ध संघर्ष कर ही व्यक्ति श्रमसाध्य लक्ष्य को भी ससमय प्राप्त करने में सफल हो जाता है। जीवन में संघर्ष की अनिवार्यता को हम इन पंक्तियों में आसानी से देख सकते हैं-

"कर मिट्टी से संघर्ष, दाने उग आते हैं
भीमकाय होने पर भी, वे झुक जाते हैं
तप, त्याग, मनोबल भी, संघर्ष हुआ करता है
लघुकाय होने पर भी, शिखर छुआ करता है।"

अंतिम मौका !!! अंतिम मौका !!! अंतिम मौका !!!

नाईस इंश्योरेंस लैंडमार्क प्रस्तुत करता है

1 साथ 2 पीढ़ी कवर

एक जबरदस्त प्लान सभी उम्र के लिए (0 से 55)

आप अपने बच्चो को आगे आने वाले दो जनरेशन के लिए

कैश-प्रॉपर्टी के रुप में गिफ्ट दे सकते है...

हर महीने 50000/- सिर्फ 15 वर्ष निवेश करने से

आजीवन गारेंटेड टेक्स फ्री रिटर्न

आजीवन बढता हुआ रिस्क कवर

आजीवन लोन सुविधा व सरेंडर वैल्यू

एक्सीडेंटल रिस्क कवर के साथ

प्रीमियम भरने की अवधि	रिस्क कवर ADDB सहित	आजीवन गारेंटेड टेक्स फ्री रिटर्न	सरेंडर वैल्यू 30 वर्ष में		सरेंडर वैल्यू 40 वर्ष में		सरेंडर वैल्यू 50 वर्ष में		सरेंडर वैल्यू 60 वर्ष में	
			SSV	कुल रिटर्न	SSV	कुल रिटर्न	SSV	कुल रिटर्न	SSV	कुल रिटर्न
15 वर्ष	1.5 - 8.4 करोड़	599999	1.95 करोड़	2.83 करोड़	2.95 करोड़	4.42 करोड़	4.24 करोड़	6.30 करोड़	5.95 करोड़	8.59 करोड़
20 वर्ष	2.1 - 12.4 करोड़	870000	2.93 करोड़	3.80 करोड़	4.39 करोड़	6.13 करोड़	6.28 करोड़	8.89 करोड़	8.79 करोड़	12.27 करोड़
25 वर्ष	2.5 - 17 करोड़	1196000	4.07 करोड़	4.66 करोड़	6.04 करोड़	7.84 करोड़	8.61 करोड़	11.60 करोड़	12.03 करोड़	16.22 करोड़
30 वर्ष	3 - 21.8 करोड़	1528000	5.39 करोड़	5.39 करोड़	7.88 करोड़	9.41 करोड़	11.33 करोड़	14.19 करोड़	15.46 करोड़	20.05 करोड़

Above Statements are based on certain assumptions, which are liable to change according to Government / Corporation's Polices

जल्दी कीजिए!

बुकिंग की अंतिम तारीख
31-03-2023

आज ही कॉल करे!

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK

One Stop Insurance Solution in India !

Legacy of 40 Years | 25000 Happy Customers |11000 Claims Solved
Life Insurance | Jewellers Block | Health Insurance |Motor Insurance

हमारी सेवाएँ पूरे भारत में ऑनलाईन द्वारा ले सकते है।

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A.Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi, Marine Lines (East) Mumbai- 400002

Call on : 9869230444 / 9869050031 • www.niceinsure.com

डॉ. कमला रत्तू

दृष्टिकोण बदलते ही बदल जाता है सब

अणुव्रत का अनुशासन ही जीवन को एक नये रास्ते पर बांधकर चला सकता है। अणुव्रत के जरिये समग्र समाज में एक नयी ऊर्जा का संचार करने के साथ ही एक नये समाज की कल्पना की जा सकती है। अणुव्रत एक रोशनी की मीनार है जहां हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों से एक नये घर-परिवार और समाज का सृजन कर सकते हैं।

अणुव्रत का संकल्प एक नयी जीवनशैली ही तो है। यह एक ऐसा अनुभव है जो जीवन के नये सोपान खोलता है। अहिंसक जीवनशैली और छोटे-छोटे संकल्प ही मुख्य रूप से जीवन को बदलते हैं। पिछले सात दशकों में अणुव्रत आंदोलन की एक प्रेरक पथ दर्शक की भूमिका रही है। इसके द्वारा नयी पीढ़ी में नये संस्कारों और विचारों का संचार हुआ है। जिस तरह से अणुव्रत आंदोलन ने समाज की मुख्य धारा को बदला है, वह एक विलक्षण उदाहरण है। असल में अणुव्रत एक जीवनशैली और जीवन का अनुभव है और इसको अपने जीवन में संयम और अपने आचार-व्यवहार से ही महसूस किया जा सकता है।

सापेक्ष व्यवहार और चिंतन की नयी धारा जो अणुव्रत से मिलती है, और कहीं भी नहीं है। अणुव्रत का मूलमंत्र है – संयम ही जीवन है। संयम के बिना आत्म-अनुशासन जीवंत नहीं रह सकता है और आत्म-अनुशासन के बिना लोकतंत्र नहीं हो सकता है।

असल में अणुव्रत जीवन का मध्यम मार्ग सिखाता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे सूत्र जिंदगी को नये रास्तों पर चलने का बल देते हैं। अणुव्रत एक अनूठा प्रयोग है, जिससे जिंदगी बदलती है। यही तो वह निर्झर है जिसमें शांति है, जिससे ज्ञान और शिक्षा की धारा फूटती रहती है और समाज में एक नया परिणाम सामने आता रहता है।

यह एक जीवनशैली और भारतीयता का परिचायक है और इसी में ही संयम की अटूट साधना कर हम अपने जीवन को एक विशिष्ट शैली में विकसित कर सकते हैं। अणुव्रत के छोटे-छोटे व्यावहारिक प्रयोग असल में बड़े जीवन अनुभव हैं। अणुव्रत और संयम की शैली असल में शांति की अणुव्रतीय जीवनशैली है। छोटे व्रतों का बड़ा अनुभव है, यह मंत्र और जीवन सूत्र।

इसी से प्रभावित प्रेक्षाध्यान अपने नित्य जीवन निर्माण का नया अध्याय है। यह प्रयोग असल में जिंदगी को बदलने की एक प्रक्रिया है। असंयम को संयम में लाना एक यादगार अनुभव है। जीवन एक हादसों से भरी शृंखला की अनंत यात्रा है। यहां आपका बहुत कुछ पीछे छूटता है, बहुत कुछ नया जुड़ता है। यह जुड़ने का अनुभव नये सृजन की यात्रा का यथार्थ है और इस यथार्थ पर खरे उतरने का संकल्प ही तो अणुव्रत का नया दृष्टिकोण है, जिससे अपना और समाज का कल्याणकारी रास्ता खोजा जा सकता है। अब यही समय का सत्य है।

आचार्य महाप्रज्ञ कहते थे - पहले ज्ञान और फिर आचार। जो आचार फलित होता है, उसके लिए नये दृष्टिकोण का निर्माण होना चाहिए। अपना दृष्टिकोण बदलो, दुनिया बदल जाएगी।

जयपुर निवासी लेखिका पिछले 35 वर्षों से अणुव्रत से जुड़ी हैं। स्कूली शिक्षा में प्रिंसिपल पद से सेवानिवृत्ति के बाद संप्रति चंडीगढ़ के एक विश्वविद्यालय में सामाजिक विज्ञान की प्रोफेसर हैं।

SORIN STRATILAT

Education for Peace and Mutual Understanding

We need peace, but unfortunately we are surrounded by war. Though it looks like a special time, it is not so. We long for peace in the third millennium and to me it appears that the third millennium will raise our hopes for peace. In every school we have to have clubs, youth associations for international friendship.

Researches being carried out in the field of "peace education" discover different aspects of comparative education. During the period of my research for 12 years in the United States when I worked as a movie director and assistant professor for audio-visual department in "Columbia University New York", and U.S.C.-Los Angeles, I got interested in peacemakers of the world.

The country of my origin is Romania and after 1989 when the communism collapsed, we organized an international club, a movement for international friendship. Countrywide activities were launched.

In schools the club is trying to train and help children and young people to deal constructively with questions of war and peace. As part of the work, a number of experts with special interest and competence in areas related to peace education are interviewed. The keywords are : citizenship, education, conflict resolution, environmental issues, global approach, justice, peace education, public issues, religion, appreciation of values. What is peace education? How can we educate our students to become participators in a programme to transform the world to be a just and peaceful place?

I have been involved in developing educational materials and service programmes as well as educational programmes including adult education or non-formal education. In my opinion even an attitude against drugs is an attempt to promote peace for lucidity and balanced minds. I think I would be satisfied with the term peace education as long as it is defined to agree with Pope Paul VI when in his speech to Romanian people, during his visit in Romania (May 1999), said: "there can be no peace without justice. So, I believe justice is constitutive of peace".

In India there is a great awareness about peace and nonviolence. Mahatma Gandhi lived in this country and played an important role in winning freedom for it. In his concept of peace AHIMSA is the focal point. Some steps and measures have to be taken regarding schools' contribution to training children in ahimsa. First of all, children should learn what peace means, what peace is, what peace stands for.

We need peace, but unfortunately we are surrounded by war. Though it looks like a special time, it is not so. We long for peace in the third millennium and to me it appears that the third millennium will raise our hopes for peace. In every school we have to have clubs, youth associations for international friendship. I think that there are a lot of things that can be done to help the teachers and the students to make this movement more effective. But it is necessary that peace education should also deal with our internal problems i.e. conflicts in our homes. So far as our schools are concerned, we have usually geared this work to suit the world outside. So we have to do a new orientation for this kind of ahimsa education. To my mind we should also develop such things as training teachers how to teach young people to overcome stereotypes. How should we develop their critical thinking and such skills as care, responsibility, conflict resolution? These are absolutely necessary for a broad idea of education for peace.

The younger pupils are simply not able to understand parts of the relevant content. Not only the content but also the methods should be adapted to the capabilities of their age levels.

One aspect of peace education that should be developed early is the multicultural approach. As I have already said, most of our communities are multicultural communities. First of all children have to know about their own traditions. They have to know about their own peculiarities. And then they have to know that there are other people living next to them who are also similar to them in many respects, but who have their own distinct traditions and peculiarities which need to be studied. Even they could be dealt with at the elementary school level using songs and dolls in different costumes as the starting-point for a discussion.

War is a crime. In many countries, questions related to disarmament and peace are highly controversial. In India there is a great awareness about peace and nonviolence. Mahatma Gandhi lived in this country and played an important role in winning freedom for it. In his concept of peace AHIMSA is the focal point. Some steps and measures have to be taken regarding schools' contribution to training children in ahimsa. First of all, children should learn what peace means, what peace is, what peace stands for. In informal education which begins at home, where the individuals have the first socialization, parents are duty bound to pay attention to the values of peace and the ways of peace and nonviolence which can be inculcated in their children in a natural way. In formal school education, every

student must have an opportunity for peace education. We have to let teachers and parents know why peace education is necessary. They need to be oriented toward this particular area. It's a new word; many people don't understand why it is so vital. We also have to realize that violence can be of various types-overt, covert, subtle, passive - and we have to learn to perceive them since peace as "no war" is too simplistic an idea.

A country may not be at war but if there is injustice, there is poverty or economic discrimination or inequity, can we say that it is a peaceful country?

The ways of conflict resolution are important. The students should also make observations about violence in their own community : Do you have slum areas, a trashy street? Do you see violence between parents in your house? Do you see violence in the shops and commercial areas? Do you see violence in the neighbourhood?

If you want to find out what violence is, as a student, you must go out in the real world and find out what violence is, what your solutions are? Peace education is especially important in our time, when we see how we have been hit by violence.

We have even made violence a part of our entertainment, part of our leisure time hobbies. For example, look at some films, there may be 250 incidents of violence in a film of two and half hours - unbelievable! TV-programs are often full of violence. To my mind "disarmament education" is a part of peace education or global education - one of the most important parts. Education for international understanding is also a part of peace education or global education. If we encounter difficulties while dealing with parents, we have to convince them of the need of peace education through a dialogue on account of the changes in society. Sometimes ethnic problems crop up. We have problems with our national subgroups, problems of psychological, economic and social character. As educators we still have not done what we can to help resolve these problems.

Peace education must concern itself with the issues of equality and mutuality. The right to participate in decisions which affect our lives is constitutive of justice. It needs to deal with environmental viability. Dealing creatively or nonviolently with conflict is also an important element of peace education.

One of the points in this way is to raise the general cultural level, because they may know the risks of this or not be culturally prepared for it, so it becomes just superficial knowledge, but not a clear attitude. Sometimes we are at war with ourselves. We neglect our irresponsibility. How can we ask others to solve our own problems? We need to fight our irresponsibility to build a new consciousness. The increasing cooperation among educators from different countries at international levels is important.

Peace education must concern itself with the issues of equality and mutuality. The right to participate in decisions which affect our lives is constitutive of justice. It needs to deal with environmental viability. Dealing creatively or nonviolently with conflict is also an important element of peace education. Conflict has always been a part of life, but what is important is that we see it positively and to see it as something that can be dealt with nonviolently. So I see all of those areas as components constitutive of peace education.

Another aspect such as skills, values and preparedness for action would also be a part of peace education. We must focus on developing values, skills and attitudes while evolving a conceptual framework. I think intellectual content, discussions, dialogues and the concerns of the day should be made part of the peace curriculum.

Education is not complete without a spiritual and moral component. We cannot be considered fully educated unless we learn to be morally good and responsible citizens in a community.

Our values and dignity as human beings flow from our individual human spirits which we have received from God. Our spirits (souls) relate us directly to God and to all other human beings. These relationships form the basis of our own self-respect and the respect we must give other people. Any educational process will remain incomplete without this spirituals and moral component.

AHIMSA means "Love" in the St. Paul way also. But AHIMSA includes the whole creation - not only humans. It is a positive state of love.

One starting point is the simple observation that more often than not emotions rule responses to an act of violence as if the sense was obvious. At first, it looks meaningless and unwise. On the other hand, the search for truth requires that a distinction be made between the "sign" registered by an external commentator and the "signified" for the actor involved in the event. In the first position, the work of understanding the act is tied to a duty towards the nation. In the second one, it relies on the interpretation of the actor's speech in the subject of instituted human groups. We believe that the difficulty in finding the truth does not necessarily condemn one to inaction. The key-words are : institutional violence, organisational violence, epistemic violence. Sometimes, we

Education is not complete without a spiritual and moral component. We cannot be considered fully educated unless we learn to be morally good and responsible citizens in a community. Our values and dignity as human beings flow from our individual human spirits which we have received from God. Our spirits (souls) relate us directly to God and to all other human beings.

Given the right kind of teachers, our children will be taught the dignity of labour and will be made to learn to regard it as an integral part and a means of their intellectual growth. The basic education is meant to transform school children into models of excellence.

see a movie about a war but it fails to convey the message of peace.

On the other hand, I think many times schools reflect the image of community. There is probably a great variety.

The latest literature I have read indicates that the generalized actions of 5-6 years old children shooting each other with toy guns or with their fingers has much more to do with their quest for a sense of empowerment in a world dominated by adults and older children as it does with anything else, and so I'm not very sure whether the aggressive behaviour is only a natural part of development. On the other hand, the commercialization of war, as seen in toys and media, has glorified violence. We do try to protect our children from certain forms of media. I think that the core issues of peace studies can be dealt with in some way at most ages. Our students can learn core skills of conflict and conflict resolution at almost any age.

By education I mean an all-round drawing out of the best in the child and man - body, mind and spirit. Every handicraft has to be taught not merely mechanically as is done today but scientifically, the child should know the why and the wherefore of every process.

Given the right kind of teachers, our children will be taught the dignity of labour and will be made to learn to regard it as an integral part and a means of their intellectual growth. The basic education is meant to transform school children into models of excellence.

The auther is a researcher and nonviolent activist. He works at the National Library of Education, Bucharest, Romania.

प्रकाश मनु

धरती का कलाकार

एक घर के द्वार पर उकेरी गयी पशु-पक्षियों की तरह-तरह की आकृतियाँ देखकर तो वे मुग्ध हो उठे। कितनी तरह की बहुरंगी चिड़ियाँ...मोर...तोते...कुत्ते, बिल्ली, गाय, बैल, खरगोश, हाथी और बाघ। सब एक साथ। खास बात यह थी कि सबके चेहरे पर एक जैसी प्रसन्न स्मिति। सब मुस्कुराकर जैसे आने वाली सुबह का स्वागत कर रहे हों।

अपने शिष्य कन्हाई की कला की चारों तरफ तारीफ सुनते हैं तो अवनी बाबू की आँखें चमक उठती हैं, कंठ गद्‌गद्‌-सा, और उन्हें वही दिन याद आ जाता है।

वह दिन, जब एक छोटे-से, सात-आठ बरस के साँवले बालक को उन्होंने सड़क किनारे बैठे, मिट्टी की मूर्तियाँ बनाते देखा था।...और एक अनजाने रास्ते पर चलते उनके पैर किसी जादू से बँध गये थे। वह आज से कोई पच्चीस-तीस बरस पहले सर्दियों का एक दिन था। खासी ठंड थी, पर अवनी बाबू सुबह-सुबह शॉल ओढ़कर घर से निकल पड़े थे। चित्त में एक नयी खोज की जिज्ञासा। आँखों में विचित्र उत्सुकता।

अवनी बाबू रात देर तक कलाभवन में अपने एक चित्र में रंग भरते रहे थे। वह एक विशाल लैंडस्केप था, दूर तक हरे-भरे खेतों और सुनहली फसलों के मुक्त हास्य से गूँजता-सा। चित्र पूरा होने पर ही वे सोये थे। पर नींद आती कैसे? चित्र के रंग कैनवस से उतरकर नींद और सपनों में उतरते रहे। सपनों में सपना।...लेकिन सुबह जल्दी ही उनकी नींद खुल गयी थी। उनकी आदत थी, रोज सुबह वे कलाभवन से निकलकर आसपास के गाँवों में घूमकर आते। इससे उन्हें बहुत ताजगी महसूस होती थी। चित्र बनाने के लिए नये-नये विषय भी सूझते थे। पर आज तो अभी अंधेरा ही था, कि उनके पैर उन्हें कहीं दूर जाने के लिए खींचने लगे। पैर किसी जादू के जोर से चलते जा रहे थे। अचानक उन्हें याद आया, घर से चले छह-सात मील तो जरूर हो गये होंगे। या शायद कुछ ज्यादा ही।...तो क्या अब लौटें?

अवनी बाबू लौटने का विचार कर रहे थे, पर पैर थे कि आगे चलते ही जा रहे थे। एकदम ढीठ। अवनी बाबू की आज्ञा मानने से उन्होंने जैसे इनकार कर दिया था। चलते-चलते एक गाँव के नजदीक आकर वे ठिठक गये। वहां का प्राकृतिक दृश्य तो निराला था ही, गाँव भी बड़ा साफ-सुथरा लग रहा था।

अवनी बाबू दूर तक हरसिंगार, आम, महुआ और जामुन के पेड़ों की कतारें देख रहे थे। उन पेड़ों के पीछे से उगता हुआ सूर्य देखकर उनका मन मुग्ध हो रहा था। सोच रहे थे, "अहा, अगले चित्र में प्रभात का यही दृश्य दिखाया जाये तो कितना अच्छा होगा!"

उन्होंने चलते हुए किसी राहगीर से उस गाँव का नाम पूछा। उस राहगीर ने बताया, "मेघना...! यह मेघना गाँव है, बाबूजी। यहां अधिकतर कुम्हारों के घर हैं।"

गाँव का नाम अवनी बाबू को इतना अच्छा लगा कि वे मन ही मन गुनगुना उठे, 'आहा, रे मेघना...!' ताकि उन्हें यह नाम याद रह जाये।

इसी तरह अपने ही खयालों में डूबे अवनी बाबू आगे बढ़ते जा रहे थे। मेघना गाँव का सजीव चित्र उनकी आँखों में बस गया था और उन्होंने मन ही मन तय कर लिया था कि अगले चित्र में वे मेघना गाँव की यह सुंदर-सी सुबह जरूर दिखाएँगे।

चलते-चलते अवनी बाबू बीच-बीच में गौर से आसपास के दृश्य और मेघना गाँव के लोगों को भी देखने लगते। रुक-रुककर उनके मिट्टी के घर देखते, जिनमें बड़ी सुरुचि, बड़ी सफाई थी। उन्हें बहुत अच्छे ढंग से लीपा गया था और उन पर चूने व गेरू से सुंदर आकृतियाँ भी बनी थीं।

एक घर के द्वार पर उकेरी गयी पशु-पक्षियों की तरह-तरह की आकृतियाँ देखकर तो वे मुग्ध हो उठे। कितनी तरह की बहुरंगी चिड़ियाँ...मोर...तोते...कुत्ते, बिल्ली, गाय, बैल, खरगोश, हाथी और बाघ। सब एक साथ। खास बात यह थी कि सबके चेहरे पर एक जैसी प्रसन्न स्मिति। सब मुस्कुराकर जैसे आने वाली सुबह का स्वागत कर रहे हों।

"वाह, सुंदर...बहुत सुंदर!" उनके मुँह से निकला।

पैर आगे बढ़े, पर मन तो वहीं टिका था। बार-बार मन से उठती पुकार, "सच पूछो तो अवनी बाबू, यह है सच्ची कला। जीवन की कला, पर इसके लिए मिट्टी में रमकर मिट्टी का कलाकार होना जरूरी है। यह क्या तुम्हारे जैसे लोगों के बस की बात है? दुनिया बड़े कलाकार होने के खूब तमगे देती हो, कला का शीर्षपुरुष कहकर सम्मान करती हो, पर धरती का कलाकार होना तो एक अलग ही बात है। उसके लिए बड़ी सहजता चाहिए, मन की सरलता भी...?"

अवनी बाबू जैसे किसी आवेश में थे। और पैर बेखुदी में खुद-ब-खुद आगे बढ़ते जा रहे थे। यों ही चलते-चलते अचानक एक जगह अवनी बाबू चौंक उठे। उन्हें सड़क के किनारे एक छोटा-सा, साँवला बच्चा दिखायी दिया। चेहरे पर चेचक के दाग। होगा मुश्किल से सात-आठ बरस का, लेकिन वह मिट्टी से मूर्तियाँ बना रहा था।

सचमुच मूर्तियाँ!...छोटी-छोटी मूर्तियाँ।

अवनी बाबू को हैरानी हुई, "देखें तो भला, यह बच्चा क्या रचने में इतना लीन है?" वे उस बच्चे के पीठ पीछे आकर चुपचाप

खड़े हो गये। तब उन्हें समझ में आया कि बच्चा एक पनिहारिन की मूर्ति बना रहा है। एक स्त्री सिर पर घड़ा लिये खड़ी है। पास ही कुआँ भी दर्शाया गया था और कुएँ के आसपास पेड़ और झाड़ियाँ भी।

मूर्ति इतनी सुंदर थी कि अवनी बाबू ठगे से रह गये। पनिहारिन का चेहरा, नख-शिख सब एकदम सही बने थे। शरीर भी सुडौल, समानुपाती।...और घड़ा तो ऐसा, जैसे वह सचमुच का ही घड़ा हो। बस, किसी जादू-मंतर से उसे छोटा कर दिया गया हो...।

अवनी बाबू देख रहे थे कि सात बरस के इस नन्हे-से बालक ने अपनी कल्पना से मानो सब कुछ साकार कर दिया। लेकिन तब भी बालक को शायद चैन नहीं था। वह हाथ में मिट्टी लिये कुछ और भी करना चाहता था।

कुछ ही देर में वे सब समझ गये। वह बालक कुएँ की जगत पर झुकी हुई एक स्त्री को भी दर्शाना चाह रहा है, जो कुएँ में बाल्टी लटकाकर रस्सी खींच रही हो। कुएँ के आसपास दो-तीन खाली घड़े भी दर्शाये गये थे और वे इतने सुंदर और गोल-सुडौल थे कि अवनी बाबू मन ही मन 'वाह-वाह' कर उठे। बहुत देर तक अवनी बाबू उस बच्चे के पीछे खड़े-खड़े, उसकी कला को देखते रहे, पर उस बच्चे की तो मानो समाधि ही लग गयी थी। वह अपनी कला में इतना खोया हुआ था कि उसे इसके अलावा कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था।

कुछ देर बाद बच्चे की मूर्ति पूरी हुई और वह दूर हटकर उसे देखने लगा। फिर उसने इधर-उधर देखा, तभी उसका ध्यान अवनी बाबू की ओर गया, जो गौर से उसकी बनायी मिट्टी की मूर्ति को ही देख रहे थे।

अवनी बाबू ने मुस्कुराकर कहा, "सुंदर, बहुत सुंदर...!"

वह लड़का कुछ शरमा-सा गया। अवनी बाबू ने एक नजर उस नन्हे कलाकार की भावमुद्रा पर डाली, फिर उत्सुकता से पूछा, "तुमने ऐसी मूर्तियाँ और भी बनायी हैं?"

"हाँ, हाँ।" कहकर बच्चा दौड़कर पास की एक झोपड़ी में गया और लोहे का एक टूटा-फूटा संदूक उठा लाया। उसमें मिट्टी के बहुत-से खिलौने थे। शेर, हिरण, भालू, बंदर, तोते, मोर, पर उनकी संरचना कुछ अलग ही थी। एक विनोदी पुट लिये। उनमें जैसे एक खेल भी शामिल था। खेल भी, कला भी...! बीच-बीच में उस नन्हे कलाकार की मृदुल हास्य की लकीरें पकड़ में आ जाती थीं।

कुछ गाँव के लड़कों और स्त्री-पुरुषों की छोटी-छोटी सुंदर मूर्तियाँ भी थीं। इनमें एक मूर्ति अवनी बाबू को बहुत पसंद आयी, जिसमें दो पहलवान एक-दूसरे से भिड़े हुए थे। कुश्ती लड़ते हुए पहलवानों की बाँहों की मछलियाँ तक उभर आयी थीं। ...और चेहरे पर अंत तक भिड़ने और न हारने की चुनौती। साथ ही एक विचित्र आब और गर्वीलापन भी, जो धरती से उपजता है। जीने के सीधे-सरल गौरव से आता है।

"ये सब मूर्तियाँ तुमने बनायी हैं?" अवनी बाबू ने पूछा तो बालक की आँखों में चमक आ गयी।

"वाह...!" कहकर अवनी बाबू प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगे। फिर उन्होंने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है बेटे?"

बालक ने कहा, "श्यामल कन्हाई।" साथ ही यह भी बताया कि उसके पिता कुम्हार हैं और बहुत सुंदर, अच्छे-अच्छे घड़े बनाते हैं।

"क्या तुम भी अपने पिता की मदद करते हो?" अवनी बाबू ने पूछा। बालक ने कहा, "हाँ, लेकिन मुझे तो मूर्तियाँ बनाना ज्यादा अच्छा लगता है।"

"तुम स्कूल नहीं जाते?" अवनी बाबू ने पूछा।

"हम गरीब हैं न! पिताजी कहते हैं, फीस के पैसे कहां से देंगे?" कहते-कहते श्यामल कन्हाई की आँखें डबडबा गयीं।

"मैं स्कूल की फीस दे दूँ, तो तुम पढ़ोगे?" अवनी बाबू ने जानना चाहा।

हैरानी से श्यामल कन्हाई की आँखें खुली की खुली रह गयीं। बोला, "आप देंगे फीस के पैसे? आप...क्यों...?"

"ताकि तुम पढ़ो...।"

"मैं पढ़ूँगा।" बच्चे का आत्मविश्वास से भरा जवाब।

"ठीक है...पर तुम्हें रहना भी वहीं होगा। वहां हम तुम्हें कला सिखाएँगे। तुम सारे दिन खूब मूर्तियाँ बनाना।"

सुनकर श्यामल कन्हाई खुश हो गया।

अवनी बाबू नन्हे कलाकार का हाथ पकड़कर उसकी झोपड़ी तक आये। झोपड़ी के एक तरफ साफ-सुथरी खाली जगह थी। वहीं लिपाई-पुताई करके श्यामल कन्हाई के पिता बलदेव ने अपना चाक जमा लिया था। आसपास ढेर सारे छोटे-बड़े घड़े, एक से एक सुंदर सुराहियाँ और गमले पड़े थे। मिट्टी के बने कुछ बड़े ही कलात्मक कटोरे, प्यालियाँ और सकोरे भी। बलदेव के हाथों में सचमुच कला थी।

अवनी बाबू ने जाकर उन्हें नमस्कार किया। बलदेव ने आदर से उन्हें बिठाया। कहा, "आप बड़े आदमी हैं। मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताएँ!"

अवनी बाबू बोले, "आपकी कला की दाद देता हूँ। इतने सुंदर घड़े और सुराहियाँ मैंने आसपास कहीं नहीं देखीं। आपका बेटा भी कलाकार है। मैं चाहता हूँ, मेघना गाँव के इस नन्हे कलाकार का नाम एक दिन पूरे देश में फैले।"

बलदेव कुछ भी समझ नहीं पा रहे थे। बोले, "बताइए, मुझे क्या करना होगा? कौन पिता नहीं चाहता कि उसके बेटे का नाम दूर-दूर तक फैले।"

"मुझे आपका बेटा चाहिए।" इस बार अवनी बाबू ने साफ-साफ कहा। फिर बताया, "यह कलाभवन में मेरे साथ ही रहेगा।

कला सीखेगा और बड़ा होकर देश का जाना-माना कलाकार बनेगा। मेघना गाँव का नाम ऊँचा करेगा।"

इतने में श्यामल कन्हाई की माँ भी वहां आ गयी। बलदेव बोले, "कन्हाई की माँ! ये अवनी बाबू हैं। यहां से तीन कोस आगे जो बड़ी-सी सफेद बिल्डिंग है कलाभवन, उसके प्रधान हैं। बहुत बड़े कलाकार हैं...। ये अपने कन्हाई को ले जाना चाहते हैं।"

"पर मैं तो अपने कन्हाई के बिना एक दिन भी नहीं रह सकती। सोच भी नहीं सकती कि यह मुझसे दूर...!" कहते-कहते श्यामल कन्हाई की माँ की आँखों में सचमुच आँसू छलछला आये।

"कन्हाई आपसे दूर कहाँ जा रहा है? जब आप चाहें इससे आकर मिल सकते हैं। कन्हाई भी बीच-बीच में आकर मिल जाया करेगा। यह तो बस, कला का अभ्यास करने के लिए वहां रहेगा। इसके रहने, खाने-पीने और हर तरह के खर्च का जिम्मा कलाभवन उठाएगा।" अवनी बाबू ने समझाया तो श्यामल कन्हाई के माता-पिता राजी हो गये।

श्यामल कन्हाई ने जल्दी-जल्दी एक थैले में अपने दो-तीन कपड़े रख लिये। थोड़ा-सा और सामान भी। दो-एक छोटी-छोटी मूर्तियाँ भी रख लीं और अवनी बाबू के साथ चल पड़ा।

रास्ते भर अवनी बाबू श्यामल कन्हाई से उसकी रुचियों, रहन-सहन, परिवार और उसकी बनायी मूर्तियों के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछते रहे। कन्हाई को उनसे बात करने में सचमुच आनंद आ रहा था।

"...हाँ, तो गुरुजी, मैंने सबसे पहले वही मिट्टी का तोता बनाया था। दो बरस पहले।...बड़ा ही सुंदर-सा तोता। नटखट-सा। पर फिर लगा कि ये तो अच्छा नहीं बना। ये बड़ा चतुर, चालाक है। सयाना। इसमें भोलापन तो है ही नहीं।...तो मैंने उसे तोड़ा, और फिर बनाया। फिर तोड़ा, फिर बनाया। बस, तोड़ता रहा, बनाता रहा। पता नहीं क्या गड़बड़ थी कि मैं तोता बनाता तो बन जाता कौआ। बड़ा चालाक-सा। घमंडी।...फिर मैंने तोता और कौआ साथ-साथ बनाये तो समझ में आयी गलती कि मैं कहाँ गड़बड़ी कर रहा था...।

"फिर तो मैंने बहुत चिड़ियाँ बनायीं। बहुत सारी प्यारी-प्यारी और रंग-बिरंगी चिड़ियाँ, और मोर भी। बतख भी। हंस भी। वे सब की सब मूर्तियाँ बहुत अच्छी बनीं। फिर मैंने सोचा कि अब मैं कुत्ता और बिल्ली बनाऊँगा। गाय, बैल और घोड़ा बनाऊँगा। खरगोश, हाथी और बाघ बनाऊँगा।...पर औरों से थोड़ा अलग बनाऊँगा। तो फिर गुरु जी, मैंने क्या किया कि..."

कन्हाई को मौका मिला तो वह खुलकर बोलता जा रहा था, बोलता ही जा रहा था। और अवनी बाबू...? वे इन शब्दों को तो सुन ही रहे थे। इन शब्दों के पीछे छिपे उन शब्दों को भी सुन रहे थे, जिन्हें कन्हाई कह तो नहीं पा रहा था, पर कहना जरूर चाहता था।

"यही तो एक कलाकार की कला है। उसके अंतर्मन की कला...!" वे धीरे से बुदबुदाये।

कलाभवन में आकर अवनी बाबू ने कुछ रोज तक श्यामल कन्हाई को अपने साथ ही रखा। उसे रोज थोड़ा-थोड़ा सिखाते और

खुद नये से नये प्रयोग करने के लिए उत्साहित करते। कन्हाई खुश था। उसके लिए एक नयी दुनिया के द्वार खुल गये थे। एक ऐसी दुनिया, जिसकी उसने कभी कल्पना ही नहीं की थी।

कोई एक हफ्ते बाद अवनी बाबू श्यामल कन्हाई की अंगुली पकड़कर उसे कलाभवन के एक वरिष्ठ अध्यापक सोमदेव जी के पास ले गये। कहा, "इस नन्हे कलाकार को एक दिन मैंने सड़क किनारे मूर्तियाँ बनाते देखा था। तो रह नहीं पाया। इसे अपने साथ ही लेता आया।...पर अब यह आपके साथ रहेगा। इसे कला के गुर सिखाइए। थोड़े-थोड़े दिन बाद आकर मैं खुद देखता रहूँगा।"

सोमदेव जी ने एक प्यार भरी नजर श्यामल कन्हाई पर डाली, और उसे अपने साथ रख लिया। अवनी बाबू लौट आये।

ऐसे ही एक-एक कर कुछ रोज गुजरे, पर अवनी बाबू के मन में तो कन्हाई ही बसा था। वे तो हर क्षण यही चिंता करते थे कि उस नन्हे कलाकार ने अब कितना सीख लिया होगा? कैसी मूर्तियाँ बनायी होंगी?

आखिर एक दिन वे सोमदेव जी के कक्ष की ओर चल पड़े। उनसे नन्हे कलाकार की प्रगति के बारे में पूछा। पर अवनी बाबू की बात सुनकर सोमदेव जी ने निराशा से सिर हिला दिया। बोले, "नहीं, उसका मुझे कुछ ठीक नहीं लगता।"

"अरे, यह क्या कह रहे हैं आप?" कहते-कहते अवनी बाबू का चेहरा उतर गया। उन्हें सचमुच सोमदेव जी से ऐसे उत्तर की अपेक्षा नहीं थी। तो क्या सचमुच वे हीरे की परख करने में चूक गये? अवनी बाबू के चेहरे पर बड़ी उदासी थी।

"इस लड़के के साथ सबसे बड़ी मुश्किल यह है आचार्य, कि इसका ध्यान किसी एक जगह टिकता ही नहीं। मैं चित्रकला सिखाता हूँ तो एक-दो चित्र बनाता है, फिर उन्हें छोड़कर मूर्तियाँ बनाने में लग जाता है। मैं मूर्तिकला सिखाता हूँ तो थोड़े समय मूर्ति बनाने का अभ्यास करता है, फिर चित्र बनाने लगता है।...तो मुझे तो लगता है, यह कुछ नहीं सीख पाएगा। मन को किसी एक चीज में टिकाएगा नहीं, तो सीखेगा क्या?"

सोमदेव जी ने परेशान होकर कहा।

अवनी बाबू बड़े ध्यान से सोमदेव जी की बातें सुन रहे थे। एकाएक हँसकर बोले, "अब मैं समझ गया आपकी मुश्किल...!

फिर एक पल रुककर बोले, "आपकी मुश्किल यह है सोमदेव जी कि आप सोचते हैं कि या तो यह चित्रकार बने या फिर मूर्तिकार? लेकिन हो सकता है, यह दोनों ही चीजें सीखे और जितना बड़ा मूर्तिकार बने, उतना ही बड़ा चित्रकार भी।...तो इसे अपने हिसाब से चलाइए मत। कुछ डिक्टेट भी मत कीजिए कि यह करो, यह मत करो! जो यह करता है, करने दीजिए। सिर्फ देखते रहिए कि यह करता क्या है? बस, जहां इसे मुश्किल आये, वहाँ हल्के से इशारा कर दीजिए।" बात सोमदेव जी की समझ में आ गयी थी। वे धीरे-धीरे सिर हिला रहे थे।

कलाभवन में आकर अवनी बाबू ने कुछ रोज तक श्यामल कन्हाई को अपने साथ ही रखा। उसे रोज थोड़ा-थोड़ा सिखाते और खुद नये से नये प्रयोग करने के लिए उत्साहित करते। कन्हाई खुश था। उसके लिए एक नयी दुनिया के द्वार खुल गये थे। एक ऐसी दुनिया, जिसकी उसने कभी कल्पना ही नहीं की थी।

थोड़े दिन बाद अवनी बाबू फिर सोमदेव जी के पास पहुँचे। पूछा, "बताइए, अब कैसा है मेरा शिष्य?"

"बहुत अच्छा!" सोमदेव जी मुस्कुराकर बोले, "सचमुच मूर्तिकला और चित्रकला दोनों में ही यह बेजोड़ है। यह तो अद्भुत बालक है। हमारे कलाभवन में ऐसा कोई दूसरा बच्चा नहीं है।" कहते हुए सोमदेव जी की खुशी छिप नहीं पा रही थी।

सुनकर अवनी बाबू की आँखों में भी चमक आ गयी। अनोखी चमक। बहुत दिनों बाद एक गहरा संतोष उभर आया था उनके चेहरे पर। उन्होंने प्यार से कन्हाई के सिर पर हाथ फेरा और अपने निवास की ओर चल पड़े।

और फिर श्यामल कन्हाई की कला में निखार आया तो आता ही चला गया। उसने एक से एक सुंदर चित्र बनाये, ढेरों मूर्तियाँ भी। बड़ी अद्भुत और लाजवाब! उनमें खुरदुरापन था और सच्चाई। पर जिंदगी का यही सहज खुरदुरापन उसकी ताकत थी। कलाभवन के हर कोने में उसकी कला की छाप नजर आने लगी। अवनी बाबू और सोमदेव जी दोनों पुलकित। यह उनके लिए आनंद की घड़ी थी।

आज श्यामल कन्हाई का नाम सारी दुनिया में है। उस पर मशहूर आर्ट जर्नल्स में लेख छपते हैं। बहुत तारीफ होती है उसकी। पढ़कर अवनी बाबू की आँखों की चमक और बढ़ती ही जाती है।

श्यामल कन्हाई को भी जब कोई बड़ा पुरस्कार या सम्मान मिलता है, तो वह उसे लाकर अपने कलागुरु के चरणों में रख देता है। और कहता है, "गुरुदेव, अभी तो मेरी यात्रा शुरू हुई है। आपके आशीर्वाद से मुझे बड़ा, बहुत बड़ा कलाकार बनना है। मैं चाहता हूँ, मेरी कला में सारी धरती के लोगों के सुख-दुःख और खुशियों के रंग समा जाएं।"

सुनकर अवनी बाबू ऐसे प्रसन्न होते हैं, मानो उन्हें धरती का सबसे बड़ा खजाना मिल गया हो।

फरीदाबाद निवासी लेखक सुप्रसिद्ध कवि-कथाकार और संपादक हैं। बच्चों के अत्यंत प्रिय लेखक श्री मनु लगभग पच्चीस वर्षों तक लोकप्रिय बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे।

परिचर्चा

'संविधान की सुरक्षा किसके हाथ?'

जनवरी अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

नष्ट न हो संविधान का बुनियादी ढांचा

संविधान देश का सर्वोच्च कानून है। शासन के तीनों अंग - विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका संविधान से ही अपनी शक्तियां प्राप्त करते हैं। भारत का संविधान एक अनूठा एवं अनुपम संविधान है। इसमें विश्व के अनेक देशों के संविधान की विशेषताएं समाहित हैं। संविधान की प्रस्तावना इसकी आत्मा है। इसमें भारत के संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी एवं पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता का अवगाहन किया गया है। यह संविधान का बुनियादी ढांचा है।

संविधान में संशोधन एवं परिवर्तन करने की शक्तियां संसद में निहित हैं। अब तक संविधान में 105 संशोधन हो चुके हैं। यहां यह प्रश्न उठता है कि संसद द्वारा संविधान में किस सीमा तक संशोधन किया जा सकता है? सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष यह प्रश्न कई बार उठा है।

अंततः केशवानंद भारती के मामले में इस प्रश्न का पटाक्षेप हुआ। केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य के मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यह व्याख्या दी गयी कि संसद द्वारा संविधान में संशोधन तो किया जा सकता है लेकिन ऐसा कोई संशोधन नहीं किया जा सकता है जिससे इसका बुनियादी ढांचा नष्ट हो जाये।

नागरिकों के मूल अधिकार एवं कर्तव्य, भारत की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता, पंथनिरपेक्षता, संविधान का गणतंत्रात्मक एवं लोकतंत्रात्मक स्वरूप, न्यायपालिका की स्वतंत्रता आदि को संविधान का बुनियादी ढांचा माना गया है। इस बुनियादी ढांचे की रक्षा करते हुए संविधान के मूल्यों को अक्षुण्ण बनाये रखना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। संविधान के अनुच्छेद 51 में भी यह कहा गया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

- डॉ. बसंती लाल बाबेल, लावा सरदारगढ़

संवैधानिक दायरे में हो अधिकारों का प्रयोग

संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का सम्मान करना एवं संवैधानिक परंपराओं को मानना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। पूर्ण निष्ठा से इस कर्त्तव्य के पालन से ही संविधान की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। संवैधानिक रूप से संविधान की सुरक्षा का दायित्व सर्वोच्च न्यायालय का भी है। जरूरी है कि माननीय न्यायालय भी संसद के द्वारा निर्मित कानून की वैधानिकता एवं इसकी गंभीरता को समझें, परखें तथा इसके बाद लागू करें। कमजोर कानून में विसंगति होने पर संविधान कमजोर होता है। संवैधानिक परंपराओं को मानना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। संविधान को किसी भी कीमत पर अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए प्रयुक्त न किया जाये। अपने संवैधानिक कर्त्तव्य को पूर्ण समर्पण भाव से निभाते हुए ही संविधान की सुरक्षा की जा सकती है। कोई भी नागरिक कानून से ऊपर नहीं है। संवैधानिक दायरे में रहकर अपने मौलिक अधिकारों का प्रयोग करने पर ही संविधान की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

-सतीश उपाध्याय, मनेन्द्रगढ़

कर्त्तव्यों का जिम्मेदारीपूर्ण हो निर्वहन

जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए जो तंत्र है, वही लोकतंत्र है। इसी लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए संविधान बनाया गया, जिसमें आम आदमी से लेकर जनप्रतिनिधि तक के अधिकारों व कर्त्तव्यों का वर्णन है। संविधान जिसने राष्ट्रहित में बोलने के लिए अभिव्यक्ति की आजादी दी एवं जिसने राष्ट्र की सेवा कैसे की जाये, उसके लिए कर्त्तव्य भी बताये। प्रश्न यह उठता है कि जब संविधान हमारे हितों और अधिकारों की सुरक्षा करता है तो संविधान की सुरक्षा कौन करेगा? संविधान की रक्षा राष्ट्र के नेताओं और राष्ट्र की जनता दोनों के आंतरिक सहयोग पर निर्भर है। इसलिए नेताओं और जनता को अपने अधिकारों का उपयोग अपने कर्त्तव्यों को ध्यान में रखकर करना चाहिए। संविधान में निहित अधिकारों व शक्तियों का सदुपयोग कर एवं निहित कर्त्तव्यों का जिम्मेदारीपूर्ण निर्वहन करने पर ही हम संविधान एवं देश की सुरक्षा कर सकते हैं।

-राजेश भंसाली, अहमदाबाद

संविधान की सुरक्षा हर नागरिक का दायित्व

हमारी संसदीय प्रणाली के सुचारु संचालन के लिए लोकतंत्र की तीनों शाखाओं-न्यायपालिका, विधायिका और

कार्यपालिका को अपनी स्वतंत्रता के प्रति जागरूक रहते हुए आपसी समन्वय से कार्य करना चाहिए। संविधान में संशोधन तभी हो जब कोई विकल्प न बचे। संवैधानिक मूल्यों को फिर से प्रतिष्ठापित करने के लिए हमें बंधुता बढ़ाने वाली भावना का विकास करना होगा। संविधान की आड़ में कट्टरवादिता भी नहीं होनी चाहिए। संविधान के अनुच्छेद 51 ए में हमारे मूलभूत कर्त्तव्यों का वर्णन है जिनका हम अक्षरशः पालन करें तथा नयी पीढ़ी को भी इसके लिए प्रेरित करें। विद्यालयों में भी इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने का प्रयास सरकार को करना चाहिए। संविधान वह मूलभूत विधि है जिस पर देश के अन्य सभी कानून आधारित हैं, अतः इसकी रक्षा करना हर नागरिक का दायित्व है।

-सुंदरलाल छाजेड़, गंगाशहर

स्वार्थ को न मानें सर्वोपरि

आज ऐसा लगता है जैसे संविधान के चारों ही अंग अपने-अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किसी न किसी रूप में संविधान को हानि पहुँचाने में लगे हैं। केन्द्र सरकार अपना अस्तित्व स्थायी रखने तथा राज्यों में भी अपने दल की सरकार बनाने हेतु असंवैधानिक कार्य करने से नहीं चूकती है। सी.आई.डी., सी.बी.आई., चुनाव आयोग आदि के सर्वोच्च पद पर उन व्यक्तियों को नियुक्त करती है जो उस दल विशेष की विचारधारा से जुड़े होते हैं। वहीं, संविधान की भावना के अनुरूप कार्य करने वाली संस्थाओं के विरुद्ध पुलिस अनुचित बल प्रयोग करती है। ऐसे में केन्द्र सरकार यदि निष्पक्ष होकर संविधान के निर्देशों व भावना के अनुसार कार्य करे तो संविधान सुरक्षित रह सकता है।

-विजयराज सुराणा, गाजियाबाद

आमजन को मिले संविधान की जानकारी

हमारा संविधान सिर्फ एक कागजी किताब या कानूनी दस्तावेज ही नहीं बल्कि हम सब भारतीयों के जीवन को बनाने, बचाने तथा राष्ट्र की संप्रभुता व एकता को कायम रखने का दस्तावेज है और राष्ट्र की आत्मा है। इसलिए जरूरी है कि शासन, स्वायत्त संस्थाओं, शैक्षणिक संस्थाओं, अभिभाषक संघों, मीडिया संस्थानों, राजनीतिक दलों आदि के माध्यम से आम लोगों तक संविधान के प्रावधानों, सरकार व नागरिकों के कर्त्तव्यों और अधिकारों की जानकारी पहुँचायी जानी चाहिए। इससे संविधान के प्रति लोगों की निष्ठा और समर्पण भाव दृढ़ हो सकेगा, तभी हम एक उन्नत, संगठित और मजबूत राष्ट्र बन सकेंगे।

- वीरेंद्र व्यास, पेटलावद

संविधान की सुरक्षा के लिए सजग रहें नागरिक

लोकतंत्र में असली शक्ति जनता के हाथों में होती है, इसलिए संविधान की सुरक्षा का मुख्य दायित्व जनता का ही है। यदि जनता सजग, सावधान, जागरूक व राष्ट्रीय हित की भावना से प्रेरित है तो संविधान की सुरक्षा सुनिश्चित है, क्योंकि विधायिका का निर्वाचन करने वाली जनशक्ति ही है। अतः देश के नागरिकों को ऐसे जनप्रतिनिधि चुनने चाहिए जो कर्त्तव्यपरायणता, देशभक्ति व राष्ट्रहित की भावना से परिपूर्ण हों तथा संविधान के प्रति समर्पित हों। यद्यपि संविधान की सुरक्षा के लिए विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका का सशक्त, मजबूत और जागरूक होना अनिवार्य है, फिर भी नागरिकों का यह विशेष कर्त्तव्य है कि वे संविधान की सुरक्षा के प्रति सजग रहें।

-सुभाष जैन, टोहाना

क्षेत्रीयता की भावना से ऊपर उठना होगा

हमारी संविधान सभा ने बहुत सोच-विचार करके हमारे संविधान को बनाया है। यद्यपि हमारे देश को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष हो गये हैं, किन्तु दुःख इस बात का है कि हम अपने देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना नहीं जगा पाये। आज भी हम बिहारी, पंजाबी, बंगाली के खेमों में बंटे हैं। शायद ही क्षेत्रीयता की भावना से उठकर स्वयं को कोई भारतीय कह पाता है। अगर हमारी भाषा एक होती तो शायद हम पूरे देश को एक सूत्र में बांध पाते। हम अधिकार की बात तो करते हैं किंतु कर्त्तव्यों का पालन करने में चूक जाते हैं। ये कुछ बिंदु हैं जिन पर पुनर्विचार एवं गंभीर प्रयास करने और उन्हें लागू करने की आवश्यकता है तभी हम संविधान की मूल भावना के साथ लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत कर पाएंगे।

-सुधा आदेश, लखनऊ

लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाना होगा

संविधान निर्माताओं ने जिन उच्च आदर्शों की कल्पना की थी, राष्ट्र उसके विपरीत चला गया। लूट-मार, बलात्कार, सामाजिक शोषण, भ्रष्टाचार, घूस, धन-लोलुपता ये हमारे समाज में घुन की तरह लिपट चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों में भौतिक स्तर पर काफी कुछ बदला है, पर मानसिक और आध्यात्मिक तौर पर उत्थान के लिए प्रयास न के बराबर हुए हैं। गाँवों से शहर की ओर पलायन, संयुक्त परिवारों का विघटन, संस्कृति से छेड़छाड़, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण हमारे गणतांत्रिक मूल्यों का क्षरण कर रही हैं। हम सामान्य लोकतांत्रिक व्यवहार भी नहीं सीख पाये हैं। पारिवारिक स्तर पर अगर लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान न होगा तो सामाजिक या राष्ट्रीय स्तर पर इन मूल्यों की अवधारणा बहुत दूर की बात है। इसलिए हमें जीवन के हर स्तर पर लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाना होगा।

-रतन कुमार अगरवाला, गुवाहाटी

जनता का जागरूक होना है जरूरी

यदि कार्यपालिका सही तरीके से कार्य न कर रही हो तो

न्यायपालिका को उसके विरुद्ध कार्रवाई करने का अधिकार है। संविधान की सुरक्षा के लिए सशक्त व जागरूक प्रतिपक्ष का होना भी अनिवार्य है अन्यथा सत्तापक्ष तानाशाह की तरह कार्य करने का प्रयास कर सकता है। लोकतंत्र में वास्तविक शक्ति तो जनता के हाथों में होती है। अतः जनता का जागरूक होना अनिवार्य है। कैसी विडंबना है कि चुनावों में एक तिहाई से अधिक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग ही नहीं करते। अतः जनता अपने अधिकारों के साथ ही कर्त्तव्यों से अच्छी तरह अवगत हो तथा उसका सदुपयोग करे, तभी संविधान सुरक्षित रहेगा।

-सृष्टि जैन, टोहाना

सबके हित की बात हो

देश आज एक ओर आजादी का 75वां अमृत महोत्सव मना रहा है, वहीं संविधान में वर्णित नियमों की अनदेखी हो रही है। आम आदमी आज भी शिक्षा, चिकित्सा, पानी, बिजली, रोटी, कपड़ा व मकान को तरस रहा है। कामगारों को मेहनत के अनुरूप वेतन नहीं मिल रहा है। ऐसे में हमारे जनप्रतिनिधियों को चाहिए कि स्वहित के स्थान पर सबके हित को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाएं और उन योजनाओं का लाभ गाँव-ढाणी के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक पहुँचे, तभी संविधान सुरक्षित रह पाएगा।

-सुनील कुमार माथुर, जोधपुर

जानकारी होगी तब तो करेंगे संविधान की सुरक्षा?

किसी देश का संविधान ही उस देश की दशा और दिशा तय करता है। किसी भी देश की प्रगति उस देश के संविधान पर आधारित होती है कि उस संविधान में नागरिकों के लिए स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व के सिद्धांत का समावेश है या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति संविधान की सुरक्षा कर सकता है बशर्ते उसे संविधान के बारे में जानकारी हो। जिस प्रकार अणुव्रत आंदोलन द्वारा जन-जागरण के माध्यम से लोगों को नैतिकता के मार्ग पर चलने के बारे में बताया जा रहा है, उसी तरह संविधान के बारे में आमजन को जागरूक करने के लिए अभियान चलाये जाएं क्योंकि मैं जिस परिवेश से आता हूँ, वहां पर लोगों को पता ही नहीं कि संविधान क्या है? इसके साथ ही विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी संविधान से जुड़ी जानकारी शामिल की जानी चाहिए।

-सुरेश मेघवाल, मोरखाना

सोच-समझकर करना होगा मत का प्रयोग

हमारे संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि हम अपने लिए एक संप्रभु लोकतांत्रिक स्वराज्य की स्थापना का संकल्प लेते हैं। संविधान की सुरक्षा का दायित्व जनता के हाथों में है, परंतु विडंबना यह है कि जनता की इच्छा से शासन चलाना तो दूर, हम संविधान में अपने नागरिकों को दिये गये अधिकारों की रक्षा करने में भी अभी समर्थ नहीं हो पाये। देश को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष हो गये किंतु आज भी आम आदमी को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए दिन-रात संघर्ष करना पड़ रहा है।

ऐसे में जनता को जनप्रतिनिधियों के चुनाव के समय अपने मत का प्रयोग बहुत सोच-समझकर करना होगा। वह संविधान के प्रतिकूल आचरण करने वालों का बहिष्कार करे। अपने मूल अधिकारों की प्राप्ति की कामना के साथ अपने कर्त्तव्यों को सत्यनिष्ठा से संपादित करना होगा, जिससे देश में सुशासन की स्थापना हो सके।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

पर्यावरण संरक्षण एवं हमारा दायित्व

पर्यावरण हमारे जीवन का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग है। इसे शुद्ध बनाये रखना हमारा दायित्व है, लेकिन इस संदर्भ में चुनौतियां भी कम नहीं हैं। बावजूद इसके पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ सकारात्मक विचार तो हर जागरूक नागरिक के मन में उठते हैं। हमारे यही विचार पर्यावरण सरंक्षण के कार्यों में तेजी ला सकते हैं।

"पर्यावरण संरक्षण एवं हमारा दायित्व" इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें **15 अप्रैल 2023** तक **9116634512** पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें। चयनित विचार **मई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

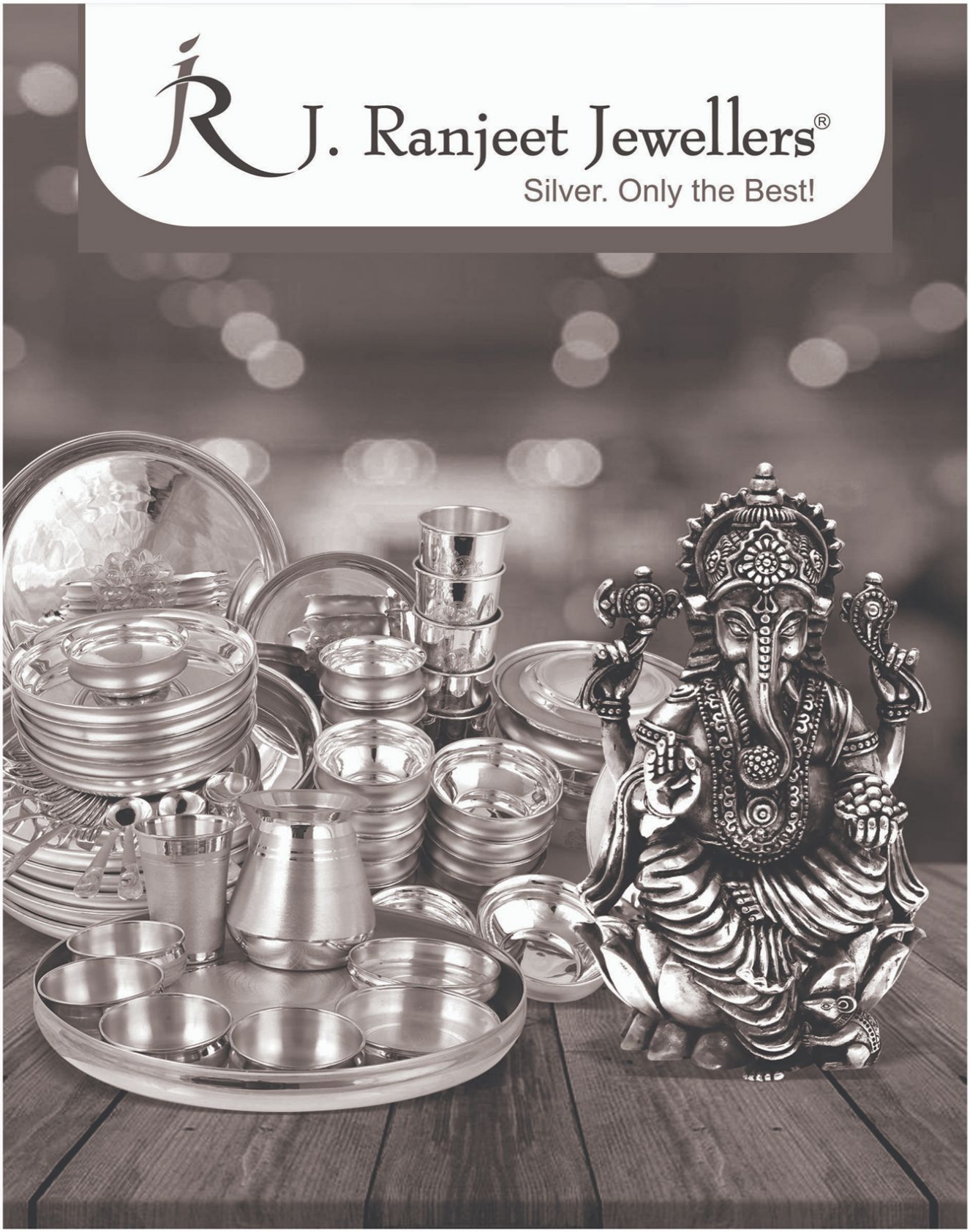

@No.54, NSC Bose Road, Sowcarpet Chennai - 600079. 044-43546516

+919940036516. Sales@jranjeetjewellers.com, Jrsilverchennai

Silver | Silverware | Silver Anklets | Silver Jewellery | Silver Coins | Silver Gifts | Silver Home Decor | Silver Furniture

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 27 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

डॉ. महावीर राज गेलड़ा
देश-विदेश में फहराया अणुव्रत का परचम

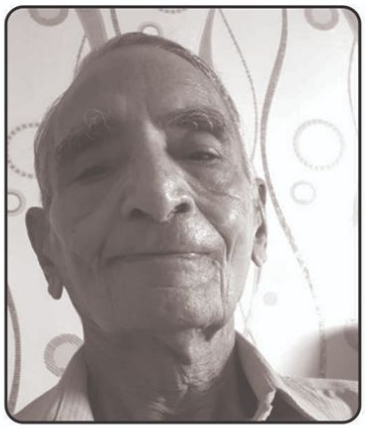

महावीर राज गेलड़ा का जन्म 20 मार्च 1933 को जोधपुर में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री हेमराज गेलड़ा और माताजी का नाम श्रीमती उमराव कुंवर था। ये रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर की शिक्षा और पीएच.डी. की उपाधि ग्रहण कर कॉलेज शिक्षा विभाग से जुड़े। अंतरराष्ट्रीय शाकाहार सम्मेलन में पहली बार प्रतिनिधित्व करने का जब आपको अवसर प्राप्त हुआ, उस समय आपकी आयु मात्र 25 वर्ष की थी।

कॉलेज शिक्षा, राजस्थान के निदेशक के पद पर रहते आपने स्नातक स्तर पर 'अणुव्रत' को एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने में योगदान दिया। 37 वर्षों तक राजस्थान में कॉलेज शिक्षा विभाग से सम्बद्धता के प्रलंब-काल में आप अनेक सम्मानित पदों पर मनोनीत हुए तथा नैतिक एवं प्रामाणिक जीवन जीकर आदर्शों का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। आप जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति भी रहे।

डॉ. महावीर राज गेलड़ा ने एक कुशल एवं प्रभावी वक्ता के रूप में अणुव्रत आचार संहिता एवं अणुव्रत के उद्देश्यों से जन-जन को अवगत कराने में विशेष योगदान दिया। बुद्धिजीवी वर्ग को अणुव्रत से जोड़ने में आपने समन्वय-सेतु का काम किया।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन में आप सन् 1953 से सक्रिय रहे। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व की अवधारणा को प्रसारित करने में डॉ. गेलड़ा के चिन्तन, लेखन एवं वक्तव्य ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। न केवल भारत में अपितु जर्मनी, मॉरीशस, काठमांडू, लंदन के सामाजिक क्षेत्रों में भी अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में योगदान किया। जापान और चीन के विश्वविद्यालयों में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में आपने अध्यक्षता की। सन् 1955 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् के साथ आपकी वार्ता एवं सन् 1990 में इटली में पॉप जॉन के सान्निध्य में आयोजित प्रार्थना सभा के समय अणुव्रत संबंधी आपकी प्रस्तुति विशेष उल्लेखनीय रही। देश-विदेश में आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

डॉ. गेलड़ा को जब अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया, उस समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा- "मैं महावीर राज को जब यह छोटा था, तबसे देख रहा हूँ। इस व्यक्ति ने जो कार्य किया है, सचमुच श्रद्धा के साथ कार्य किया है। इन्होंने जो कार्य किया है, उसका मूल्यांकन बड़ी बात है। मैं चाहता हूँ कि आगम और विज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन का जो महत्वपूर्ण काम वर्तमान में ये कर रहे हैं, उसे आगे बढ़ाते रहें और दूसरों को तैयार करें।"

प्रसन्न-वदन, मितभाषी, सहृदय और संवेदनशील होने के कारण डॉ. महावीर राज गेलड़ा ने अपने मृदु व्यवहार की अमिट छाप सर्वत्र छोड़ी है। आपने सिद्धांतों के धरातल पर व्यवहार को उतारा है। आपकी बहुमुखी प्रतिभा ने समाज को प्रेरित किया है।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

गौरवशाली अतीत के झरोखे से...

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"।

75
1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

आचार्य तुलसी राष्ट्रपति भवन में

आचार्य श्री तुलसी के दिल्ली प्रवास के दौरान देश के मूर्धन्य साहित्यकार, पत्रकार, उद्योगपति, राजनेता एवं वरिष्ठ नागरिक निरंतर संपर्क में आते रहे। इसी क्रम में महामहिम राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने आचार्य श्री से राष्ट्रपति भवन आने के लिए अनुरोध किया। पंद्रह-सोलह वर्ष पहले जब वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे, तब पहली बार आचार्य श्री से मिले थे। उस समय आचार्य श्री का चातुर्मासिक प्रवास कानपुर में था। एक राज्यपाल की हैसियत से उन्होंने अणुव्रत के कार्यक्रमों में काफी रस लिया था।

5 जुलाई 1974 को प्रातः कुछ साधुओं के साथ आचार्य श्री तुलसी राष्ट्रपति भवन पहुँचे। राष्ट्रपति महोदय ने अत्यंत विनम्रता के साथ भावविह्वल मुद्रा में अभिवादन किया। वे बोले- "आप हमारे देश के महान सन्त-पुरुष हैं। आपने अणुव्रत के माध्यम से प्रामाणिकता, नैतिकता, मानवीय एकता और सचाई का महान संदेश दिया है। आज की विषम स्थिति में सत्य का लोप हो रहा है। मानव-मानव में घृणा और द्वेष फैल रहा है। सब जगह स्वार्थ सर्वोपरि बन रहा है। आज से तीस वर्ष पहले धर्म और नैतिकता की दृष्टि से हमारे देश का स्थान कुछ ऊँचा था, किंतु अब वह वैसा नहीं रहा है। ऐसी स्थिति में आप ही जनता के सामने कोई आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं, ताकि वह उस पर चल सके। मैं जहां भी रहूँगा, आपके महान कार्य के प्रति सद्भाव और सहयोग बनाये रखूँगा।"

राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने आचार्य श्री से कहा, "आज की विषम स्थिति में सत्य का लोप हो रहा है। मानव-मानव में घृणा और द्वेष फैल रहा है। स्वार्थ सर्वोपरि बन रहा है। ऐसी स्थिति में आप ही जनता के सामने कोई आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं, ताकि वह उस पर चल सके।"

राष्ट्रपति महोदय ने बिना किसी औपचारिकता के अणुव्रत मिशन के बारे में जो विश्वास व्यक्त किया, उस विषय में अपना चिन्तन स्पष्ट करते हुए आचार्य श्री ने कहा- "हमें प्रसन्नता है कि आज के इस नाजुक समय में भी हम अपने कर्त्तव्य के नाते कुछ कार्य कर रहे हैं। देश में नैतिकता का ह्रास हुआ, यह चिंता का विषय है। किंतु इससे भी अधिक चिंता का विषय यह है कि नैतिकता के प्रति लोगों की आस्था घट रही है। नैतिकता के प्रति आस्था बनाये रखने वाले साधु लोग होते हैं, किंतु आज तो बहुत सारे तथाकथित साधु भी विलासिता के मार्ग पर अग्रसर होने लगे हैं।"

आचार्य श्री के कथन के साथ अपनी सहमति व्यक्त करते हुए राष्ट्रपतिजी बोले- "आपने बहुत ठीक कहा। ऐसे साधु न तो लोगों को सही दिशा दे सकते हैं और न ही उनका कोई भला कर सकते हैं। इसलिए आपसे निवेदन है कि आप ही कोई मार्ग दिखाएं। आप उनमें से कुछ चुने हुए साधुओं को साथ लें और लोगों को सही दिशा प्रदान करें।"

राष्ट्रपति महोदय की आकांक्षा के अनुरूप चल रहे उपक्रम का हवाला देते हुए आचार्य श्री ने कहा- "इस प्रकार का प्रयत्न हो रहा है। अभी हाल में ही दिल्ली में सन्त-सेवक-समागम का कार्यक्रम आयोजित हुआ। उस अवसर पर समान उद्देश्यों वाले व्यक्तियों और संगठनों के साथ मिलकर काम करने की योजना बनी है, ताकि अहिंसक शक्ति की पुनः प्रतिष्ठा हो सके। राष्ट्रपतिजी! मैंने सुना है कि आपका पंचवर्षीय कार्यकाल काफी कठिनाइयों से भरा हुआ रहा है। आपने अनेक उतार-चढ़ाव पार किये हैं। यह सब कैसे हुआ ?"

राष्ट्रपति महोदय भाव विभोर होकर बोले-"आचार्यजी ! मैं अस्सी वर्ष का हो रहा हूँ। मैंने इस बीच उन सारी स्थितियों को सहन किया है, जिन्हें मानवता के नाते सहना जरूरी था। मैंने मानवीय भावनाओं से प्रेरित होकर गरीबों की सेवा में अपने को लगाने का प्रयत्न किया। मैंने अपने जीवन में पद की लालसा कभी नहीं की, अपितु जब जनता ने चाहा और पद ने खींचा, तभी मैंने उसे ग्रहण किया। मैं तो सबसे सीखने का प्रयत्न करता हूँ। महात्मा गांधी से मैंने दो बातें सीखीं। उनमें पहली बात त्याग और समर्पण की है। त्याग किये बिना कोई भी आदमी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता। दूसरी बात सामान्य जनता के पक्ष में रहने की है। मैं सामान्य जनता की आवाज सुनने का प्रयत्न करता हूँ। मुझे किसी व्यक्ति विशेष के प्रति घृणा या द्वेष नहीं है। आप सब प्रकार की मानवीय दुर्बलताओं से ऊपर उठे हुए हैं, इसलिए मैं आपको महान मानता हूँ।''

आचार्य श्री ने अंतरराष्ट्रीय स्थिति के संबंध में राष्ट्रपतिजी के विचार जानने की इच्छा व्यक्त की तो वे बोले-"आचार्यजी! अंतरराष्ट्रीय स्थिति बहुत बुरी है। विदेशों में तो व्यक्ति-व्यक्ति के बीच घृणा और द्वेष फैल रहा है। भौतिकवाद आवश्यकता से अधिक बढ़ रहा है। नैतिकता का नामो-निशान मिट रहा है। ऐसी हालत में उसे अच्छी कैसे कहा जा सकता है?"

राष्ट्रपति अपने राष्ट्र के प्रथम व्यक्ति होते हैं। वे अपने राष्ट्र के साथ पूरे विश्व की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों से भी परिचित रहते हैं। आचार्य श्री ने उनसे भारत तथा अन्य राष्ट्रों के आर्थिक संकट की स्थिति के बारे में जिज्ञासा की तो वे बोले-"दूसरे देशों में आर्थिक संकट की स्थिति उतनी दयनीय नहीं है, जितनी भारत में है। भारत में भी वह अधिक इसलिए है कि यहां के लोग नौकरी और सरकारी तंत्र के पीछे अधिक दौड़ते हैं। यदि वे ऐसा न करके गाँवों में छोटे-छोटे उद्योगों का विकास करें तो उनकी आर्थिक स्थिति काफी सुधर सकती है। युवकों को गाँवों में भेज कर यदि प्रेरित किया जाये तो खेती, अंबर चरखा, मधुमक्खी पालन, सब्जी उत्पादन आदि अनेक उद्योग विकसित किये जा सकते हैं। गुजरात में आनंद नामक एक स्थान है। वहां के लोगों ने सामूहिक रूप से डेयरी के उद्योग का विकास किया है। क्रमशः वह उद्योग इतना विकसित हो गया कि आज बंबई जैसे महानगर की आवश्यकता को भी काफी अंशों में पूरा करता है। इस प्रकार के उद्योग से जनता को काम मिलने के साथ-साथ उसके जीवन में खुशहाली भी आ गयी। इस प्रकार के उद्योग यदि सब जगह विकसित किये जाएं तो निश्चित ही आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। आजादी के पच्चीस वर्ष बीत जाने पर भी यदि हम जनता को दो समय का भोजन और सिर छिपाने के लिए झोपड़ी भी नहीं दे सकें तो हमारे लिए इससे अधिक असफलता और क्या होगी? यदि जनता को इतना भी मयस्सर नहीं हो सका तो फिर आजादी का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।"

"अहिंसा का स्वरूप है आत्मतुला। आत्मतुला यानी दूसरों को अपने अनुभवों और संवेदनों से तौलना। समता अहिंसा है। विषमता हिंसा है। जातीय और आर्थिक विषमता का होना अहिंसा का अतिक्रमण है। समूची मनुष्य जाति यदि सही अर्थ में शान्ति की इच्छुक है तो उसे समता का मार्ग अपनाना होगा।

संसद भवन में आचार्य तुलसी

19 दिसंबर की दोपहर साढ़े बारह बजे संसद भवन में संसद सदस्यों के बीच एक विशेष कार्यक्रम आयोजित था। आचार्य श्री तुलसी अणुव्रत विहार से विहार कर समय से संसद भवन पहुँच गये। मुनि नथमलजी ने अणुव्रत के कार्यक्रमों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री गुरुदयालसिंह ढिल्लो ने बताया कि आचार्य श्री के आगमन से संसद गौरवान्वित हुई है। पार्लियामेण्ट में किसी जैन आचार्य के प्रवचन का वह पहला ही प्रसंग था, इसलिए सांसदों में विशेष उत्सुकता थी। यद्यपि अनेक सांसद व्यक्तिगत रूप में आचार्य श्री से परिचित थे, फिर भी सैकड़ों सांसदों को एक साथ संबोधित करने का वह अवसर अपने आप में महत्वपूर्ण था। आचार्य श्री के वक्तव्य का सारांश यहां प्रस्तुत है-

"अहिंसा का स्वरूप है आत्मतुला। आत्मतुला यानी दूसरों को अपने अनुभवों और संवेदनों से तौलना। समता अहिंसा है। विषमता हिंसा है। जातीय और आर्थिक विषमता का होना अहिंसा का अतिक्रमण है। अहिंसा का अतिक्रमण होना शक्ति का अतिक्रमण है। समूची मनुष्य जाति अभी निर्णय नहीं कर पायी है कि वह शान्ति चाहती है या और कुछ। यदि सही अर्थ में वह शान्ति की इच्छुक है तो उसे समता का मार्ग अपनाना होगा। इसके बिना शान्ति का कोई विकल्प नहीं। मैं विश्व शान्ति और व्यक्ति की शान्ति को अलग-अलग नहीं देखता हूँ। व्यक्ति-व्यक्ति का जीवन रूपांतरित हो, उसमें करुणा और समता का भाव जागे, आक्रामक आकांक्षाएं मिटें, तभी व्यक्तिगत शान्ति संभव है।

व्यक्तिगत शान्ति ही विश्वशान्ति की संभावना को उजागर करती है। अणुव्रत व्यक्ति-जीवन के रूपांतरण का उद्‌बोधन है। मैं मानता हूँ कि विचार-परिवर्तन के बिना कोई भी परिवर्तन होता है, वह व्यक्ति को शान्ति की दिशा में नहीं ले जाता। व्यक्ति के हृदय-परिवर्तन की गति धीमी होती है, इसलिए आज के द्रुतगामी युग में उस ओर हमारा ध्यान कम जाता है, पर क्या आप इस तथ्य को अस्वीकार करेंगे कि कुछ व्यक्तियों के चरित्र की विशिष्टता समाज और राष्ट्र के चरित्र की प्रेरक बनती है। जिन्होंने गांधी युग को देखा

है, उन्हें इसका मूल्यांकन करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं समस्या के पत्तों को तोड़ने में विश्वास नहीं करता। उसके मूल को पकड़ने में विश्वास करता हूँ। मूल तक पहुँचने पर ऐसा अनुभव हो रहा है कि समस्या के समाधान के लिए अपेक्षित त्याग, संयम और नि:स्वार्थ भाव नहीं है। समस्या के समाधान का राजनीतिक हल ही एकमात्र हल है, ऐसा मान लिया गया है। उसके मानवीय और आध्यात्मिक पहलू पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। यह चिन्तनीय मनोदशा है। मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूँ। राजनीति मेरा कार्यक्षेत्र नहीं है। अत: मैं राजनीति में हस्तक्षेप करना नहीं चाहता, पर मानवीय पक्ष की दृष्टि से मैं यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि वर्तमान संघर्षों को एक-दूसरे पर दोषारोपण करके नहीं मिटाया जा सकता। जनता और राज्य के समन्वयात्मक एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण से ही मिटाया जा सकता है। भारत का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरातल बहुत उन्नत है। उस धरातल पर रहकर हमने अहिंसा को गति दी और जीवन के हर क्षेत्र में उसका प्रयोग किया तो मुझे विश्वास है कि विश्व शान्ति के क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण योगदान हो सकेगा और विश्व सरकार जैसे दूरगामी संकल्प की दिशा में भी एक कदम आगे बढ़ जाएगा।"

पार्लियामेण्ट की गर्मागर्म बहस में संभागी बनने वाले सांसदों ने जिस शान्ति और शालीनता के साथ आचार्य श्री को सुना, उन्हें देखकर कल्पना भी नहीं की जा सकती है कि वे लोग कभी आपे से भी बाहर हो सकते हैं। संसद भवन का वह विशाल कक्ष आध्यात्मिक चर्चा का कक्ष बन गया। सांसद श्री राजाराम शास्त्री ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

युवाचार्य महाप्रज्ञ ने कहा- "आज हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम अतीत से कटते जा रहे हैं। अतीत से सम्पर्क का सबसे बड़ा माध्यम होता है भाषा। हमने हिन्दुस्तान की भाषाओं के साथ बड़ा अन्याय किया है। उनकी बहुत उपेक्षा की है।"

संसद भवन में गोष्ठी

16 सितम्बर को संसद भवन में अणुव्रत संसदीय मंच की ओर से आचार्य श्री तुलसी की सन्निधि में संसद सदस्यों की गोष्ठी का आयोजन किया गया। राज्यसभा के उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल यादव तथा लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने आचार्य श्री का स्वागत किया। गोष्ठी में लगभग पचास सांसद उपस्थित थे। सांसदों को बोलने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा- "आज हम बोलने के लिए नहीं, सुनने के लिए आये हैं।"

युवाचार्य महाप्रज्ञ ने गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा- "आज हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम अतीत से कटते जा रहे हैं। हम बहुत समृद्ध हैं, वैभवशाली हैं, पर अपनी सम्पदा से कट गये हैं। कटने का कारण भी है। अतीत से सम्पर्क का सबसे बड़ा माध्यम होता है भाषा। हमने हिन्दुस्तान की भाषाओं के साथ बड़ा अन्याय किया है। उनकी बहुत उपेक्षा की है। कई बार तो मुझे लगता है कि जिन सिद्धान्तों का आज हम आयात कर रहे हैं, वे बहुत पहले से ही हमारे यहां विद्यमान हैं। कठिनाई यह है कि हमारा उनसे सम्पर्क विच्छिन्न हो चुका है। हम आयात करने में ज्यादा रस लेते हैं।"

आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन में कहा- "जनप्रतिनिधियों के साथ आज एक जनप्रतिनिधि मिल रहा है। संसद सदस्य जनता के प्रतिनिधि हैं। मैं भी जनता का प्रतिनिधि हूँ। आप लोग जनता का प्रतिनिधित्व संसद में करते हैं और मैं घूम-घूम कर करता हूँ। मैं अपनी पदयात्राओं के दौरान छोटे-बड़े सभी क्षेत्रों में जाता हूँ। जिन क्षेत्रों में जाता हूँ, वहां की जनता से मिलता हूँ। उसके सुख-दु:ख की कहानी सुनता हूँ और आँखों से देखता हूँ। अपनी ओर से मैं उसे आश्वस्त करने का प्रयत्न करता हूँ। इस मायने में मैं भी अपने आपको जनता का प्रतिनिधि मानता हूँ।"

सांसद गोष्ठी की चर्चा करते हुए आचार्य श्री ने कहा- "इन वर्षों में जितनी बार दिल्ली आना हुआ, संसद सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करने का मौका मिला। उसी परम्परा का निर्वाह आज हो रहा है। मेरे मन में एक बात रहती है कि संसद सदस्यों के मध्य बैठकर प्रवचन नहीं, घंटों तक चर्चा करूं। अपने दिल की बात आप लोगों से कहूं और आप लोगों के दिल की बात स्वयं सुनूं। यदि ऐसा प्रयत्न हो तो मैं समझता हूँ कि देश की प्रगति के लिए काफी काम हो सकता है।"

सांसदों का दायित्व

आचार्य श्री ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- "मैं संसद को देश की सर्वोच्च संस्था मानता हूँ। इससे बड़ी और कोई संस्था हो नहीं सकती। सांसद देश के मान्यता प्राप्त व्यक्ति होते हैं। सांसद जनता के द्वारा चुनकर यहां आते हैं। सरकार से सुख-सुविधा प्राप्त करना बहुत गौण बात है। प्रमुख काम है देश के सामने आने वाली समस्याओं का डटकर मुकाबला करना। यह काम केवल भाषणबाजी से होने वाला नहीं है, इसके लिए खपने और तपने की जरूरत है। आज देश में बहुत बड़ा दुर्भिक्ष है नैतिकता का। सबसे बड़ा अकाल है नैतिक मूल्यों का। प्राकृतिक अकाल का मुकाबला बाहर से अनाज आदि मँगाकर किया जा सकता है, किन्तु नैतिक मूल्यों के दुर्भिक्ष को कैसे मिटाया जा सकता है? इस एक समस्या का समाधान हो जाये तो अन्य समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाएगा। मैं लगभग पैंतीस वर्षों से अणुव्रत के माध्यम से नैतिक जागरण का काम कर रहा हूँ। आप लोग भी यह काम करने के लिए कटिबद्ध हो जाएं तो एक सीमा तक इस संकट को दूर किया जा सकता है।"

आचार्य श्री ने कहा - "प्रमुख काम है देश के सामने आने वाली समस्याओं का डटकर मुकाबला करना। यह काम केवल भाषणबाजी से होने वाला नहीं है, इसके लिए खपने और तपने की जरूरत है। आज देश में बहुत बड़ा दुर्भिक्ष है नैतिकता का। सबसे बड़ा अकाल है नैतिक मूल्यों का।"

सांसदों की प्राथमिकता का निर्धारण

सांसदों के लिए राष्ट्र प्रमुख हो और पार्टी उसके बाद हो तो राष्ट्र का हित साधा जा सकता है। इस बात पर बल देते हुए आचार्य श्री ने कहा- "सांसदों का चिन्तन होना चाहिए कि वे सबसे पहले मनुष्य हैं, उसके बाद भारतीय हैं, उसके बाद राजनीतिज्ञ हैं और उसके बाद किसी दल के सदस्य हैं। किन्तु आज उल्टा हो रहा है। चौथी बात को सबसे पहले सोचा जाता है। यह मुझे बहुत अखरता है। दलगत राजनीति को सबसे ऊपर मानना उचित कैसे होगा? इसलिए मेरा विनम्र सुझाव है कि आप पहले नम्बर पर स्वयं को मनुष्य मानें। दूसरे नम्बर पर भारतीय मानें, तीसरे नम्बर पर राजनीतिज्ञ मानें और चौथे नम्बर पर जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी या किसी अन्य दल का सदस्य मानें। यदि सांसदों का ऐसा चिन्तन हो जाता है तो उनका स्वयं का भला होगा और राष्ट्र का भी भला होगा।"

प्रथम अणुव्रत पुरस्कार

जय निर्वाण शताब्दी के अवसर पर निर्णय लिया गया कि जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा प्रतिवर्ष एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार प्राप्त करने वाले व्यक्ति की अर्हता के मानक निर्धारित करते हुए यह चिन्तन किया गया कि इस पुरस्कार हेतु केवल उसी व्यक्ति की पात्रता पर विचार किया जाएगा, जिसने मानवीय एकता में पूर्ण आस्था रखते हुए उसे व्यावहारिक रूप में सक्रियता से निभाया हो तथा चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में अपने जीवन के अधिकांश समय का योगदान कर प्रामाणिक जीवन की साधना द्वारा अपने निजत्व में उतारा हो। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिसके मन में गहरी निष्ठा हो तथा आत्मानुशासन की दृष्टि से जन-जन में जागरण की भावना को विकसित करने के लिए जीवन को समर्पित कर दिया हो। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना उन्हीं लोगों के लिए की गयी है, जो चरित्र निर्माण के प्रति कृतसंकल्प हैं और इस क्षेत्र में अपूर्व गरिमा से युक्त मूर्तिमान आदर्श हैं। प्रथम अणुव्रत पुरस्कार के लिए भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. आत्माराम का नाम चयनित किया गया। चयन समिति के मानकों पर खरे उतरे डॉ. आत्माराम के नाम की घोषणा की गयी। उपस्थित जनसमुदाय ने हर्षध्वनि कर इस घोषणा का स्वागत किया। डॉक्टर साहब मंच के नीचे गैलरी में बैठे थे। उन्हें तत्काल मंच पर लाया गया। उन्होंने नैतिक मूल्यों के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। केन्द्रीय पेट्रोलियम और रसायन मंत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी, रेलवे मंत्री श्री केदार पांडेय, राजस्थान के वित्त एवं शिक्षामंत्री श्री चन्दनमल बैद, हरियाणा के राज्यमंत्री मांगेरामजी आदि कई वक्ताओं ने राष्ट्रीय समस्याओं के सन्दर्भ में अनुशासन की महत्ता पर प्रकाश डाला।

जैन बनने से पहले मैन बनें

अहमदाबाद में 23 मार्च को न्यू क्लॉथ मार्केट में व्यापारियों को सम्बोधित करते आचार्य श्री तुलसी ने कहा-"भारत के राज्यों में गुजरात एक अच्छा और प्रमुख राज्य कहलाता है। अहमदाबाद गुजरात एक प्रमुख शहर माना जाता है। इस शहर का प्रमुख वर्ग है व्यापारी। मैं आज इस प्रमुख वर्ग के बीच में उपस्थित हूँ। लगभग एक हजार किमी. की यात्रा करके आया हूँ। मैं यहां आया हूँ, इसका आप पर कोई एहसान नहीं है और होना ही नहीं चाहिए। मेरा विश्वास निष्काम कर्म में है। मैं यह भी मानता हूँ कि निष्काम कर्म फलदायी होता है।"

व्यापारियों में जैन बन्धु काफी थे। उनको लक्ष्य करके आचार्य श्री ने कहा- "यदि आप जैन हैं तो आपको यह चिन्तन करना है कि आप अपने पड़ोसी के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? आप किसी के साथ धोखा तो नहीं करते? यदि करते हैं तो फिर अच्छे जैन कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। जैन धर्म ने छुआछूत को मान्यता नहीं दी है। जैन धर्म ने जातिवाद को कभी स्वीकार नहीं किया है। जैन बनने की बात जाने दीजिए, मैं मैन बनने की बात कर रहा हूँ। आप जैन बनें या नहीं, पर मैन बन गये तो समझिए कि सब कुछ बन गये।"

आचार्य श्री ने कहा कि जिन व्यक्तियों ने शिविर में दस दिन का समय नियोजित किया, उन्हें जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण उपलब्ध करना है। ध्यान शिविर में भाग लेने वाले भाई-बहनों से मैं कहना चाहता हूँ कि उन्होंने जो-जो प्रयोग सीखे हैं, उनका अभ्यास करते रहें। निरन्तर अभ्यास करने से ही रूपान्तरण घटित हो सकता है।

प्रथम अणुव्रत ग्राम

अमृत कलश यात्रा का प्रथम पड़ाव आमली गाँव में हुआ। अणुव्रत ग्राम की सूची में भी पहला नाम आमली का था। यों तो आमली को अणुव्रत ग्राम बनाने तथा इसका नाम आम्रावली करने का प्रयास सन् 1972 से चल रहा था। मुनि नेमीचन्दजी और मुनि सुखलाल ने वहां पर्याप्त परिश्रम किया। स्थानीय अणुव्रत समिति भी इस दिशा में सक्रिय रही। अणुव्रत पुस्तकालय, अणुव्रत साक्षरता केन्द्र, अणुव्रत प्रेक्षा आयोजन, अणुव्रत न्याय समिति आदि रचनात्मक प्रवृत्तियों के माध्यम से वहां अणुव्रत ग्राम निर्माण की भूमिका बहुत अच्छी बन गयी।

आचार्य श्री तुलसी 6 मई 1985 को प्रात: गंगापुर से विहार कर आमली पहुँचे। स्वागत कार्यक्रम में आचार्य श्री को जानकारी दी गयी कि वहां पाँच सौ परिवार हैं। अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में किये गये प्रयत्नों के सर्वेक्षण के आधार पर गाँव के 95 प्रतिशत लोग शराब से मुक्त हैं। गाँव के 20 विवाद परस्पर समझौते द्वारा सुलझाये गये हैं। गाँव का कोई भी परिवार भूमिहीन नहीं है। शिक्षा एवं चिकित्सा की सुन्दर व्यवस्था है। गाँव के सभी वर्गों एवं जातियों के लोगों में अच्छा सौहार्द है। इस ठोस धरातल को ध्यान में रखकर आचार्य श्री ने आमली को अणुव्रत ग्राम के रूप में घोषित कर दिया। वहां के कुछ कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत की प्रवृत्तियों को संचालित करने की जिम्मेदारी स्वीकार की। आमली से महेन्द्रगढ़ जाने वाली सड़क पर स्थायी रूप में एक अणुव्रत द्वार बनवाया गया।

अभ्यास से होता है रूपान्तरण

7 जून, शनिवार। दस दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन समारोह। यह शिविर बाफणा विद्यालय में आयोजित हुआ था। शिविरार्थी भाई-बहनों ने अपने अनुभव सुनाये। आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "अभी शिविरार्थियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किये। एक दृष्टि से वह सजीव व्याख्यान था। श्रोताओं में प्रवचन सुनने की जो उत्सुकता है, उसे मैं समझता हूँ, पर अवश्य करणीय काम करने ही होते हैं। कुछ भी किया जाता है, समय तो लगता ही है। वह समय सार्थक और उपयोगी बने, यह उद्देश्य रखा जाये। जिन व्यक्तियों ने शिविर में दस दिन का समय नियोजित किया, उन्हें जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण उपलब्ध करना है। ध्यान शिविर में भाग लेने वाले भाई-बहनों से मैं कहना चाहता हूँ कि उन्होंने जो-जो प्रयोग सीखे हैं, उनका अभ्यास करते रहें। दस दिन का समय तो कुछ सीखने व समझने का होता है। निरन्तर अभ्यास करने से ही रूपान्तरण घटित हो सकता है।"

अणुव्रत अनुशास्ता की अणुव्रत यात्रा में हजारों लोग हो रहे संकल्पित

अहमदाबाद में लेक्सक्रु के सैकड़ों कर्मचारियों ने स्वीकार किये संकल्प

आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में पहुँचे गुजरात के गृहमंत्री हर्ष संघवी

अहमदाबाद। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75वें वर्ष को **अणुव्रत अमृत महोत्सव** के रूप में मनाया जा रहा है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण स्वयं "अणुव्रत यात्रा" के माध्यम से जन-जन में संयम की चेतना जागृत कर स्व-कल्याण के साथ ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

मंगलवार 21 मार्च को अहमदाबाद में जन मेदिनी को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि अणुव्रती बनने के लिए किसी जाति, धर्म, संप्रदाय की आवश्यकता नहीं। प्रवचन पाण्डाल में आचार्य श्री के समक्ष लेक्सक्रु के सैकड़ों कर्मचारी भी उपस्थित थे। आचार्य श्री ने उन्हें विविध प्रेरणाएं प्रदान करते हुए सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को स्वीकार करने का आह्वान किया। उपस्थित कर्मचारियों ने सहर्ष उन संकल्पों को स्वीकार कर अपने जीवन को धन्य बनाया। आचार्य प्रवर ने अणुव्रत गीत का संगान किया और प्रेरणा प्रदान की कि किस प्रकार छोटे-छोटे संकल्पों से हम अपने मानस को अच्छाई की ओर परिवर्तित कर सकते हैं।

उपस्थित श्रद्धालुओं को साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी और साध्वीवर्या साध्वी सम्बुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में संयम के महत्त्व से अवगत कराया। गुजरात सरकार के गृहमंत्री हर्ष संघवी ने आचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

उल्लेखनीय है कि अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत प्रत्येक मंगलवार को "संयम दिवस" के रूप में मनाया जा रहा है जिसमें मौन, नशामुक्ति एवं मांसाहार के परित्याग के संकल्प शामिल हैं। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने इस सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए जनता से संयमित जीवनशैली अपनाने की अपील की। उन्होंने अणुव्रत यात्रा के माध्यम से जन-जन को अभिप्रेरित करने हेतु अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त किए।

लेक्सक्रु के चेयरमैन व अहमदाबाद प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम बाफना, उपाध्यक्ष अशोक सेठिया, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र सुराणा, अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, सहमंत्री मनोज सिंघवी, जीवन विज्ञान संयोजक रमेश पटावरी, अणुव्रत समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष सुरेश बगरेचा, मंत्री मनोज सिंघी, कोषाध्यक्ष विमल घीया, उपाध्यक्ष प्रकाश धींग, सहमंत्री प्रकाश बैद, सहमंत्री डिम्पल श्रीमाल, प्रचार प्रसार मंत्री विरेन्द्र सालेचा, संगठन मंत्री जवेरीलाल भंसाली एवं अन्य कार्यकर्ता इस अवसर पर उपस्थित थे।

शाकाहार एवं नशामुक्ति पर सर्वधर्म संगोष्ठी

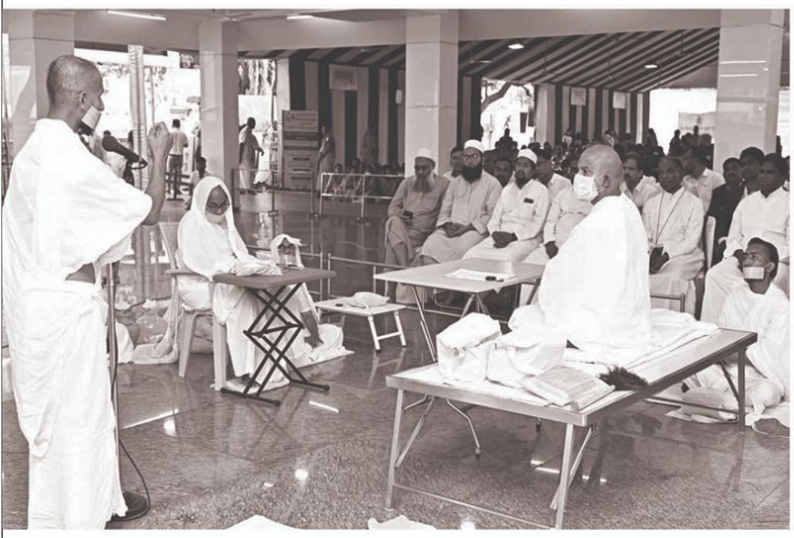

अहमदाबाद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, अहमदाबाद की ओर से 21 मार्च को "शाकाहार - मांसाहार, एडिक्शन -डीएडिक्शन" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में किया गया। इसमें मुख्य मुनि डॉ. महावीर कुमार तथा अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार, मुस्लिम समुदाय से मुफ्ती मोहम्मद जुबेर छीपा, मुफ्ती जायद मंसूरी (शाहपुरी) तथा ईसाई समुदाय से बिशप रेथना स्वामी ने धर्मशास्त्र के आधार पर विषय पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। शाकाहार, मांसाहार और नशे के सन्दर्भ में विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों पर वर्तमान सन्दर्भ में सार्थक चर्चाएं हुईं।

इस अवसर पर फादर निलेश परमार, फादर ऐन्थोन मेकवान, अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, सहमंत्री मनोज सिंघवी सहित अनेक अणुव्रत कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अणुव्रत संरक्षक

न्यायाधिपति श्री गौतम चौरड़िया
(अध्यक्ष – छत्तीसगढ़ राज्य उपभोक्ता प्रतितोष आयोग)
राजनांदगांव – रायपुर

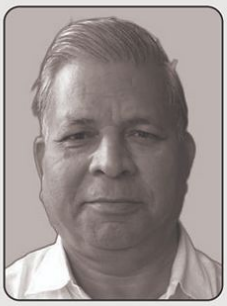

श्री जसराज छाजेड़ (जैन)
कोशीवाड़ा-कोपरखेरणे (नवी मुम्बई)

श्री भगवतीलाल धाकड़
शिशोदा-चेम्बुर (मुम्बई)

अणुविभा के अर्थ संबल अभियान में आपने ₹1 लाख अनुदान की सहभागिता कर अणुव्रत आंदोलन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ पर देश भर में हुए आयोजन

अणुव्रत रैली, प्रेसवार्ता व संगोष्ठियां आयोजित

■■ राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) के तत्त्वावधान में फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया पर 21 फरवरी को अणुव्रत आंदोलन के 75वें गौरवशाली वर्ष अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ समारोह का राष्ट्रव्यापी आयोजन अणुव्रत अमृत रैली एवं प्रेस कॉन्फ्रेंस के साथ व्यापक स्तर पर किया गया। जन-जन में अणुव्रत के प्रति निष्ठा पैदा करने व संयम की चेतना जागृत करने के उद्देश्य से वृहद् स्तर पर सुदीर्घ अभियान की शुरुआत की गयी।

केन्द्रीय स्तर पर साबरकांठा (गुजरात) के खेरोज गाँव स्थित सुन्दरम विद्या भवन विद्यालय के प्रांगण में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ की उद्घोषणा के साथ ही एक वर्षीय अणुव्रत यात्रा की घोषणा करके नव इतिहास का सृजन कर दिया। आचार्य श्री के श्रीमुख से संपूर्ण अणुव्रत गीत का संगान सुनकर उपस्थित जनसमूह भावविभोर हो उठा। अणुव्रत पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार जी का मार्गदर्शन भी इस अभूतपूर्व आयोजन की सफलता में महत्वपूर्ण कारक रहा।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने केन्द्रीय टीम के साथ पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में अणुव्रत ध्वज लहराकर अणुव्रत अमृत रैली का शुभारम्भ किया। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने वर्ष भर में आयोजित होने वाले अणुव्रत के बहुविध कार्यों का ब्योरा प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष राजेश सुराणा व महामंत्री भीखम सुराणा व डॉ. कुसुम लुनिया ने सामयिक प्रस्तुतियां दीं। देशभर से आये अणुविभा कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इसके साथ ही उत्तर से दक्षिण तक, पश्चिम से पूरब तक समग्र हिन्दुस्तान व पड़ोसी देश नेपाल में अनेक सरकारी, गैरसरकारी, प्रशासनिक, शैक्षणिक अधिकारियों सहित हजारों समाजसेवियों, जनप्रतिनिधियों व मीडिया कर्मियों ने अणुव्रत अमृत रैली, प्रेस कॉन्फ्रेंस एवं संगोष्ठियों में अपनी उपस्थिति दर्ज की। लाखों दर्शकों ने इन कार्यक्रमों को ऑफलाइन/ऑनलाइन देखा, जाना और सराहा।

21 फरवरी को भारत व नेपाल के 100 से अधिक स्थानों पर उत्साहपूर्ण आयोजन हुए। कुछ समितियों ने तो एक से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। समितियों ने फ्लैगऑफ के लिए विभिन्न धर्म गुरुओं के साथ-साथ विशिष्ट अतिथियों को इन आयोजनों में आमंत्रित कर उन्हें अणुव्रत से परिचित करवाया। सभाओं व मीडिया को संबोधन में चारित्र आत्माओं व उच्चस्तरीय वक्ताओं ने अणुव्रत दर्शन को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। साथ ही मीडिया की जिज्ञासाओं का सटीक समाधान दिया गया। इसका परिणाम रहा कि 22 फरवरी को प्रिंट मीडिया, टी.वी. चैनल्स, सोशल, डिजिटल व ऑनलाइन मीडिया में अणुव्रत छाया रहा, अणुव्रत आचार संहिता अनुगूँजित हुई, अणुव्रत आंदोलन के प्रति लोगों का रुझान जगा और बढ़ा भी।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 5:30 बजे चेन्नई के ईको पार्क से हुई और देशव्यापी आयोजनों का सिलसिला लगभग 14 घंटे तक चला। अंतिम आयोजन शाम 7 बजे हनुमाननगर (नेपाल) में हुआ। सबसे ज्यादा आयोजन प्रातः 9 से 11 बजे के मध्य हुए। रैली में शामिल लोगों के हाथों में ओड़िया, तमिल, तेलगु, बंगाली, नेपाली, असमी, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में सजी तख्तियां विशेष प्रभाव पैदा कर रही थी।

अणुव्रत विषयक लाइव शो की झांकियां लोगों को अणुव्रत दर्शन से साक्षात्कार करा रही थीं। बीएसएफ, स्काउट गाइड, कन्या कमाण्डोज, वीमेन ऑन व्हील्स आदि अनेक नये प्रयोग रैलियों में हुए। आर्मी बैण्ड से बजता राष्ट्रगान अणुव्रत-अमृत से सबको सराबोर कर रहा था। नेपाल के सात स्थानों के आयोजन में काठमाण्डू में नेपाल के सुप्रसिद्ध गायक की आवाज में नेपाली में रिकॉर्ड कराया गया अणुव्रत गीत "संयममय जीवन हो" वायरल हो गया।

एकरूपता से व्यवस्थित आयोजन के मद्देनजर बैकड्रॉप, बैनर, पोस्टर, स्टेंडीज, 11 नियमों पर आधारित तख्तियाँ, अणुव्रत नारे, अणुव्रत गीत आदि के पीडीएफ, सीडीआर के साथ ही अणुव्रत ध्वज, ब्रोशर, स्टिकर, संकल्प पत्र, पर्यावरण के पोस्टर आदि सामग्री अणुव्रत समितियों को कोरियर से भेजी गयी।

अभिनन्दन नाहटा व रजत जैन द्वारा दिये गये प्रशिक्षण व नीरज बम्बोली के विशेष सहयोग से अणुव्रत समितियों ने फेसबुक और यूट्यूब लाइव पर कार्यक्रमों को लाइव टेलीकास्ट किया जिससे अणुव्रत अमृत महोत्सव भारत व भारत के बाहर भी देखा व जाना गया। लोगों ने खुले दिल से इन आयोजनों की सराहना की। अणुव्रत मीडिया टीम ने दिन-रात मेहनत करके लगभग 121 पेज के पीडीएफ बनाकर लगातार शेयर करके समितियों के काम को जनमानस तक निरन्तर पहुँचाया। अणुविभा दिल्ली ऑफिस, जयपुर व राजसमन्द ने भी पूरी मुस्तैदी से कार्य करके समितियों तक शीघ्रता से सामग्री पहुँचाने में मदद की। इस प्रकार सबके सामूहिक प्रयासों से अणुव्रत अमृत महोत्सव पर स्वर्णिम इतिहास रचा गया।

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
अणुविभा
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
फाल्गुन शुक्ल द्वितीया : 21 फरवरी 2023
अणुव्रत समिति, नगाँव, असम

शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली

गौरवशाली 75 वर्ष
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
PRESS CONFERENCE

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
फाल्गुन शुक्ल द्वितीया : 21 फरवरी 2023
अणुव्रत समिति, इस्लामपुर

शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
शुभारम्भ समारोह
अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
अणुव्रत समिति, लाडनूं

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
फाल्गुन शुक्ल द्वितीया : 21 फरवरी 2023

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुविभा

गौरवशाली 75 वर्ष
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
21 जनवरी 2023 से 22 मार्च 2024
अणुव्रत समिति, रायपुरिया

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
फाल्गुन शुक्ल द्वितीया : 21 फरवरी 2023
अणुव्रत समिति, इस्लामपुर

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
शुभारम्भ
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
राजशाना (मांगा)

I will lead a life free from addictions.
I will not resort to unethical practices in elections.

PARAGON
अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष
अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन की
गौरवशाली 75 वर्ष
-:शुभारम्भ:-
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
अणुव्रत समिति, सरदारशहर

अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत समिति, पेटलावद

अणुव्रत आंदोलन के
गौरवशाली 75 वर्ष
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत अमृत रैली
अणुव्रत समिति, नजफगढ़

Mayank | Maduranthakam, Tamil Nadu

निम्नलिखित स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए -

चेन्नई	हनुमानगढ़	कटक
चलथान	जयपुर	जोधपुर
विराटनगर	हैदराबाद	इंदौर
सिलीगुड़ी	लाडनूं	पीलीबंगा
दिवेर	अम्बिकापुर	दलखोला
धरान	हनुमान नगर	पाली
अजमेर	गंगाशहर	कोटा
इस्लामपुर	गुवाहाटी	दिल्ली
किशनगंज	चंडीगढ़	सरदारशहर
भीलवाड़ा	अररियाकोर्ट	सिरसा
ग्रेटर सूरत	आसींद	हांसी
आबसर	रिछेड़	टोहाना
कोटपुरा	काठमांडू	बालोतरा
जसोल	थिरूकालीकुंद्रम	बेंगलुरु
विजयवाड़ा	मण्डी गोविंदगढ़	श्रीनगर
बीदासर	राजसमंद	धुबड़ी
धुलाबाड़ी	दुहाबी	चूरु
इंचलकरणजी	संथेला	पुणे
बल्लारी	अहमदाबाद	जयगांव
चित्रदुर्ग	हावड़ा	कोलकाता
चाड़वास	सूरतगढ़	श्रीडूंगरगढ़
बीकानेर	डाबड़ी	कारवाड
उदासर	अमृतसर	तरनतारन
मोगड	फाजिल्का	अबोहर
भटिण्डा	मानसा	पटियाला
आमेट	देवगढ़ मदारिया	नाथद्वारा
शाहपुरा	बाड़मेर	पचपदरा
हिसार	छापर	सोलापुर
हुबली	रामपुरा	पेटलावद
झकनावद	रायपुरिया	सारंगी
ताराखेड़ी	बोलासा	उमरकोट
उदयपुर	बारडोली	अगरतला
धतुरिया	मेघनगर	पालघर
तेजपुर	बामिया	फारबिसगंज
थांदला	भटूमण्डी	वापी
राजीयाना	नवगांव	बंगाईगांव
भुज	ब्यारा	भिवानी
कालादेवी	कल्याणपुरा	पुर
फरीदाबाद		

ईको फ्रेंडली होली से पर्यावरण संरक्षण का संदेश

■■ संयोजक डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

➻ अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में गतिशील अणुव्रत आंदोलन के महत्वपूर्ण लक्ष्य पर्यावरण संरक्षण की प्राप्ति के लिए विगत वर्ष की भाँति इस साल भी ईको फ्रेंडली होली अभियान देशभर में जोर-शोर से चलाया गया। देश की सीमाओं से पार भी इसकी अनुगूँज सुनायी पड़ी। अबू धाबी इंडियन स्कूल अल मुरार के बच्चों ने जल संरक्षण पर आधारित नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की।

➻ अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर के आह्वान पर देश भर की अणुव्रत समितियों ने अपने समय तथा श्रम के नियोजन से महानगर, नगर, कस्बों तथा ग्रामीण क्षेत्रों तक विभिन्न माध्यमों से ईको फ्रेंडली होली के लिए जन चेतना के भरसक प्रयास किये। अनेक विद्यालयों में ईको फ्रेंडली होली विषय पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। चौराहों पर खड़े होकर किये गये ईको फ्रेंडली होली के शपथ ग्रहण कार्यक्रम भी चर्चा का विषय बने।

➻ समितियों ने जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर पर्यावरण सुरक्षा को प्राथमिकता दी। हिंदी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से भी इस अभियान का संदेश आम लोगों तक पहुँचाया गया। वैसे तो सभी अणुव्रत समितियों के प्रयास सराहनीय रहे, फिर भी कुछ समितियों ने अपनी कार्यशैली से केंद्रीय पदाधिकारियों को बहुत अधिक प्रभावित किया।

➻ साहित्यकारों-साहित्य प्रेमियों ने समाचार पत्रों में इस अभियान की उपादेयता और महत्ता पर आलेख लिखे। पानी की बर्बादी रोकने व केमिकल युक्त रंगों का उपयोग न करने तथा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक होने का संदेश नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से आमजन तक पहुँचाया गया। 27 सेलिब्रिटीज ने वीडियो संदेश के माध्यम से लोगों से ईको फ्रेंडली होली मनाने की अपील की। अणुविभा के फेसबुक पेज पर उनके वीडियो को अपलोड किया गया। अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष में पर्यावरण जागरुकता अभियान के अंतर्गत ईको फ्रेंडली होली मनाने का संकल्प करवाया गया।

➻ इस प्रकल्प के क्रियान्वयन में निम्नांकित समितियों ने विशेष उत्साह दिखाया -

मध्यांचल : अणुव्रत समिति हिसार, फरीदाबाद, भिवानी, मानसा, टोहाना, इंदौर, मंडीगोविंदगढ़, हांसी, सिरसा, दिल्ली, कोटकपूरा।

पूर्वांचल : अणुव्रत समिति गुवाहाटी, बंगाईगांव, खारूपेटिया, जयगांव, सिलीगुड़ी, बरपेटा, धुबड़ी, इस्लामपुर, दिनहटा, काठमांडू, अररिया कोर्ट, फारबिसगंज, तेजपुर।

पश्चिमांचल : अणुव्रत समिति अंबिकापुर, वापी, अहमदाबाद, मुंबई, बारडोली, पालघर, ग्रेटर सूरत, वापी, इचलकरंजी।

उत्तरांचल : अणुव्रत समिति जयपुर, जोधपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, जसोल, लाडनूं, नाथद्वारा, सरदारशहर, बालोतरा, श्रीडूंगरगढ़, सवाईमाधोपुर, लावा सरदारगढ़, राजसमंद, गंगाशहर, कोटा, हनुमानगढ़, चाड़वास, उदयपुर, बीकानेर, डाबड़ी, पाली, चाड़वास, आबसर, बाड़मेर, छापर, तारानगर, सादुलपुर, शाहपुरा, चूरू, दिवेर, श्रीगंगानगर, सायरा, आमेट।

दक्षिणांचल : अणुव्रत समिति बेंगलुरु, कटक, चेन्नई, तिरुकल्लीकुण्ड्रम, चिकमंगलुरु।

चयनित आलेख

अपनी धरती माँ से प्यार कीजिए

- रेणु सांखला, शिवपुरी

शुद्ध वायु, शुद्ध जल और शुद्ध पर्यावरण से युक्त इस अलौकिक ग्रह - हमारी धरती माँ ने अपना सब कुछ हम पर वार कर जीवन हमारा साकार किया। बदले में हमने क्या किया?

बढ़ती महत्वाकांक्षाओं को पाने के लिए कृत्रिम साधनों का सहारा लेकर प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग कर अपनी ही निर्मात्री को प्रदूषित और बंजर कर दिया। सिंगल यूज्ड प्लास्टिक, विषैली गैसों, रासायनिक उर्वरकों, अजैविक कीटनाशकों और ई-कचरे आदि का भंडारण कर प्रदूषित पर्यावरण सौंप दिया। पूर्व में धरती माँ मौन थी, पर लगातार अपना विनाश होता देख उसने धैर्य खो दिया। भूकम्प, सुनामी, साइक्लोन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि के माध्यम से "जैसा दोगे बदले में वैसा ही पाओगे" का सच्चा अर्थ हमें समझा दिया।

अब भी समय है सुधरने का...। स्वयं को बदलने के साथ ही दूसरों को प्रेरित करने का। हम पर्यावरण रोधी वस्तुओं का निषेध करें। ईको फ्रेंडली वस्तुओं का उपयोग करें। अपनी बोतल, कटलरी और थैला लेकर चलें। कृत्रिम साधनों का सीमित प्रयोग करें। प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग न करें। छोटी दूरी पैदल या साइकिल से तय करें। पेट्रोल, डीजल वाहनों की जगह सीएनजी या ई-वाहनों को प्राथमिकता प्रदान करें। ई-उपकरणों को मरम्मत करा उन्हें पुनः उपयोग में लेकर ई-कचरे को कम करें। जैविक खाद और जैविक कीटनाशकों का प्रयोग कर जैविक खेती करें। पौधे लगाकर उनका संरक्षण करें। विध्वंसक नहीं, पर्यावरण रक्षक बनकर प्रदूषण को न्यून करें। अपनी धरती माँ को प्यार करें। स्वस्थ पर्यावरण के साथ अपना और आने वाली पीढ़ी के अच्छे स्वास्थ्य का उपहार प्राप्त करें। साथ में आने वाले कल को भी सुरक्षित करें।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत अमृत महोत्सव
पर्यावरण जागरूकता अभियान...
स्नेह मिलन
होली
अणुव्रत समिति, जयपुर
अणुव्रत समिति, चेन्नई

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत अमृत महोत्सव
पर्यावरण जागरूकता अभियान...
स्नेह मिलन
होली
पानी के उपयोग से बचें
केमिकल युक्त रंगों से बचें
प्राकृतिक गुलाल उपयोग करें
मैत्री और सद्भावना को बढ़ाएं
अणुव्रत समिति, हुबली
समिति, भिवानी
समिति, जोधपुर
अशोक जैन
अणुव्रत समिति हाँसी
पवन गर्ग
DR. RAJAN PUROHIT

131 बच्चों ने सीखे जीवन निर्माण के गुर

चिल्ड्रन'स पीस पैलेस में अणुव्रत बालोदय शिविर संपन्न

राजसमंद। मार्च माह में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी में आवासीय अणुव्रत बालोदय शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लवाणा, सविता इंटरनेशनल स्कूल नान्दोली, महात्मा गांधी राजकीय स्कूल भलावतों का खेड़ा, नवप्रभात सीनियर सेकण्डरी स्कूल एमड़ी, सुभाष पब्लिक स्कूल धोइन्दा और जीवन ज्योति माध्यमिक विद्यालय पीपरड़ा के 131 बच्चों ने तीन दिन तक 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' के रमणीय माहौल में रहते हुए जीवन निर्माण के गुर सीखे। पहले दिन बच्चों ने शिविर के उद्देश्यों को समझा और समूह बनाये। उन्होंने एक-दूसरे का परिचय लिया, मित्र बनाये। रुचि और स्वभाव जाना, ग्रुप का लीडर चुना और समूह का नामकरण भी किया। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में सभी स्कूलों के बच्चे एक-दूसरे से घुल-मिल गये।

बालोदय शिविर की कार्यविधि को जानने के उद्देश्य से पधारे राजसमन्द के अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी शिवकुमार व्यास ने कहा कि अणुविभा नयी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास का अनूठा कार्य कर रही है। उन्होंने कहानी के माध्यम से समझाया कि कोरे किताबी ज्ञान से सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है। प्रमुख ब्लॉक शिक्षा अधिकारी नरोत्तम दाधीच ने बच्चों को बताया कि सद् संस्कार ही जीवन की मूल उपलब्धि हैं। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष संचय जैन ने संवाद के माध्यम से सर्वांगीण विकास के सही मायने पर बच्चों से चर्चा की। उन्होंने अणुव्रत गीत की व्याख्या करते हुए जीवन मूल्यों पर बच्चों के साथ संवाद किया।

बाल संसद सत्र में बच्चों ने किताबी पढ़ाई और सृजनात्मक गतिविधियों की आवश्यकता और दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने पर खुलकर बहस की। राजस्थान में प्रति शनिवार 'नो बैग डे' लागू होने पर भी चर्चा हुई। अंततः बच्चों ने स्वीकार किया कि किताबी पढ़ाई व्यक्तित्व का संतुलित विकास नहीं कर सकती, इसलिए स्कूल में सृजनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिलना चाहिए।

बालोदय की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. सीमा कावड़िया ने बच्चों को जीवन विज्ञान के संप्रयोग करवाये एवं संतुलित पोषण पर प्रकाश डाला। डॉ. राकेश तैलंग ने नैतिक और मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन पर विचार व्यक्त किये। डॉ. विमल कावड़िया ने बच्चों को मौसमी बीमारियों तथा उनसे बचाव के बारे में बताया। दिशा कोठारी ने बच्चों को आर्ट एण्ड क्राफ्ट का अभ्यास कराया। महात्मा गांधी स्कूल एवं सविता इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों ने शिक्षा पर नाटक प्रस्तुत किया।

शिविर में विभिन्न विद्यालयों से आये शिक्षक-शिक्षिकाओं तुलसी राम कुमावत, रत्ना जोशी, चेतना श्रीमाली, कपिल पालीवाल, स्नेहा आमेटा, प्रहलाद कुंवर, गोपाल पालीवाल, कुसुम पालीवाल, शिल्पा शर्मा आदि की सक्रिय सहभागिता रही। सभी ने शिविर के अनुभव भी साझा किये।

शिविर संयोजक मोनिका बापना, मोनिका राठोड़ एवं अंजली शर्मा ने सभी सत्रों का संचालन करते हुए बच्चों को बालोदय कक्षों का अवलोकन कराया। सायंकालीन सत्र में बच्चों ने बड़ी उत्सुकता से शिक्षाप्रद लघु फिल्म देखी। बालोदय प्रभारी देवेन्द्र आचार्य ने बच्चों से संवाद किया। शिविर में प्रातःकालीन योग सत्र जगदीश बैरवा ने कराया। समापन समारोह में अणुविभा के सह मंत्री जगजीवन चौरड़िया, हिम्मत बाबेल, सागर चण्डालिया आदि उपस्थित रहे।

पाठकों के लिए
विशेष प्रतियोगिता

आपको करना है बस इतना →

❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के अक्टूबर 2022 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
❖ अक्टूबर 2022 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

❖ **अक्टूबर 2022 अंक पर आधारित प्रश्न** ❖

01. डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने 'विज्ञान जगत का गांधी' किसे कहा था ?
02. 'जदि तोर डाक शुने केऊ ना आसे तबे एकला चलो रे' - किसने कहा था ?
03. महावीर दर्शन के अनुसार शांति की चाह को पूरा करने के लिए क्या जरूरी है ?
04. 'सेतु निर्माता' पुस्तक पर किसे 'सोवियत लैंड नेहरू' पुरस्कार मिला ?
05. 'अर्हत् वाणी' ग्रंथ किसने लिखा ?
06. अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक कौन हैं ?
07. जयप्रकाश नारायण का 'मानस पुत्र' किसे माना जाता है ?
08. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा का क्या नाम है ?
09. अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत किस वर्ष की गयी?
10. 'एक्का मणुस्स जाई' का क्या अर्थ है?

ज्ञातव्य बिंदु

- ❖ प्रतियोगिता के प्रश्न अक्टूबर 2022 के अंक पर आधारित।
- ❖ परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- ❖ प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- ❖ उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- ❖ काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- ❖ सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- ❖ एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- ❖ विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- ❖ सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आकर्षक पुरस्कार

विजेता
- नकद रु. 2100/-
- अणुव्रत पत्रिका की त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो
- नकद रु. 1100/-
- अणुव्रत पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 अप्रैल 2023

जनवरी 2023 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(सितम्बर 2022 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

श्रीमती मंजु लूनिया
फरीदाबाद

:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::

श्रीमती सुशीला गोलछा
दिल्ली

श्री राजेश भंसाली
अहमदाबाद

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :

विजय कुमार जैन	दिल्ली
सुभाष जैन	टोहाना
ए.पी. माथुर	अजमेर
सारिका कोठारी	अजमेर
प्रणत धींग	चेन्नई
सिद्धि चौपड़ा	पचपदरा
जिनेश चौपड़ा	पचपदरा
विजय चौपड़ा	पचपदरा
अजित प्रसाद जैन	रोहतक
रामविलास जैन	सूरत
सरिता बोहरा	अजमेर
सीमा तातेड़	हनुमानगढ़
कोमल तातेड़	हनुमानगढ़

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	चेतना	पृ. 15
उत्तर 02	पर्यावरण का संरक्षण, दायित्व हमारा हर क्षण	पृ. 47
उत्तर 03	16 जनवरी को	पृ.
उत्तर 04	मूल्यपरक शिक्षा	पृ. 23
उत्तर 05	डॉ. लाजरनाव ने	पृ. 11
उत्तर 06	श्री गोपीनाथ अमन	पृ. 39
उत्तर 07	1090	पृ. 34
उत्तर 08	वाल्डेन	पृ. 18
उत्तर 09	सम्यक् ज्ञान–सम्यक् दृष्टिकोण– सम्यक् आचरण	पृ. 21
उत्तर 10	अभ्यास	पृ. 12

छोटे-छोटे नियमों से जीवन को पवित्र बनाएं : आचार्य श्री महाश्रमण

बालोतरा। अणुव्रत समिति की ओर से न्यू तेरापंथ भवन में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में जीवन विज्ञान विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री ने फरमाया कि विद्यार्थियों को तीन बातों का विशेष ध्यान रखना जरूरी है - सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। इनका निरंतर विकास होता रहे। विद्यार्थी नशे से दूर रहें एवं अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की पालना करते हुए अपने जीवन को पवित्र बनाने का अभ्यास करें।

मुनिश्री योगेश कुमार ने कहा कि विद्यार्थी प्रतिदिन जीवन विज्ञान के प्रयोग कर अपने जीवन को ऊर्जावान बना सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग के साथ ही महाप्राण ध्वनि एवं मंत्रों के उच्चारण भी करवाये।

कार्यक्रम में मुनिश्री मनन कुमार का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। अणुव्रत सेवी एवं राज्य प्रभारी ओम बांठिया ने बताया कि अणुव्रत समिति द्वारा बालोतरा के आसपास के क्षेत्रों में जीवन विज्ञान एवं नशामुक्ति का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया गया है।

कार्यक्रम में तुलसी किड्स स्कूल, शांति निकेतन स्कूल, नवकार विद्या मंदिर, राजकीय उच्च बालिका विद्यालय एवं वर्धमान स्कूल के प्राचार्य एवं लगभग 500 विद्यार्थियों के साथ ही दिव्यांग बच्चों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल एवं तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति आदि के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन अणुव्रत समिति मंत्री सुरेश बागमार ने किया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव से पूरा विश्व लाभान्वित हो : अर्जुनराम मेघवाल

नयी दिल्ली। केन्द्रीय संस्कृति राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति के चरित्र निर्माण के साथ समाज व विश्व के परिष्कार की परिकल्पना से प्रारम्भ हुआ। जी-20 एवं अणुव्रत संसदीय मंच के विभिन्न आयामों में अणुव्रत दर्शन से आप्लावित आचार संहिता का भरपूर प्रचार हो ताकि अणुव्रत अमृत महोत्सव से पूरा विश्व लाभान्वित हो। 6 जनवरी को मेघवाल दिल्ली में अपने आवास पर अणुविभा अध्यक्ष

अविनाश नाहर व प्रतिनिधिमण्डल से वार्ता कर रहे थे। अणुविभा अध्यक्ष ने मंत्री मेघवाल को अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत होने वाले कार्यक्रमों के बारे में बताया। इस पर मेघवाल ने विभिन्न आयोजनों में शिरकत करने की रुचि जाहिर की। अणुविभा अध्यक्ष ने केन्द्रीय मंत्री को 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिका भी भेंट की। इस अवसर पर अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, चुनावशुद्धि प्रकल्प प्रभारी राजकरण दफ्तरी एवं कार्यसमिति सदस्य बाबुलाल दुगड़ भी उपस्थित थे।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष से मुलाकात

नयी दिल्ली। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने 6 जनवरी को दिल्ली विधानसभा परिसर में विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल से मुलाकात की। इस अवसर पर गोयल ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में अणुव्रत की बहुत आवश्यकता है। अणुव्रत आचार संहिता के नियम मानव समाज की बेहतरी में अहम भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने अणुव्रत अनुशास्ता के साथ अपने संस्मरण भी साझा किये। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने विधानसभा अध्यक्ष को अणुव्रत कैलेण्डर, अणुव्रत डायरी, 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिका के साथ ही पुष्पगुच्छ भेंट किया। उन्होंने अणुव्रत अमृत महोत्सव के बारे में चर्चा करते हुए दिल्ली विधानसभा की ओर से इस सिलसिले में आयोजन करवाने का निवेदन किया।

अणुविभा के प्रतिनिधिमण्डल में मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, आरबिटरेटर सदस्य शान्तिलाल पटावरी, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया एवं कार्यसमिति सदस्य बाबुलाल दुगड़ भी थे।

दुबई में अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन

अणुव्रत जीवनशैली के मुरीद हुए चिंतक और विचारक

पर्यावरण विषय पर दुबई में 4 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देश-विदेश के अनेक पर्यावरणविद् चर्चा के लिए उपस्थित थे। अणुविभा के पर्यावरण जागरुकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. नीलम जैन को बतौर वक्ता आमंत्रित किया गया था। उन्होंने सम्मेलन में अणुव्रत एवं पर्यावरण के सामंजस्य तथा ईको फ्रेंडली जीवनशैली पर आधारित चित्रण प्रस्तुत किया जिसे सभी ने सराहा। सम्मलेन की स्मारिका में डॉ. नीलम जैन का शोध लेख भी प्रकाशित हुआ। सम्मलेन में डॉ. जैन ने दुबई सरकार के प्रतिनिधि शेख माजिद राशिद अल मुल्ला, पंजाब सरकार के पूर्व मंत्री राणा गुरमीत सिंह सोढ़ी, आईपीएस अफसर देवेंद्र कुमार बिश्नोई तथा पूर्व विधायक-हिसार कुलदीप बिश्नोई को अणुव्रत डायरी भेंट की तथा उन्हें अणुव्रत दर्शन के बारे में बताया।

संयम-सादगी है जीवन का आधार

राजसमंद। अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा कि संयम-सादगी जीवन का आधार है। अणुव्रत जीवनशैली नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारने की प्रेरणा देती है। व्यक्ति छोटे-छोटे व्रत स्वीकार करता है तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह नैतिकता के पथ पर अग्रसर होता है। डॉ. कर्णावट अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में गांधी सेवा सदन विद्यालय में आयोजित विशेष कार्यक्रम में बोल रहे थे। संस्था के लोककर्मी राजकुमार दक, डिम्पल कर्णावट एवं दिनेश श्रीमाली ने भी विचार व्यक्त किये। बाल कलाकारों ने नाटिकाएँ प्रस्तुत कर बाल पीढ़ी को व्यसनमुक्त रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर अणुव्रत के लोककर्मी चतुर कोठारी, जीतमल कच्छारा, गणपत धर्मावत, ललित बड़ोला, मदन धोका, अशोक डूंगरवाल, काशीराम पालीवाल, विमल मुशर्रफ, मोहनलाल गुर्जर, डॉ. नीना कावड़िया और डॉ. सीमा कावड़िया का साहित्य-अणुव्रत प्रतीक भेंट कर सम्मान किया गया।

चूरू की मस्जिद में लगी उर्दू में लिखी अणुव्रत आचार संहिता

चूरू। "पहले इंसान इंसान-फिर हिन्दू या मुसलमान" का नारा देने वाले आचार्य तुलसी ने समग्र मानव जाति की बेहतरी के लिए अणुव्रत को 11 नियमों में ढालकर 1 मार्च 1949 को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष में प्रवेश की वेला में अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ समारोह के पावन अवसर पर अणुव्रत यात्रा की उद्घोषणा करके पूरे विश्व को संयम व सौहार्द का संदेश दिया है।

चूरू में विराजित पृथ्वीराज स्वामी ने कहा कि अणुव्रत के नियम किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं, बल्कि मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष अविनाश नाहर के नेतृत्व और संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया के दिशा-दर्शन में अणुव्रत समिति चूरू की अध्यक्ष रचना कोठारी और मंत्री ताहिर खान के साथ अणुव्रत की टीम ने धार्मिक सद्भाव का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

मौलाना आवेश अजा नूरी, मस्जिद कमेटी अध्यक्ष जनाब गुलाम मोहम्मद शमशेर खान की अगुआई में एडवोकेट हकीम अहमद खान, आरिफ खान व अशोक जैन की विशेष उपस्थिति में उर्दू में लिखी अणुव्रत आचार संहिता के दो बोर्ड चूरू की मस्जिद नूर नबी में लगाये गये। इस अवसर पर मौलाना आवेश अजा नूरी ने कहा कि अणुव्रत के ये 11 नियम अमन-चैन का पैगाम हैं। अणुव्रत के साथ जुड़ने से तथा अणुव्रत के इन नियमों का पालन करने से देश में अमन-चैन और भाईचारा बढ़ेगा।

पर्यावरण जागरुकता अभियान शुरू

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) के प्रकल्प पर्यावरण जागरुकता अभियान का शुभारंभ पिछले दिनों किया गया। इस संदर्भ में 22 जनवरी को अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर के मुख्य आतिथ्य में ऑनलाइन गूगल फॉर्म लॉन्चिंग कार्यक्रम आयोजित हुआ। भारत के 77 शहरों के साथ ही दुबई, अबू धाबी में रह रहे लोग भी कार्यक्रम से जुड़े। 315 लोगों ने गूगल फॉर्म भरे।

इस फॉर्म में पर्यावरण से संबंधित प्रश्नों की जानकारी सर्वे के रूप में आमंत्रित की थी, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति आमजन जागरूक हो। अभियान के तहत क्विज से जुड़े सभी प्रतिभागियों को अणुविभा की ओर से ई-सर्टिफिकेट दिया जाएगा। ऑनलाइन अभियान के अन्तर्गत पर्यावरण जन जागरण एवं शिक्षा से संबंधित इस तरह के सर्वे भविष्य में भी किये जाने की योजना है। इसकी जानकारी समय-समय पर उपलब्ध करवायी जाती रहेगी।

वहीं, 22 जनवरी को ही अणुव्रत समितियों के साथ ऑनलाइन संवाद में ईको फ्रेंडली जीवनशैली की जानकारी पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन (PPT) के माध्यम से दी गई। इस PPT का प्रदर्शन समय-समय पर स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, सरकारी संस्थानों, बैंक परिसर, निजी संस्थानों आदि में किया जाएगा।

व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के निर्माण में अणुव्रत की सहभागिता पर कार्यशाला

खेडब्रह्मा। अणुव्रत समिति और तेरापंथ सभा की ओर से व्यक्तित्व एवं राष्ट्र निर्माण में अणुव्रत की सहभागिता पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री डॉ. मदन कुमार ने अणुव्रत की विशिष्टता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किस प्रकार अणुव्रत के नियम अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में निखार लाने के साथ ही सुदृढ़ समाज की संरचना में सहभागी बन सकता है।

मुख्य अतिथि अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने आज के युग में अणुव्रत की प्रासंगिकता के बारे में बताते हुए इसकी जरूरत पर बल दिया। उन्होंने अणुव्रत के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। अणुविभा के चुनावशुद्धि अभियान के गुजरात प्रभारी राकेश चोरडिया और अहमदाबाद अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने भी विचार रखे। कार्यशाला में खेडब्रह्मा के प्रांत ऑफिसर, आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज के प्राध्यापक, गुजरात मध्यमिक शिक्षण बोर्ड के सदस्य के साथ ही अहमदाबाद अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों ने भी उपस्थिति दर्ज करवायी। कार्यक्रम का आयोजन खेडब्रह्मा के श्रीमान शंकर जी पिपलिया ने किया। कार्यशाला में खेडब्रह्मा के काफी गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

डोंबिवली में जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

मुंबई। अणुव्रत समिति मुंबई के क्षेत्र डोंबिवली में जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जिनरेखाजी ने कहा कि जीवन विज्ञान हमारे संपूर्ण व्यक्तित्व को बनाने के लिए है। इसके चार घटक हैं - शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और बौद्धिकता जो विवेक चेतना को जागृत करता है। मानव संस्कृति की सुरक्षा करता है।

प्रमुख अतिथि ज्ञानमंदिर हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज की प्राचार्या पाखले मैडम ने कहा कि हमारी शिक्षा प्रणाली में यदि जीवन विज्ञान का समावेश हुआ तो विद्यार्थियों में बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावात्मक विकास होगा। नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास होगा। वे संवेदनशील बनेंगे।

प्रशिक्षक हनुमानमल शर्मा ने जीवन विज्ञान के प्रयोगों का अभ्यास कराने के साथ ही अनुप्रेक्षा, प्रेक्षाध्यान, योग, जीवन विज्ञान के सिद्धांत पाठ्यक्रम क्यों और कैसे पढ़ाएं इसका बहुत ही सुंदर विवेचन किया। योगाचार्य श्रीपाल मेहता एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक विनोद राठौड़ ने उनका साथ दिया। कार्यशाला में अणुव्रत कार्यकर्ताओं द्वारा शिक्षकों को विविध शारीरिक एवं बौद्धिक गेम खिलाये गये।

शिक्षक प्रतिनिधि पांडुरंग होले ने कहा कि इस अभ्यासक्रम को विद्यार्थियों को पढ़ाएंगे तथा जीवन विज्ञान के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करेंगे। अणुव्रत समिति क्षेत्र डोंबिवली द्वारा सभी शिक्षकों को प्रमाण पत्र तथा जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम पुस्तिका देकर सम्मानित किया गया।

अतिथियों ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में सहभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किये। इस अवसर पर अणुव्रत समिति मुंबई की अध्यक्ष कंचन सोनी, मंत्री वनिता बाफना के साथ ही मनोहर कच्छारा, रतन कच्छारा, शेषमल कच्छारा, सोहनलाल कोठारी, धरमचंद बडाला आदि की उपस्थिति रही।

मेलूसर अणुव्रत समिति का गठन

अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया की दो दिवसीय यात्रा में अणुव्रत समिति सरदारशहर के साथ संगठन बैठक हुई। मेलूसर बीकान कस्बे में आयोजित संगोष्ठी में डॉ. कुसुम लुनिया ने कहा कि अणुव्रत आचार संहिता युवा पीढ़ी के विकास में विशेष सहयोगी है। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष में हमें अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाना है। इसके लिए संगठनों के निर्माण की बहुत आवश्यकता है। अणुविभा कार्यसमिति सदस्य डॉ. धनपत लुनिया ने अणुव्रत व जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों को लाभान्वित करवाने की पेशकश की।

अणुविभा प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 25 फरवरी को स्थानीय नागरिकों ने अणुव्रत समिति, मेलूसर बीकान के गठन का निर्णय किया। इसमें डॉ. गिरधारीलाल सैनी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष मनोनीत किया गया। डॉ. प्रभा पारीक ने सरदारशहर समिति के कार्यों पर प्रकाश डाला। प्राचार्य रामलाल मेहरा ने सभी का स्वागत किया।

अणुव्रत संपर्क यात्रा - कोलकाता, हावड़ा

अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, महामंत्री भीखम सुराणा, अणुव्रत मीडिया टीम के संयोजक पंकज दुधोडिया, मीडिया टीम सदस्य बीरेंद्र बोहरा और विकास दुगड़ अणुव्रत संपर्क यात्रा के तहत हावड़ा पहुँचे। इस दौरान प्रताप दुगड़ और भीखम सुराणा ने हावड़ा के विवेक विहार में मुनिश्री जिनेश कुमार जी के दर्शन किये तथा उन्हें अणुविभा के कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। बाद में अणुव्रत संपर्क यात्रा की संगोष्ठी गंगेज गार्डन में हुई। इसमें अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष मनोज सिंघी के अलावा अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति रही।

जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये

भीलवाड़ा। अणुव्रत समिति के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा क्रिसमस के उपलक्ष्य में महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्य दीपा पेशवानी ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत आंदोलन की सराहना की। अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्रीमती आनंदबाला टोडरवाल ने भाईचारे एवं सद्भावना से जीवन यापन करने का संदेश दिया। योग प्रशिक्षक एवं समिति सदस्य अनिता हिरण ने बच्चों को श्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा एवं योग का अभ्यास करवाया। मंत्री राजेश चौरडिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बच्चों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

जोधपुर। अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल के बच्चों द्वारा नशामुक्ति रैली निकाली गयी। समिति अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली के नेतृत्व में बच्चों ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शन किये तथा आजीवन नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। प्रिंसिपल मंजू शर्मा, स्मिता सुराणा व कपिल जी ने स्कूल में अणुव्रत के कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही।

अमृत महोत्सव की तैयारियों पर चिंतन

अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष की तैयारी के सिलसिले में अणुव्रत समिति मुंबई के कार्यकारिणी सदस्यों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इसमें अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन, अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका सहित मुम्बई अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों ने विभिन्न विषयों पर चिंतन किया।

अणुविभा राजसमंद का स्थापना दिवस मनाया

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती का 41वां स्थापना दिवस 30 दिसम्बर, 2022 को अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता एवं अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा कि जनता के बीच जाकर अणुव्रत के प्रकल्प के बारे में बताया जाये। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने से ही अणुव्रत आंदोलन की सफलता होगी। उन्होंने अणुविभा के संस्थापक मोहनभाई को भी याद किया। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि शांति व अहिंसा की दिशा में विश्व स्तर का कार्य करने वाली संस्था राजसमंद में है, यह हमारे लिए गौरव की बात है। मोहन भाई का पौधा आज वटवृक्ष बना है। जो इस मंच से समाज सेवा करना चाहते हैं, वे इससे जुड़ें और श्रेष्ठ जीवन के निर्माण की धारा को बलवती बनाएं।

अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि अणुविभा और विशेषतः इस परिसर से तीन दशक का जुड़ाव मेरे जीवन का एक विशिष्ट अध्याय बन गया है यह केन्द्र मेरे लिए आचार्य तुलसी के आशीर्वाद का हेतु है। शिक्षाविद् सुरेश कावड़िया ने कहा कि आचार्य तुलसी का आशीर्वाद व मोहनभाई का स्वप्न व परिश्रम अणुविभा के रूप में हम फलित होते देख रहे हैं। सर्वोदय कार्यकर्ता जीतमल कच्छारा ने कहा कि अणुव्रत में सर्वधर्म समभाव निहित है।

पूर्व न्यायाधीश डॉ. बसन्तीलाल बाबेल ने कहा कि नैतिकता से ही आदर्श जीवन संभव है। अहिंसा व शान्ति के व्यापक कार्य हेतु अणुविभा एक सार्थक प्लेटफॉर्म है। संस्था के ट्रस्टी अशोक डूंगरवाल ने नशामुक्ति, शराबबंदी पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता बतायी। कार्यक्रम में गणपत धर्मावत, अफजल खान, नारायणसिंह राव, डॉ. विमल कावड़िया, भरत दक, भगवती लाल जैन, महेश पगारिया, सागर चण्डालिया, बंकेश सनाढ्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। संयोजन 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह संपादक प्रकाश तातेड़ ने किया। संस्था के सह मंत्री जगजीवन चौरड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अहमदाबाद में अणुविभा अध्यक्ष ने ली बैठक

अहमदाबाद। अणुव्रत समिति की बैठक 21 मार्च को अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित की गयी जिसमें गुजरात में अणुव्रत यात्रा में सक्रिय सहभागिता पर चिंतन हुआ। इसमें अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, सहमंत्री मनोज सिंघवी, जीवन विज्ञान संयोजक रमेश पटावरी, गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, अणुविभा के पूर्व महामंत्री राकेश नौलखा एवं आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष गौतम बाफना की विशेष उपस्थिति रही। बैठक में अणुव्रत समिति, अहमदाबाद के अध्यक्ष सुरेश बगरेचा, मंत्री मनोज सिंघी, कोषाध्यक्ष विमल घीया, उपाध्यक्ष प्रकाश धींग, सहमंत्री प्रकाश बैद, सहमंत्री डिम्पल श्रीमाल, प्रचार-प्रसार मंत्री विरेन्द्र सालेचा, संगठन मंत्री जवेरीलाल भंसाली, परामर्शक, विशेष आमंत्रित सदस्यों तथा अन्य सक्रिय कार्यकर्ताओं ने भी सहभागिता निभायी।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित
श्री वेदप्रताप वैदिक नहीं रहे...

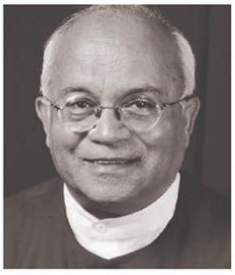

अणुव्रत आंदोलन से जुड़े हुए प्रसिद्ध साहित्यकार एवं श्रेष्ठ लेखक **श्री वेदप्रताप वैदिक** का स्वर्गवास हो गया है। श्री वेदप्रताप वैदिक जाने-माने चिंतक, पत्रकार एवं अंतरराष्ट्रीय मामलों के प्रकांड विद्वान थे। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में आपकी विशिष्ट ख्याति थी। ऐसे महान व्यक्तित्व का चले जाना देश व समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी परिवार आपके देहावसान पर हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

उत्कृष्ट, नैतिक व आदर्श लेखन के लिए वर्ष 2021 के अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित श्री वेदप्रताप वैदिक का अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति सदैव आदर भाव रहा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी एवं अणुव्रत कार्यकर्ताओं के प्रति उनका स्नेह एवं सहयोग हमेशा याद रहेगा। 2021 में वे अणुविभा मुख्यालय राजसमंद आये थे और यहां की बालोदय दीर्घाओं को देखकर अभिभूत हो गये थे। उन्होंने कहा था- "मैं अनेक देशों में घूमा हूँ लेकिन बाल विकास का ऐसा उत्कृष्ट कार्यक्रम पहली बार देखा है।" आदरणीय वैदिक जी की स्मृतियां हमारे दिलो दिमाग में हमेशा बनी रहेंगी। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना।

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

अप्रैल माह में अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों के लिए करणीय विशेष कार्य -

संगठन

अपने सदस्यों की सूची सम्बंधित संगठन मंत्री एवं राज्य प्रभारी को भेजें। जून माह में होने वाली सभी अणुव्रत समितियों की चुनाव/मनाव प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है।

संयम दिवस

अपने क्षेत्र में प्रवासित चारित्रात्माओं को अणुव्रत अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दें और मंगलवार - **'संयम दिवस'** पर विशेष कार्यक्रम का अनुरोध करें।

सम्पर्क

अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यक्तिश: मिलें, अणुव्रत आंदोलन की जानकारी दें और लिखित अथवा वीडियो में उनके विचार लें।

कार्ययोजना

अणुव्रत अमृत महोत्सव - दिशादर्शिका में उल्लेखित कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की दिशा में ठोस प्रयास करें।

कार्यक्रम

अप्रैल में विशेषत: संयम दिवस का आयोजन व संकल्प पत्र भराना, अणुव्रत समूह बनाना, अणुव्रत संकल्प शृंखला के फॉर्म भराना, नशामुक्ति जागरूकता एवं अर्थ सम्बल अभियान के कार्य सक्रियता से करें।

अणुव्रत अर्थ संबल अभियान

- संयोजक श्री निर्मल गोखरू (9414115066)
- दक्षिणांचल प्रभारी श्री सुरेश दक (9448383315)
- नेपाल प्रभारी श्री ज्योति कुमार बेंगानी (9851020595)
- मध्यांचल प्रभारी श्री संजय जैन (9215517430)
- पूर्वांचल प्रभारी श्री प्रदीप सिंघी (9831085087)
- उत्तरांचल प्रभारी श्री मुकेश भादानी (7639999764)

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
April, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/03/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

अणुविभा

75
1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

इस महाअभियान में जन-जन की सहभागिता का
विनम्र अनुरोध

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**